आशीर्वचन

संस्कृत भाषा के अध्ययन के बिना भारत की संस्कृति, परम्परा, इतिहास एवं प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को समझना सम्भव नहीं है। अत: भारतीय स्वाभिमान की भावना वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्राचीन अमूल्य ज्ञान-निधान को पाने के लिए संस्कृत भाषा का अभ्यास करना अनिवार्य है। इस भाषा के प्रौढ एवं व्यापक ज्ञान के लिए व्याकरण का अध्ययन भी आवश्यक है।

पतञ्जलि योगपीठ हरिद्वार में प्राचीन आर्ष परम्परा के अनुसार प्रामाणिक आचार्यों द्वारा पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन-अध्यापन विगत लम्बे समय से करवाया जा रहा है। यहाँ व्याकरणज्ञान के लिए पाणिनीय शिक्षा के साथ अष्टाध्यायी, प्रथमावृत्ति, काशिकावृत्ति, धातुवृत्ति एवं महाभाष्य के अध्ययन की उत्तम व्यवस्था की गई है। आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन से अल्प समय में सरलता पूर्वक उत्तम बोध होता है, जैसा कि महर्षि दयानन्द कहते हैं-

'महर्षि लोगों का आशय, जहाँ तक हो सके वहाँ तक सुगम और जिस के ग्रहण में समय थोड़ा लगे इस प्रकार का होता है और क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहाँ तक बने वहाँ तक कठिन रचना करनी। जिसको बड़े परिश्रम से पढ़ के अल्प लाभ उठा सकें, जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना'।

व्याकरणाध्ययन की इस ऋषिनिर्दिष्ट प्राचीन सरणि के अनुसार पहले विद्यार्थियों को शिक्षा, अष्टाध्यायी एवं धातुपाठ आदि ग्रन्थों को कण्ठस्थ करवाया जाता है। छात्रों के उपयोगार्थ ग्रन्थों के उत्तम संस्करण भी पतञ्जलि योगपीठ द्वारा प्रकाशित किये जा रहे हैं। अष्टाध्यायी एवं धातुपाठ का प्रकाशन इसी शृंखला की कड़ी के रूप में किया गया है। मेरी शुभकामना है कि छात्रगण श्रद्धा से इन ग्रन्थों का अध्ययन कर प्रौढ वैदुष्य प्राप्त करें एवं प्राचीन भारतीय विद्याओं का संरक्षण व प्रचार-प्रसार सदा करते रहें।

शुभेच्छु

आचार्य बालकृष्ण

दिव्य प्रकाशन

पतंजलि योगपीठ

महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग,
निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249405, उत्तराखण्ड, भारत
फोन : 01334.244107, 246737 फैक्स : 01334-24805,240664
ई-मेल : divyayoga@rediffmail.com, वेबसाइट : www.divyayoga.com

पाणिनीयः अष्टाध्यायीसूत्रापाठः

ओ३म्

पाणिनीयः
अष्टाध्यायीसूत्रापाठः

सम्पादकः
स्वामिरामदेवः

ओ३म्

पाणिनीयः
अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

सम्पादक–

प्रकाशक :
दिव्य प्रकाशन
पतंजलि योगपीठ
हरिद्वार-249405 (उत्तराखण्ड)

संस्करण : प्रथम संस्करण
ज्येष्ठ मास, वि०सं०- २०७४.

प्रतियाँ : ५,०००

© सर्वाधिकार सुरक्षित : प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : दिव्य प्रकाशन
पतंजलि योगपीठ
महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग-58,
निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249402 (उत्तराखण्ड)
फोन : 01334-240008, 244107, 246737
फैक्स : 01334-244805, 240664
ईमेल : divyaprakashan@divyayoga.com
वैबसाइट : www.divyayoga.com

प्राप्ति स्थान :
१. पतञ्जलि योगपीठ
महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग
निकट बहादराबाद, हरिद्वार, २४९४०५ (उत्तराखण्ड)

मूल्य :

मुद्रक : ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स
अशोका टॉकीज के सामने, वेद मन्दिर,
ज्वालापुर, हरिद्वार- २४९४०७ (उत्तराखण्ड)
दूरभाष : 9760284597, 9837120375
ईमेल : rishioffset@gmail.com

।।ओ३म्।।

।। इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।।

भूमिका

भूमण्डल पर भाषा के रूप में सर्वप्रथम वेदवाणी का अवतरण हुआ, जो ईश्वरीय प्रसाद के रूप में आदि ऋषियों के हृदय में प्रकाशित हुई थी। जैसा कि महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास कहते हैं-

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।

आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः।। (महा., शान्ति.- २३२.३४)

इसी के माध्यम से संसार में सर्वविध ज्ञान-विज्ञान की प्रवृत्ति हुई। प्राचीन ऋषियों ने इसे 'वाक्' नाम से कहा है। इसे ही 'संस्कृत भाषा' के नाम से भी जाना जाता रहा है। पाश्चात्य विद्वान् भी विश्व की सर्वप्रथम साहित्यिक कृति के रूप में वेद को ही मानते हैं। यह वैदिक भाषा अथवा संस्कृत भाषा सुदीर्घ काल से शिष्टजनों की सुव्यवस्थित भाषा के रूप में प्रचलित रही है और परम्परा से आगे बढ़ती आई है। इसी शिष्ट-जुष्ट भाषा को परवर्ती काल में व्याकरणशास्त्र द्वारा अन्वाख्यात किया गया, अनुशासित किया गया। इस प्रकार व्याकरणशास्त्र (शब्दानुशासन) की परम्परा प्रवृत्त हुई। इसका उद्देश्य वैदिक एवं लौकिक संस्कृत को व्यवस्थित रूप से सिखाना और भाषा के शिष्ट स्वरूप को असाधु प्रयोगों से बचाना था।

प्राचीन काल में ऐन्द्र एवं माहेश्वर सम्प्रदाय में अनेक व्याकरणों की रचना की जाती रही है। इनमें काशकृत्स्न, शाकटायन, शाकल्य, गालव आदि व्याकरण मुख्य थे। परवर्ती काल में महामुनि पाणिनि ने पूर्ववर्त्ती विस्तृत व्याकरणों के आधार पर संक्षिप्त एवं सारपूर्ण व्याकरण की रचना की, जो पाणिनीय व्याकरण के रूप में विश्व में प्रसिद्ध हुआ। रचनासौष्ठव एवं संक्षेप के कारण इस व्याकरण का पठन-पाठन सर्वत्र प्रचलित हो गया और पूर्ववर्ती व्याकरण धीरे-धीरे लुप्त हो गए।

पाणिनीय व्याकरण में आठ अध्यायों वाला 'अष्टाध्यायी' ग्रन्थ मुख्य है, धातुपाठ, गणपाठ, लिङ्गानुशासन एवं उणादिगण- ये चार ग्रन्थ इसके खिल भाग (परिशिष्ट अंश) हैं। इन पाँचों ग्रन्थों को मिलाकर यह पञ्चाङ्ग व्याकरण कहलाता है। व्याकरणशास्त्र के अतिरिक्त पाणिनि ने 'शिक्षा' नामक वेदाङ्ग का भी प्रवचन किया है, जो सूत्रात्मक है। पाणिनीय शिक्षा आपिशली शिक्षा पर आधारित है।

वर्तमान युग में इसका सर्वप्रथम प्रकाशन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'वर्णोच्चारण-शिक्षा' नाम से आर्यभाषानुवाद के साथ किया था। इसका मूलपाठ हस्तलिखित रूप में उन्हें प्रयाग-निवासी एक ब्राह्मण से प्राप्त हुआ था। इसमें अन्तिम भाग खण्डित था। परवर्त्ती काल में उपलब्ध हस्तलेखों के आधार पर पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक ने 'शिक्षासूत्राणि' के अन्तर्गत 'पाणिनीय शिक्षा' के अखण्डित लघुपाठ व वृद्धपाठ का प्रकाशन किया है।

पाणिनीय व्याकरण का महत्त्व-

आचार्य पाणिनि केवल शब्दशास्त्र के ही महान् विद्वान् नहीं थे, अपितु सम्पूर्ण लौकिक एवं वैदिक वाङ्मय के पारदृश्वा भी थे। कहा भी गया है- **'शाकल्यः पाणिनिर्यास्क इत्यृगर्थपरास्त्रयः'** अर्थात् ऋगर्थ को जानने वालों में शाकल्य, पाणिनि और यास्क ही मुख्य हैं। आचार्य पाणिनि ने सकल लौकिक-वैदिक वाङ्मय का अनुशीलन किया था एवं वे लोकव्यवहार के प्रत्यक्ष द्रष्टा थे। व्याकरण के रचयिता के लिए ऐसा होना आवश्यक भी है, जैसा कि महाभारत में कहा गया है-

सर्वार्थानां व्याकरणाद् वैयाकरण उच्यते।
प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः।। (महा. उद्योग.- ४३.३६)

सभी अर्थों का व्याकरण (विश्लेषण) करने के कारण वैयाकरण कहलाता है। वह लोक का प्रत्यक्षदर्शी होने से सर्वदर्शी होता है। इस प्रकार महामुनि पाणिनि लोक एवं वेद के विषय में सर्वदर्शी आचार्य थे। उनकी बनायी अष्टाध्यायी में लोक-व्यवहार भूगोल, इतिहास, मुद्राशास्त्र आदि का व्यावहारिक ज्ञान अनुस्यूत है। इस प्रकार पाणिनि की अष्टाध्यायी तत्कालीन समाज का दर्पण है, इसकी

संरचना बहुत ही वैज्ञानिक एवं कौशलपूर्ण है। महाभाष्यकार पतञ्जलि आचार्य पाणिनि के रचना-कौशल का वर्णन करते हुए कहते हैं-

प्रमाणभूत आचार्यो दर्भपवित्रपाणि : शुचाववकाशे प्राङ्मुख उपविश्य महता प्रयत्नेन सूत्राणि प्रणयति स्म। तत्राशक्यं वर्णेनाप्यनर्थकेन भवितुम्, किं पुनरियता सूत्रेण। (महाभाष्यम्- १.१.१)

अर्थात् प्रमाणभूत आचार्य दर्भपवित्रपाणि होकर पवित्र स्थान पर पूर्वाभिमुख बैठे हुए महान् अवधान से सूत्रों को रचते थे, उन सूत्रों में एक वर्ण भी अनर्थक नहीं हो सकता है।

एक अन्य स्थान पर भाष्यकार इसी प्रकार का भाव प्रकट करते हैं- **'सामर्थ्ययोगान्नहि किञ्चिदस्मिन् पश्यामि शास्त्रे यदनर्थकं स्यात्'**। (महाभाष्यम्- ६.१.७७) अर्थात् सामर्थ्ययोग (पूर्वापर सम्बन्ध की सार्थकता) को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि पाणिनीय शास्त्र में कुछ भी अनर्थक नहीं है। पाणिनीय सूत्रों पर काशिकावृत्ति के रचयिता जयादित्य भी कहते हैं- **'महती सूक्ष्मेक्षिका वर्तते सूत्रकारस्य'** (काशिका- ४.२.७४) अर्थात् सूत्रकार आचार्य पाणिनि की दृष्टि बहुत ही सूक्ष्म है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है- 'पूर्ण मनोयोग से महर्षि पाणिनि ने शब्दभण्डार से शब्दराशि का चुनना प्रारम्भ किया। १००० श्लोक परिमाण वाली अष्टाध्यायी में सारी व्युत्पत्ति सम्पन्न हो गई। ....शब्द एवं अक्षर विषयक कोई भी ज्ञान इससे शेष नहीं बचा[१]।

अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने भी पाणिनि-व्याकरण के महत्त्व को मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है- मोनियर विलियम ने कहा है- 'संस्कृत व्याकरण (अष्टाध्यायी-ग्रन्थ) मानव मस्तिष्क की प्रतिभा का आश्चर्यतम भाग है, जो कि मानव-मस्तिष्क के सामने आया'। हण्टर ने कहा है- 'मानव-मस्तिष्क का अतीव महत्त्वपूर्ण आविष्कार यह अष्टाध्यायी है'। लेनिनग्राड के प्रो. टी वात्सकी कहते हैं- 'मानव-मस्तिष्क की यह अष्टाध्यायी सर्वश्रेष्ठ रचना है।'

बहुत लम्बे समय से पाणिनीय व्याकरण ही वेदाङ्ग के रूप में मान्य है और

१. ह्वेनसांग, हिन्दी- अनुवाद, प्रथम भाग के २२२ पृष्ठ से उद्धृत।

सर्वत्र पठन-पाठन में प्रचलित है। स्वयं पाणिनि ने अपने शिष्यों को यह व्याकरण पढ़ाया था। पाणिनि एवं उनके कौत्स आदि शिष्यों के अनन्तर सम्प्रदायक्रम से व्याख्यान सहित यह व्याकरण पुष्पित-पल्लवित रूप में अध्ययन-अध्यापन में प्रचलित होता आया है। महामुनि पाणिनि के काल से कतिपय शताब्दियों के अनन्तर मुनिवर कात्यायन ने अष्टाध्यायी-सूत्रों पर वार्त्तिकों की रचना की। ये वार्त्तिक व्याख्यापरक वचन हैं। '**वृत्तौ साधु वार्त्तिकम्**' अर्थात् सूत्र की वृत्ति (अर्थविवेचन) में जो उत्तम होता है, उसे वार्त्तिक कहते हैं। इनमें विशेष स्थलों पर सूत्रार्थ-प्रकाशन के साथ सर्वाङ्गीण समीक्षा भी की गई है। अत एव वार्त्तिक का स्वरूप प्रकट करने वाला प्राचीन वचन इस रूप में प्रसिद्ध है-

उक्तानुक्तदुरुक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्त्तते।
तं ग्रन्थं वार्त्तिकं प्राहुर्वार्त्तिकज्ञा मनीषिणः।।

अर्थात् जिसमें उक्त, अनुक्त एवं दुरुक्त विषयों पर समीक्षात्मक दृष्टि से सर्वाङ्गीण चिन्तन किया जाता है, उसे विद्वान् जन वार्त्तिक ग्रन्थ कहते हैं।

कात्यायन-प्रणीत वार्त्तिकों द्वारा पाणिनीय व्याकरण का स्वरूप विशेष रूप से निखर गया और यह अध्येताओं के लिए सुग्राह्य एवं रोचक बन गया। कतिपय शताब्दियों के उपरान्त वार्त्तिकों को आधार बनाकर महामुनि पतञ्जलि ने महाभाष्य की रचना की। मुख्य रूप से आक्षेप का उपस्थापन कर उसका समाधान प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ को भाष्य कहते हैं। जैसाकि कहा गया है- '**आक्षेपसमाधानपरो ग्रन्थो भाष्यम्**'। अन्यत्र भी भाष्य का स्वरूप बताते हुए कहा गया है-

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः।।

अर्थात् जिसमें सूत्रानुसारी पदों को आधार बनाकर शंका-समाधान पूर्वक सूत्रार्थ का वर्णन किया जाता है तथा साथ में अपने समीक्षात्मक अभिप्राय का भी प्रकाशन किया जाता है, वह ग्रन्थ भाष्य कहलाता है।

पतञ्जलि-प्रणीत महाभाष्य में विवेच्य स्थलों पर सूत्रों एवं वार्त्तिकों की गहन व्याख्या एवं सर्वतोमुखी समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इसका विषय जितना गम्भीर

एवं प्रौढतापूर्ण है, भाषा उतनी ही सरल एवं प्राञ्जल है। अत: सम्प्रदायबाह्य अकृतबुद्धि जन उसका मर्म नहीं समझ पाते हैं, कहा भी है-

अलब्धगाधे गाम्भीर्यादुत्तान इव सौष्ठवात्।

तस्मिन्नकृतबुद्धीनां नैवावास्थित निश्चय:।। (वाक्यपदीयम्- २.४८०)

अर्थात् गम्भीरता की दृष्टि से तो महाभाष्य अगाध सागर के समान है, किन्तु सौष्ठव (वाक्यविन्यास-विषयक सरलता एवं सुन्दरता) से उत्तान है, अल्प जल वाले तालाब जैसा सुखावगाह प्रतीत होता है। अत: अकृतबुद्धि जन उसके अर्थ का निश्चय नहीं कर पाते हैं।

'महाभाष्य' मुनिवर पतञ्जलि की लोकोत्तर प्रतिभा से प्रसूत भारतीय वाङ्मय का अद्वितीय एवं विलक्षण ग्रन्थ है। इसके द्वारा पाणिनीय व्याकरण और भी अधिक निखर गया एवं इसके सामने पूर्ववर्ती सभी व्याकरण निष्प्रभ-से हो गए तथा धीरे-धीरे चलन से हटते गए। अष्टाध्यायी एवं महाभाष्य- ये संस्कृत-व्याकरण की अद्भुत रचनाएं हैं, इनका अध्ययन करने वाला लौकिक एवं वैदिक संस्कृत वाङ्मय का पारदर्शी होकर महान् विद्वान् हो जाता है।

अष्टाध्यायीक्रम से व्याकरणाध्ययन का वैशिष्ट्य-

आजकल व्याकरण का अधिकतर पठन-पाठन लघुसिद्धान्तकौमुदी एवं सिद्धान्तकौमुदी के आधार पर प्रक्रियाक्रम से चलता है। यह क्रम लगभग चार सौ वर्ष से चल रहा है। इससे पहले व्याकरणाध्ययन अष्टाध्यायी-सूत्रक्रम से होता था। उसमें सर्वप्रथम बालक अष्टाध्यायी-सूत्रों को कण्ठस्थ करता था। तदनन्तर सूत्रक्रम से ही अष्टाध्यायी की वृत्ति पढ़ता था और साथ ही उसे शब्दसिद्धि की प्रक्रिया भी सिखाई जाती थी। वृत्तिग्रन्थ के रूप में काशिका का पठन-पाठन प्रचलित था। इसके अनन्तर छात्र महाभाष्य का अध्ययन करता था। इसी के साथ व्याकरण की परिपूर्णता मानी जाती थी।

सूत्रक्रमानुसारी अध्ययन से छात्र को सूत्रों के पूर्वापर क्रम का सम्यक् बोध रहता था और उत्तरोत्तर अनुवृत्ति के साथ सूत्रार्थबोध भी सुगमतया हो जाता था। इस रीति से छात्र को वृत्ति रटनी नहीं पड़ती थी। जबकि आधुनिक काल में प्रक्रियाक्रम

से पढ़ने वाले छात्रों को अष्टाध्यायी कण्ठस्थ न होने से सूत्रों के पूर्वापर क्रम का बोध नहीं होता और वृत्ति भी रटनी पड़ती है। आधुनिक रीति से पढ़ने वाले काशिका एवं महाभाष्य आदि प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययन से वञ्चित रहते हैं।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने केवल प्रक्रियाक्रम से व्याकरणाध्ययन के आधुनिक प्रचलन में दोष देखकर पुनः प्राचीन शैली से अष्टाध्यायीसूत्रक्रमानुसार व्याकरण के अध्ययन-अध्यापन का प्रचलन किया। इसके परिणामस्वरूप आर्यसमाज में बहुत-से अष्टाध्यायी एवं महाभाष्य के उच्चकोटि के विद्वान् तैयार हुए। यह क्रम आज भी गुरुकुलों में प्रचलित है। इन्हीं के द्वारा आज अष्टाध्यायी-महाभाष्य का पठन-पाठन सुरक्षित हो पाया है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए छात्रों को इसी क्रम से व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए। इससे अल्प समय में सुगमतापूर्वक अधिक बोध होता है। कुछ लोग आक्षेप करते हैं कि अष्टाध्यायीक्रम से व्याकरण पढ़ने वालों का प्रक्रियाज्ञान दुर्बल रहता है। इसे सुदृढ करने के लिए प्रक्रियानुसारी अध्यापन भी आवश्यक है। इस प्रकार का आक्षेप करने वाले महानुभावों से हमारा निवेदन है कि महर्षि दयानन्द को प्रक्रियानुसारी व्याकरणाध्यापन से विरोध नहीं है। यदि विरोध होता तो वे प्रक्रियानुसारी सन्धिविषय आदि ग्रन्थ क्यों बनाते? उनका विरोध ऐसे लोगों से है, जो अष्टाध्यायी-महाभाष्य को सर्वथा छोड़कर केवल प्रक्रियाग्रन्थों पर निर्भर हो गए हैं। महर्षि दयानन्द का यह कथन सर्वथा उचित है कि पहले अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करवाकर सूत्रवृत्तिबोध करना चाहिए। इसके अनन्तर प्रक्रियाक्रम को पढ़ने में कोई दोष नहीं है। इस प्रकार सूत्रार्थज्ञान के साथ प्रक्रियाज्ञान भी उत्तम रीति से सम्पन्न होता है। इसके लिए उन्होंने **वेदाङ्गप्रकाश** के रूप में प्रक्रियानुसारी व्याकरण ग्रन्थ भी बनाए हैं।

वस्तुतः महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित व्याकरणाध्ययन-विधि ही सर्वथा निर्दोष एवं परिपूर्ण है। इससे क्रमानुसारितया सूत्रवृत्तिज्ञान और प्रक्रियानुसारितया पदसिद्धिज्ञान- ये दोनों पक्ष सुदृढ हो जाते हैं। जबकि कौमुदी आदि के अनुसार व्याकरणाध्ययन एकाङ्गी एवं अपूर्ण ही रहता है। व्याकरणाध्ययन में- '**यथोद्देशं**

सञ्ज्ञापरिभाषम्' वचन के अनुसार सूत्रक्रमानुसारी शैली ग्राह्य है और '**कार्यकालं सञ्ज्ञापरिभाषम्'** के अनुसार प्रक्रिया शैली ग्राह्य है। महर्षि दयानन्द ने इन दोनों का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है।

अत: केवल प्रक्रियानुसारी अध्ययन-शैली के पक्षधरों से हमारा आग्रह है कि पहले व्याकरण-छात्रों को अष्टाध्यायी-सूत्रपाठ एवं धातुपाठ आदि खिल भाग का स्मरण कराएं और इसी क्रम से सूत्रवृत्ति पढ़ाकर व्याकरण की प्रथम आवृत्ति पूर्ण करें। तदनन्तर भले ही दूसरी आवृत्ति सिद्धान्तकौमुदी के रूप में पढ़ाएं। इससे छात्र दोनों पक्षों में निष्णात बन सकेंगे। प्रक्रियाक्रम के पक्षधरों से हम यह आग्रह भी करना चाहेंगे कि अन्त में महाभाष्य का अध्ययन अवश्य कराएं, इसी से व्याकरण की परिपूर्णता होती है। महाभाष्य को छोड़कर इसके स्थान पर जिन नव्य ग्रन्थों को पढ़ाया जाता है, उनके रचयिता तो महाभाष्य पढ़कर ही योग्य हुए थे और महाभाष्य के परम भक्त थे। उनका ऐसा भाव कदापि नहीं था कि भावी सन्तति महाभाष्य को छोड़कर हमारे ग्रन्थों तक ही सीमित रहे। समालोचनात्मक दृष्टि से प्रौढ़ छात्रों को नव्य ग्रन्थ पढ़ाने में कोई दोष नहीं है, परन्तु उन्हें महाभाष्य का विकल्प मान लेना कथमपि उचित नहीं कहा जा सकता है।

आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द की प्रेरणा के अनन्तर बहुत-से काशी के विद्वानों ने भी व्याकरणाध्ययन की सूत्रक्रमानुसारी प्राचीन पद्धति को ही श्रेयस्कर माना है, पण्डित गोपालशास्त्री दर्शनकेसरी कहते हैं-

पाणिने: पद्धतिर्माङ्गल्ली सम्मता, वृद्धिरादैजये वृद्धिरादौ मता।
तद्दिशा पाठको वृद्धिमासेवते शीघ्रमेवार्यबुद्धि: सुधीर्जायते।।

मुनिवर पाणिनि की पद्धति बहुत ही मङ्गलकारिणी है, शास्त्र के आरम्भ में ही 'वृद्धिरादैच्' सूत्र में 'वृद्धि' शब्द रखकर आचार्य ने सभी अध्येताओं के लिए मङ्गलकामना की है। क्रमानुसार इस ग्रन्थ का अध्ययन करने वाले शीघ्र ही वृद्धि को प्राप्त करते हैं तथा ज्ञानसम्पन्न सुधी बन जाते हैं।

सुक्रमात्सूत्रपाठात्स्वयं पाठक: सूत्रवृत्तिं विनिर्मात्यहो दृश्यताम्।
आ: सुमेधाकरी चाशुबोधाकरी पाणिने: पद्धतिर्हापिता हा कथम्।।

उत्तम एवं सुव्यवस्थित सूत्रपाठ से पाठक स्वयं ही सूत्रवृत्ति बना लेता है, देखो यह कैसा आश्चर्य है। इस प्रकार छात्र को शीघ्र ही मेधासम्पन्न एवं बोधसम्पन्न बनाने वाली पाणिनि की सूत्रक्रमानुसारी व्याकरणाध्ययन-पद्धति क्यों छोड़ दी?

सूत्रवृत्तिं स्वयं कुर्युरध्यायिनः, पाठनस्य प्रकारोऽयमासीन्मुनेः।
तद्विहन्त्री पठत्प्राणहर्त्री हृदा, निष्क्रमा पाठरीतिर्द्रुतं हीयताम्।।

(पाणिनीय-प्रबोध, प्राक्कथनम्, पृ. २५)

मुनिवर पाणिनि की विशिष्ट सूत्रक्रमयुक्त संरचना-शैली ऐसी है कि अध्येता स्वयं ही सूत्रवृत्ति बना लेता है। इसे नष्ट करने वाली, पढ़ने वालों का प्राणोत्पीडन करने वाली क्रमविहीन अध्ययन-रीति शीघ्र ही छोड़ देनी चाहिए।

शास्त्रज्ञान के लिए सर्वप्रथम व्याकरणाध्ययन आवश्यक-

सभी शास्त्रों को पढ़ने से पहले व्याकरण का अध्ययन और इसके साथ ही साधुशब्द-प्रयोग में निष्णात होना आवश्यक है। इसके बिना किसी भी शास्त्र में गति सम्भव नहीं है। साहित्यिक-शिरोमणि आनन्दवर्धनाचार्य कहते हैं-

'प्रथमे हि विद्वांसो वैयाकरणाः, व्याकरणमूलत्वात् सर्वविद्यानाम्'।

(ध्वन्यालोकः- १.११३, वृत्तिभागः)

अर्थात् व्याकरण को जानने वाले ही प्रथम कोटि (उच्चकोटि) के विद्वान् होते हैं, क्योंकि व्याकरण ही सब विद्याओं का मूल है। व्याकरण की सर्वविद्यामूलकता को वैयाकरणशिरोमणि भर्तृहरि ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में प्रतिपादित किया है-

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते।
अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते।। (वाक्यपदीयम्- १.१२३)

अर्थात् लोक में ऐसा कोई बोध नहीं है, जो शब्दानुगम (शब्द की सहायता) के बिना होता हो। अतः यह सत्य ही है कि प्रत्येक बोध शब्द के साथ पिरोया हुआ-सा प्रकाशित होता है। अतः किसी भी शास्त्र का अध्ययन करने से पहले व्याकरणाध्ययन परमावश्यक है। भास्कराचार्य इस तथ्य पर विशेष बल देते हुए कहते हैं-

यो वेद वेदवदनं वदनं स सम्यक्
ब्राह्म्याः स वेदमपि वेद किमन्यशास्त्रम्।
तस्मात् प्रथममेतदधीत्य शास्त्रं
शास्त्रान्तरस्य भवति श्रवणेऽधिकारी।।

(सिद्धान्तशिरोमणिः, गोलाध्याये गोलप्रशंसा- ८)

अर्थात् जो वेद के मुख व्याकरण को अच्छी प्रकार से जानता है, वह ब्राह्मी (सरस्वती) के सदन (भण्डार) वेद को भी जान लेता है, अन्य शास्त्रों की तो बात ही क्या है? अतः सर्वप्रथम इस शास्त्र को पढ़कर ही व्यक्ति अन्य शास्त्र के अध्ययन का अधिकारी बनता है। व्याकरणाध्ययन के बिना तो अन्य शास्त्रों के अध्ययन का प्रयास निष्फल एवं कष्टदायक ही रहता है-

अव्याकरणमधीतं भिन्नद्रोण्या तरङ्गिणीतरणम्।
भेषजमपथ्यसहितं त्रयमिदमकृतं वरं न कृतम्।। (अभियुक्तोक्तिः)

अर्थात् बिना व्याकरण के शास्त्रों का अध्ययन, टूटी नौका से नदीतरण का प्रयास एवं बिना पथ्य के औषध-सेवन- इन तीन कार्यों को करने से न करना ही अच्छा है। अर्थात् इनके करने से कोई फल तो होता नहीं, प्रत्युत अनिष्ट व व्यर्थ का आयास ही होता है। भाव यह है कि व्याकरणज्ञान के बिना शास्त्राध्ययन करने वाला अर्थ का अनर्थ करेगा, नाना सन्देहों से घिरा हुआ व्याकुलता को ही प्राप्त करेगा। जबकि व्याकरणज्ञान के साथ शास्त्राध्ययन करने वाला व्यक्ति निर्भ्रान्त यथार्थ ज्ञान प्राप्त करता है और उससे परम पद मोक्ष तक पहुँच जाता है। कहा भी है-

व्याकरणात् पदज्ञानं पदज्ञानादर्थनिर्णयो भवति।
अर्थात्तत्त्वज्ञानं तत्त्वज्ञानात् परं श्रेयः।।

(श्रीसिद्धहेमशब्दानुशासनबृहद्वृत्ति-लघुन्यासे- १.१.३)

अर्थात् व्याकरण से सम्यक् शब्दबोध होता है, उससे अर्थ का ठीक-ठीक निर्णय हो जाता है और तदनुसार आचरण करने से तत्त्वज्ञान की प्राप्ति होती है। तत्त्वज्ञान से व्यक्ति परम कल्याण को प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार व्याकरण

मनुष्य को मोक्ष तक पहुँचा देता है। आचार्य भर्तृहरि ने इसी तथ्य को निम्न रूप में कहा है-

इदमाद्यं पदस्थानं सिद्धिसोपानपर्वणाम्।

इयं सा मोक्षमाणानामजिह्मा राजपद्धतिः।। (वाक्यपदीयम्- १.१६)

अर्थात् जीवन में सिद्धिसोपान (सफलता की सीढ़ी) का पहला पदस्थान (पैड़ी) व्याकरण है। मोक्ष चाहने वालों के लिए यह शास्त्र सीधा राजमार्ग है।

व्याकरण परम पवित्र विद्या-

वाक्यपदीय की स्वोपज्ञ व्याख्या में एक प्राचीन आगम-वचन इस प्रकार मिलता है-

आपः पवित्रं परमं पृथिव्यामपां पवित्रं परमं च मन्त्राः।

तेषां च सामर्ग्यजुषां पवित्रं महर्षयो व्याकरणं निराहुः।।

(वाक्यपदीयम्- १.१४, वृत्तिभागः)

अर्थात् पृथ्वी पर जल परम पवित्र है, यह सबके मल का प्रक्षालन करता है। जल को भी पवित्र करने वाले मन्त्र होते हैं। मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर जल को पवित्र किया जाता है। ऋक्, यजुः और साम- ये त्रिविध मन्त्र जब अपवित्र हो जाते हैं, अशुद्ध रूप में प्रस्तुत कर दिए जाते हैं तो व्याकरण ही इनको पवित्र करता है, शुद्ध रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार महर्षियों ने व्याकरणविद्या को संसार में सबसे पवित्र बताया है। इसी तथ्य को भर्तृहरि निम्न रूप में प्रस्तुत करते हैं-

तद् द्वारमपवर्गस्य वाङ्मलानां चिकित्सितम्।

पवित्रं सर्वविद्यानामधिविद्यं प्रकाशते।। (वाक्यपदीयम्- १.१४)

अर्थात् व्याकरण अपवर्ग (मोक्ष) का द्वार है। यह वाणी के मलों का निवारण करता है। व्याकरण सब विद्याओं को पावन करने वाला है, जिस किसी शास्त्र में अनुचित लेखन व उच्चारण से अपवित्रता (अशुद्धि) हो जाती है और अर्थ का अनर्थ होने लगता है, वहाँ व्याकरण ही शुद्ध रूप बताकर अर्थ का सम्यक् प्रकाश करता है। इस प्रकार इसे सब विद्याओं का पावन (पवित्र करने वाला) कहा है। व्याकरण प्रत्येक विद्या में प्रकाशित होता है। इसका भाव यह है कि प्रत्येक शास्त्र

का उपदेश शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है और शब्दों को साधु रूप में प्रकट करने वाला व्याकरण उस शास्त्र में सदा प्रकाशित होता रहता है। उसे शुद्ध रूप में प्रस्तुत कर गौरवान्वित करता है।

व्याकरणज्ञान के अभाव में शास्त्र का अर्थ आविल (मलिन) हो जाता है और अर्थ का अनर्थ होने लगता है। तब वह शास्त्र अपनी शोभा एवं गरिमा खो देता है। इसी भाव को किसी कवि ने निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया है-

अङ्गीकृतं कोटिमितञ्च शास्त्रं नाङ्गीकृतं व्याकरणं च येन।
न शोभते तस्य मुखारविन्दे सिन्दूरबिन्दुर्विधवाललाटे।। (अभियुक्तोक्तिः)

अर्थात् भले ही किसी ने कोई कोटिमित (कोटि श्लोक परिमाण वाला) शास्त्र कण्ठस्थ कर लिया हो, पर यदि व्याकरण नहीं पढ़ा तो वह शास्त्र उसके मुखारविन्द में ऐसे शोभित नहीं होता जैसे विधवा के ललाट पर सिन्दूर-बिन्दु। भाव यह कि व्याकरणज्ञान के बिना पात्रता के अभाव में अन्य शास्त्रों का अध्ययन सम्यक् सम्पन्न न होने से अशोभनीय ही लगता है।

व्याकरणाध्ययन परम तप-

व्याकरण बड़ा विशाल एवं गहन शास्त्र है। निर्मल व एकाग्र चित्त वाला व्यक्ति ही इसका अध्ययन कर सकता है। अतः व्याकरणाध्ययन के लिए चित्त को राग, द्वेष रूपी मल से रहित रखना और चञ्चलता दूर कर एकाग्रता बनाए रखना अति आवश्यक है। ऐसा करना बहुत बड़ा तप है, इसीलिए भर्तृहरि कहते हैं कि-

आसन्नं ब्रह्मणस्तस्य तपसामुत्तमं तपः।
प्रथमं छन्दसामङ्गं प्राहुर्व्याकरणं बुधाः।। (वाक्यपदीयम्- १.११)

अर्थात् व्याकरण उस शब्दब्रह्म (वेद) के सर्वथा निकट है और व्याकरण का अध्ययन करना सर्वोत्तम तप है। वे इसे स्पष्ट करते हुए आगे कहते हैं-

यानि लोके तपस्त्वेनाभिख्यातानि....तेषामिदं दृष्टादृष्टविशेषफलहेतुत्वादभिख्याततमं तपः। (वाक्यपदीयम्- १.११, वृत्तिभागः)

अर्थात् लोक में जो तप विख्यात हैं, उनमें व्याकरण का अध्ययन विशिष्ट तप है, क्योंकि इससे दृष्ट (इहलौकिक) और अदृष्ट (पारलौकिक) विशेष फल मिलता है। दृष्ट फल के रूप में साधुशब्द-प्रयोग की योग्यता और सभी शास्त्रों के बोधन का सामर्थ्य प्राप्त होता है। इसी के प्रभाव से उपार्जित पुण्य द्वारा उत्तम पारलौकिक फल भी मिलता है।

इस प्रकार व्याकरणाध्ययन को उत्तम तप मानते हुए छात्र को निष्ठापूर्वक अध्ययनरत रहना चाहिए। उसका आचरण संयमित एवं सादगीपूर्ण होना चाहिए। रात्रि में शीघ्र सो कर प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में जागरण करना चाहिए, नित्य स्नान, सन्ध्या, प्राणायाम, अग्निहोत्र आदि का श्रद्धापूर्वक अनुष्ठान करना चाहिए।

विषयासक्ति, राग-द्वेष, अहंकार, सम्मान-लिप्सा, गोष्ठी (गपशप), परनिन्दा, बहुभाषण आदि से दूर रहना चाहिए। इन्द्रियों को बाह्य आकर्षण से हटाकर संयमित रखना चाहिए। भोजन में मात्रा का विशेष ध्यान रखना चाहिए। भोजन दो समय ही मित मात्रा में करना चाहिए। कभी-कभी उपवास व केवल फलाहार ही करना चाहिए। आलस्य-प्रमाद को छोड़कर सदा जागरूक रहते हुए प्रत्येक क्षण का विद्यार्जन में सदुपयोग करना चाहिए। कुसीद (निठल्ला), हीनवीर्य (वीरत्व/उद्योग से रहित), जिह्वालोलुप एवं अति भोजन करने वाला छात्र कभी व्याकरणाध्ययन में सफल नहीं हो सकता है। पवित्र ब्रह्मचर्य व्रत का श्रद्धा से पालन करने वाला तपोनिष्ठ, जितेन्द्रिय छात्र ही व्याकरणाध्ययन में सफल हो सकता है।

श्रद्धा परमावश्यक-

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि- व्याकरण बहुत विशाल एवं गहन शास्त्र है। इसके अध्ययनार्थ दृढ निष्ठा, अध्यवसाय एवं धैर्य चाहिए। अन्यथा अध्ययन के प्रारम्भिक दिनों में भी उत्तम बौद्धिक सामर्थ्य वाले छात्र भी मैदान छोड़कर भाग खड़े होते हैं। बहुत लम्बे समय तक कठोर परिश्रम द्वारा व्याकरण पढ़ने पर क्या मिलेगा, ऐसा फलासक्ति-प्रेरित चिन्तन भी छात्र को व्याकरणाध्ययन से विमुख कर देता है। अतः इसमें सफल होने के लिए इस शास्त्र के प्रति अटूट श्रद्धा भाव पहली आवश्यकता है, क्योंकि- **'श्रद्धावांल्लभते ज्ञानम्'** यह ज्ञानप्राप्ति का निश्चित

सूत्र है। जब शास्त्र के प्रति प्रगाढ श्रद्धा होगी, तभी छात्र में वीर्य (वीरत्व/उत्साहित्व) प्रबल रूप से प्रकट होता है। इससे वह कभी निराश व खिन्न नहीं होता है। श्रद्धाजन्य वीरत्व के बल पर वह बड़ी से बड़ी बाधाओं को हँसते हुए पार कर जाता है।

इस प्रकार प्रबल श्रद्धा से प्रचण्ड पुरुषार्थ प्रकट होता है, यह निश्चित नियम है। अत एव पातञ्जल योगसूत्र में श्रद्धा, वीर्य (वीरता) एवं स्मृति (प्रतिक्षण जागरूकता) को योगी की सफलता का कारण बताया गया है।

व्याकरण शास्त्र के प्रति प्रबल श्रद्धा होने से उत्साह निरन्तर बढ़ता ही रहता है और कभी निराशा नहीं आती। श्रद्धा एवं उत्साह के बल पर सामान्य बौद्धिक क्षमता वाला छात्र भी व्याकरण शास्त्र में पारङ्गत हो सकता है। महाराज भोजदेव ने इस रहस्य को निम्न शब्दों में प्रकट किया है-

श्रद्धोत्साहौ यदि स्यातां मेधया किं प्रयोजनम्।
तावुभौ यदि न स्यातां मेधया किं प्रयोजनम्।।

(सरस्वतीकण्ठाभरणम्- २.५५)

अर्थात् यदि छात्र में श्रद्धा और उत्साह हों तो मेधा की बहुत आवश्यकता नहीं होती है। सामान्य बुद्धि वाला छात्र भी श्रद्धा एवं उत्साह के बल पर शास्त्र में पारङ्गत हो जाता है। यदि ये दोनों न हो तो अकेली मेधा निष्फल ही रहती है, छात्र को शास्त्र-निष्णात नहीं बना सकती है।

श्रद्धा को दृढ करने के लिए व्याकरण की महिमा के प्रतिपादक आप्त- वचनों का पारायण करते रहना चाहिए। 'व्याकरण-प्रशस्ति' पुस्तिका में इन वचनों का संग्रह किया गया है। इस भूमिका के अनन्तर विद्यार्थी-शिक्षा विषयक जो प्रेरक वचन प्राचीन शिक्षाग्रन्थों से संकलित किए गए हैं, उनका भी पारायण करते रहना चाहिए, जिससे अपने कर्त्तव्य की स्मृति बनी रहे।

व्याकरणाध्येताओं के लिए महर्षिदयानन्दकृत मार्गदर्शन-

व्याकरणाध्ययन के इच्छुक जनों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत उत्तम एवं व्यावहारिक विधि बतलाई है। तदनुसार उन्हें पाणिनीय शिक्षासूत्र पढ़कर

संस्कृत-सम्भाषण का अभ्यास करना चाहिए। अपने व्यवहार में, दैनन्दिन जीवनचर्या में संस्कृत भाषा को अपनाना चाहिए। उन्होंने ऐसा इसलिए कहा है कि जिस भाषा का व्याकरण पढ़ा जाता है, उसका व्यवहार करने पर व्याकरण का बोध उत्तम रीति से सरलता पूर्वक सम्पन्न हो जाता है। इसी तथ्य को सामने रखते हुए महर्षि दयानन्द ने व्याकरणाध्ययन से पूर्व ही संस्कृत-सम्भाषण को अनिवार्यतया अपनाने का निर्देश दिया है। इसके लिए उन्होंने **'संस्कृतवाक्य-प्रबोध'** नामक सरल, सरस एवं व्यावहारिक प्रसंगों वाली पुस्तक की रचना की थी। इस पुस्तक की भूमिका में वे लिखते हैं-

'मैंने इस 'संस्कृतवाक्यप्रबोध' पुस्तक को बनाना अवश्य इसलिए समझा है कि शिक्षा को पढ़ के कुछ-कुछ संस्कृत भाषण का आना विद्यार्थियों को उत्साह का कारण है। जब वे व्याकरण के सन्धिविषयादि पुस्तकों को पढ़ लेंगे तब तो उनको स्वतः ही संस्कृत बोलने का बोध हो जायेगा, परन्तु यह जो संस्कृत बोलने का अभ्यास प्रथम किया जाता है, वह भी आगे-आगे संस्कृत पढ़ने में बहुत सहाय करेगा'।

महर्षि दयानन्द का यह स्पष्ट निर्देश है कि छात्र व्याकरण आदि शास्त्रों का अध्ययन भी संस्कृत माध्यम से ही करें। उनके एक पत्र का भाव यह है कि- **लोक-व्यवहार में भले ही आर्यभाषा (हिन्दी) को अपनाएं, परन्तु विद्यास्थान में पठन-पाठन की भाषा संस्कृत ही रखें'।** अपने जीवन में भी उन्होंने ऐसा ही किया था, यह सत्यार्थप्रकाश की भूमिका के आरम्भिक कथन से स्पष्ट होता है-

'जिस समय मैंने यह ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश बनाया था, उस समय और **उससे पूर्व संस्कृतभाषण करने, पठन-पाठन में संस्कृत ही बोलने** और जन्मभूमि की भाषा गुजराती होने के कारण से मुझको इस भाषा (हिन्दी) का विशेष परिज्ञान न था, इससे भाषा अशुद्ध बन गई थी। अब बोलने और लिखने का अभ्यास हो गया है। इसलिए इस ग्रन्थ को भाषाव्याकरणानुसार शुद्ध करके दूसरी बार छपवाया है'।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द के उक्त निर्देश व्याकरणाध्येताओं के लिए स्पष्ट रूप से मार्गदर्शक हैं कि उन्हें व्यवहार में संस्कृत-सम्भाषण करते हुए संस्कृत

माध्यम से ही व्याकरणशास्त्र का अध्ययन करना चाहिए।

प्रयोगाभ्यासार्थ काव्यों/उदाहरणकाव्यों का अध्ययन-

जिन सूत्रोदाहरणों को पढ़े उनका भी सम्यक् अर्थज्ञान कर व्यवहार में प्रयोग करना चाहिए। रामायण, महाभारत आदि काव्यों का अध्ययन करें और उनमें सूत्रोदाहरणों का अन्वेषण करते हुए उन्हें हृदयङ्गम करना चाहिए। ऐसा करने से व्याकरणाध्ययन सुदृढ़ एवं रुचिकर बन जाता है। व्याकरणाध्ययन की परिपूर्णता भी इसी से होती है, क्योंकि महाभाष्य के अनुसार सूत्रों के साथ उदाहरणों के अर्थज्ञान एवं प्रयोग को ही सम्पूर्ण व्याकरण माना गया है-

'लक्ष्यलक्षणे व्याकरणम्'

लक्ष्यं लक्षणञ्चैतत् समुदितं व्याकरणं भवति। (महाभाष्य, पस्पशाह्निकम्)

जो व्याकरणसूत्रों को जानता है, तदनुसार पदसिद्धि-प्रक्रिया भी जान लेता है, परन्तु यदि सिद्ध किए साधुशब्दों का व्यवहार नहीं करता तो उसका व्याकरणज्ञान अधूरा एवं निष्फल ही माना जाता है, क्योंकि उसे साधुशब्द-प्रयोगजन्य फल नहीं मिलता। जबकि महाभाष्यकार इसे व्याकरण का मुख्य फल बतलाते हैं-

यस्तु प्रयुंक्ते कुशलो विशेषे शब्दान् यथावद् व्यवहारकाले।
सोऽनन्तमाप्नोति जयं परत्र वाग्योगविद् दुष्यति चापशब्दैः।।

(महाभाष्य, पस्पशाह्निकम्)

अर्थात् जो वाग्योगवित् (कुशल वैयाकरण) विशिष्ट व्यवहारकाल में साधु शब्दों का प्रयोग करता है, वह अनन्त विजय (परम अभ्युदय) को प्राप्त करता है और जो अवाग्योगवित् है, अर्थात् साधु शब्दों के व्यवहार को नहीं जानता है, वह असाधुशब्द-प्रयोग से दोषयुक्त हो जाता है।

इसीलिए केवल सूत्र जानने वाले, प्रक्रिया मात्र जानने वाले वैयाकरण को निकृष्ट माना है-

लक्षणज्ञो निकृष्टस्तु लक्ष्यवेदी तु मध्यमः।
उभयं यो विजानाति स उत्तम इति स्मृतः।।

(कविरहस्यम्, रविधर्मीयटीकोपेतम्, श्लोक-१०)

अर्थात् केवल लक्षणज्ञ (सूत्रज्ञ) वैयाकरण निकृष्ट (निम्न कोटि का) होता है और केवल लक्ष्यवेदी (उदाहरणज्ञ) वैयाकरण मध्यम होता है। जो लक्ष्य एवं लक्षण- इन दोनों को जानता है, वही उत्तम वैयाकरण होता है।

इस प्रकार व्याकरणाध्ययन के साथ संस्कृतवाग्व्यवहार और उदाहरणों का प्रयोगाभ्यास अवश्य करना चाहिए। इसके लिए प्राचीन काल से उदारहणकाव्यों की रचना की जाती रही है। यद्यपि वे प्राचीन उदाहरणकाव्य दुर्भाग्य से काल-कवलित हो गए हैं, परन्तु उनके कतिपय उद्धरण महाभाष्य एवं भाषावृत्ति आदि ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं[१]।

---

१. स्तोष्याम्यहं पादिकमौदवाहिं ततः श्वभूते शातनीं पातनीं च।
नेतारावागच्छतां धारणिं रावणिं च ततः पश्चात् स्रंस्यते ध्वंस्यते च।।
(महाभाष्यम्- १.१.५६)

बहूनामप्यचित्तानामेको भवति चित्तवान्। पश्य वानरसैन्येऽस्मिन् यदर्कमुपतिष्ठते।
मैवं मंस्थाः सचित्तोऽयमेषोऽपि हि यथा वयम्। एतदप्यस्य कापेयं यदर्कमुपतिष्ठति।।
(महाभाष्यम्- १.३.२५)

शलाकापर्यभिद्यूतं चतुष्पर्यक्षपर्यपि। विपर्यस्ते विधौ पश्य नलादेरपि जायते।।
(अष्टाध्यायी- २.१.१०, शृङ्गारप्रकाशः, द्वितीयप्रकाशः)

दण्डादण्डि न कुर्वन्ति न कचाकचि कोकिलाः। तथापि जितमेवैभिर्वाग्भिरेव जगत्त्रयम्।।
(अष्टाध्यायी- २.२.२७, शृङ्गारप्रकाशः, द्वितीयप्रकाशः)

प्रासादीयति यः कुट्यां पर्यङ्कीयति मञ्चके। तस्य सन्तोषशीलस्य कुब्जिकाप्यप्सरायते।।
(भाषावृत्तिः- ३.१.१०)

ग्रामता जनता चैव बन्धुता च सहायता। महेन्द्रस्याप्यगम्यासौ भूमिभागभुजां कुतः।।
ग्रामजनबन्धुसहायेभ्यस्तल् (४.२.४३) इत्यस्योदाहरणान्यत्र प्रयुक्तानि। पद्यमिदं मनुस्मृति-मेधातिथिभाष्ये २.३८, इत्यत्र उद्धृतम्।

मध्यकाल में रचे गए- भट्टिकाव्य, अर्जुनरावणीय, कविरहस्यम्, द्व्याश्रयकाव्य आदि तो आज भी उपलब्ध हैं[१]। अर्वाचीन काल में रचित वासुदेव-विजयम्, धातुकाव्यम्, सुरूपराघवम् आदि काव्य भी सुलभ हैं। इनके अभ्यास से प्रयोगपक्ष को सुदृढ करना व्याकरणाध्येताओं के लिए नितान्त आवश्यक है। इस प्रकार एक साथ काव्य एवं व्याकरण के अनुशीलन से भाषा का बोध उत्तम एवं परिष्कृत रूप में होता है। कहा भी है-

काव्यं विना व्याकरणं न राजते न काव्यमव्याकरणं विराजते।
काव्येन च व्याकरणेन भारती परिष्कृता ते श्रयते सभारती:।।

(विद्वद्विभूति, पृ.- ५६)

अर्थात् काव्य के बिना व्याकरण की शोभा नहीं होती है और व्याकरणज्ञान के बिना काव्याध्ययन भी उत्तम रीति से सम्पन्न नहीं होता है। अत: काव्यानुशीलन एवं व्याकरणज्ञान से परिष्कृत भारती (वाणी) ही विद्वत्सभा के अनुरञ्जन की क्षमता प्रदान करती है।

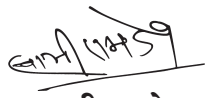

पतञ्जलि योगपीठ, हरिद्वार **-स्वामी रामदेव**
ज्येष्ठ शुदि-१, २०७४ वि. (२६.५.२०१७ ई.)

१. **अर्जुनरावणीयम्-** कैरलीटीकोपेतसंस्करणं मूलपाठसंस्करणञ्च, प्राप्तिस्थानम्- राष्ट्रियसंस्कृत संस्थानम्, जनकपुरी दिल्ली- ५८. **वासुदेवविजयम्,** प्राप्तिस्थानम्- राष्ट्रियसंस्कृत-संस्थानम्, वेदव्यासपरिसर: बलाहर गरली कांगडा- ५८.

विद्यार्थी-शिक्षा

(याज्ञवल्क्यशिक्षा, माण्डूकीशिक्षा एवं अन्य प्राचीन ग्रन्थों से संकलित प्रेरक वचन)

याज्ञवल्क्य-शिक्षायाम्-

उपांशु त्वरितं चैव योऽधीते विस्रसन्नपि।

अपि रूपसहस्राणां सन्देहे स प्रवर्तते।। (याज्ञ. शिक्षा- १६२)

जो छात्र उपांशु (मुख-मुख में ही बहुत धीरे-धीरे) बोलता है अथवा बहुत शीघ्रता से या भयभीत-सा, घबराया हुआ-सा उच्चारण करता है, वह इस प्रकार भले ही सहस्रों शब्दों को बोले, परन्तु उसके उच्चारण में स्पष्टता नहीं आ पाती है। अतः छात्र को न तो उपांशु और न शीघ्रतापूर्वक उच्चारण करना चाहिए। घबराहट को छोड़ धैर्यपूर्वक उच्चारण करना चाहिए। उच्चारण करने वालों के निम्न गुणों को ध्यान में रखना चाहिए-

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।

धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः।। (पाणि. शिक्षा, श्लोकात्मिका- ३३)

माधुर्य, अक्षरव्यक्ति (अक्षरों की स्पष्टता), पदच्छेद (पदों का पृथक्-पृथक् करना), सुस्वर, धैर्य और लययुक्तता- ये उच्चारण करने वालों के छः गुण होते हैं।

पञ्च विद्यां न गृह्णन्ति चण्डाः स्तब्धाश्च ये नराः।

अलसा रोगिणश्चैव येषां च विसृतं मनः।। (याज्ञ. शिक्षा- १६३)

पाँच प्रकार के छात्र विद्या ग्रहण नहीं कर पाते हैं- १. चण्ड (क्रोधी), २. स्तब्ध (ढीठ/अकड़ू), ३. आलसी, ४. रोगी, ५. जिनका मन बिखरा रहता है, विद्या-विरोधी प्रवृत्तियों में या विषयों में आसक्त रहता है।

अहेरिव गणाद् भीतः सम्मानान्नरकादिव।

राक्षसीभ्य इव स्त्रीभ्यः स विद्यामधिगच्छति।। (याज्ञ. शिक्षा- १६४)

जो गण (जनसमूह) से सर्प के समान डरता है और उससे दूर रहकर एकान्तसेवी होता है, जो मान-प्रतिष्ठा से नरक के समान डरता है, जो स्त्रीविषयक आसक्ति से राक्षसी के समान डरता है, वह छात्र ही विद्या को प्राप्त कर सकता है।

न भोजनविलम्बी स्यान्न च नारीनिबन्धनः।

सुदूरमपि विद्यार्थी व्रजेद् गरुडहंसवत्।। (याज्ञ. शिक्षा- १६५)

छात्र को भोजनविलम्बी (भोजन के विषय में आसक्त) नहीं होना चाहिए और न ही नारी-विषयक आसक्ति रखनी चाहिए। इस उपदेश को अपनाने वाला विद्यार्थी गरुड़ एवं हंस के समान दूर देश में जाकर भी विद्याध्ययन कर सकता है।

सुखार्थी चेत्यजेद् विद्यां विद्यार्थी चेत्यजेत् सुखम्।

सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।। (याज्ञ. शिक्षा- १६६)

यदि कोई सुख (आरामतलबी) चाहता है, तो उसे विद्या छोड़ देनी चाहिए और यदि विद्या चाहता है तो उसे सुख छोड़ देना चहिए, क्योंकि सुखार्थी को विद्या नहीं मिलती है और विद्यार्थी को सुख नहीं मिलता है। भाव यह है कि विद्योपार्जन तपस्यासाध्य है, इसलिए विद्यार्थी को बहुत सुख-सुविधाओं की कामना नहीं करनी चाहिए। तपोमय जीवन बिताते हुए ही विद्या प्राप्त करने में यत्नशील रहना चाहिए।

गुणिता शतशो विद्या सहस्रावर्त्तिता पुनः।

आगमिष्यति जिह्वाग्रे स्थलान्निम्नादिवोदकम्।। (याज्ञ. शिक्षा- १६८)

शतशः गुणित (दोहराई हुई) और सहस्र बार आवर्त्तित (फेरी गई) विद्या जिह्वाग्र पर ऐसे ही आ जाती है, जैसे निम्न स्थल पर जल आ जाता है।

शतेन गुणितायाति सहस्रेण च तिष्ठति।

शतानां च सहस्रेण प्रेत्य चेह च तिष्ठति।। (याज्ञ. शिक्षा- १६९)

सौ बार दोहराई गई विद्या प्राप्त हो जाती है और सहस्र बार दोहराने से वह स्थिर हो जाती है। एक लाख बार दोहराने से तो वह इस जन्म के साथ भावी जन्म तक के लिए भी स्थिर हो जाती है। इसी तथ्य का समर्थन महाकवि कालिदास ने पार्वती के अध्ययन का वर्णन करते हुए किया है-

तां हंसमालाः शरदीव गङ्गां महौषधिं नक्तमिवात्मभासः।
स्थिरोपदेशामुपदेशकाले प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः।।

(कुमारसम्भवम्- १.३०)

अर्थात् जैसे शरद् ऋतु (आश्विन-कार्तिक) में हंसमालाएं गङ्गा के पास स्वयं आ जाती हैं, रात्रि में आत्मप्रभाएं महौषधि में स्वयं प्रकट हो जाती हैं, इसी प्रकार अध्ययन-काल में स्थिरोपदेशा पार्वती के पास पूर्वजन्म की विद्याएं स्वयं प्रकट हो गई। भाव यह है कि पार्वती स्थिरोपदेशा थी, अर्थात् उसने पूर्व श्लोक में निर्दिष्ट तृतीय सूत्र (शतानां च सहस्रेण) के अनुसार लाख बार पारायण कर अगले जन्म तक के लिए उपदेश को स्थिर कर लिया था। अत एव अध्ययनकाल में पूर्वजन्माभ्यस्त उपदेश उसके चित्त में सहज रूप से स्फुरित हो गया था।

जलमभ्यासयोगेन शैलानां कुरुते क्षयम्।
कर्कशानां मृदुस्पर्शं किमभ्यासान्न साध्यते।। (याज्ञ. शिक्षा- १७०)

सतत अभ्यास से कोमल स्पर्श वाला जल भी कर्कश (कठोरतम) पाषाणों को भी क्षीण कर गोल बना देता है। अतः यह कथन सत्य ही है- अभ्यास से क्या सिद्ध नहीं हो सकता है? इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए छात्र को सदा अभ्यासरत रहना चाहिए। इससे वह कठिन से कठिन विषय को भी समझ सकता है।

यथा पिपीलिकाभिश्च क्रियते पांसुसञ्चयः।
न चात्र बलसामर्थ्यमुद्यमस्तत्र कारणम्।। (याज्ञ. शिक्षा- १७४)

धीरे-धीरे पिपीलिकाएं (चीटियां) भी मिट्टी का ढेर सञ्चित कर लेती हैं। इसमें उनका बल-सामर्थ्य कारण नहीं है, प्रत्युत निरन्तर उद्यमशीलता ही कारण है। इस तथ्य को ध्यानगत रखते हुए छात्र को अध्ययन में निरन्तर उद्यमशील रहना चाहिए। इससे अल्प सामर्थ्य वाला छात्र भी विद्या में पारङ्गत हो सकता है।

अञ्जनस्य क्षयं दृष्ट्वा वल्मीकस्य च सञ्चयम्।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्याद् दानाध्ययनकर्मसु।। (याज्ञ. शिक्षा- १७५)

अञ्जन पर्वत में थोड़ा-थोड़ा लेने पर भी उसका क्षय देखा जाता है। क्षुद्र कीटों द्वारा एक-एक कण इकट्ठा करने पर भी वल्मीक (बाम्बी) का विशाल सञ्चय हो

जाता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए छात्र को निरन्तर विद्या का सञ्चय करते रहना चाहिए। प्रतिकूल परिस्थिति में भी थोड़ा ही सही, पर अध्ययन अवश्य ही करना चहिए। इस प्रकार दान एवं अध्ययन आदि उत्तम कर्मों से प्रत्येक दिन को अवन्ध्य (सफल) बनाते रहना चाहिए।

हयानामिव जात्यानामर्धरात्रार्धशायिनाम्।
नहि विद्यार्थिनां निद्रा चिरं नेत्रेषु तिष्ठति।। (याज्ञ. शिक्षा- १७३)

जात्य (उत्तम प्रजाति) के घोड़े रात के आधे से भी आधे भाग में ही सोते हैं। इसी प्रकार विद्या चाहने वाले छात्रों के नेत्रों में भी निद्रा चिरकाल तक नहीं ठहरती है। अर्थात् वे ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर आवश्यक दिनचर्या के उपरान्त अध्ययन में संलग्न हो जाते हैं। ग्रीष्मकाल के अतिरिक्त वे दिन में भी नहीं सोते है। क्योंकि ग्रीष्मेतर ऋतु में दिवा-शयन से बुद्धि मन्द हो जाती है।

प्राचीन काल का एक प्रसंग है कि एक व्यक्ति किसी गृहस्थ को कहता है कि तुम्हारे पुत्र मन्दबुद्धि हैं, वह इसका प्रतिकार करता हुआ कहता है-

दिवाशया न मे पुत्रा न नक्तं दधिभोजिनः। (जैमि. भारतम्)

अर्थात् मेरे पुत्र न दिन में सोते हैं और न ही रात में दही खाते हैं। फिर मन्दबुद्धि क्यों होंगे। इससे स्पष्ट है कि दिन में सोने वाले और रात को दही खाने वाले लोगों की बुद्धि मन्द हो जाती है, क्योंकि इन दोनों कारणों से मस्तिष्क के ज्ञानतन्तुओं की क्रिया बाधित हो जाती है। आयुर्वेद के अनुसार भी ग्रीष्मेतर काल में दिवा-शयन निषिद्ध है-

सर्वर्तुषु दिवास्वापः प्रतिषिद्धोऽन्यत्र ग्रीष्मात्। विकृतिर्हि दिवास्वप्नो नाम, तत्र स्वपतामधर्मः सर्वदोषप्रकोपश्च, तत्प्रकोपाच्च कास-श्वास-प्रतिश्याय-शिरोगौरवाङ्गमर्दारोचक-ज्वराग्निदौर्बल्यानि भवन्ति।

(सुश्रुत-संहिता, शारीरस्थान- ४.३८)

अर्थात् ग्रीष्म को छोड़कर अन्य ऋतुओं में दिवा-शयन निषिद्ध है। दिन में सोना एक विकृति है, दिन में सोने वालों को अधर्म (पाप) लगता है तथा वात, पित्त व कफ- ये तीनों दोष प्रकुपित हो जाते हैं। इससे कास (खाँसी), श्वास

(दमा), प्रतिश्याय (जुकाम), शिर में भारीपन, अंगों में टूटन, ज्वर, अरुचि व मन्दाग्नि इत्यादि उपद्रव होते हैं। अतः ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतुओं में दिन में सोने से बचें।

ग्रीष्म ऋतु में रात छोटी तथा दिन लम्बे होते हैं। प्रचण्ड सूर्य-किरणों के कारण वातावरण व शरीर में रूक्षता आ जाती है। अतः दिन में सोना उचित माना है; क्योंकि इससे शरीर में स्निग्धता व तरावट आती है तथा दोषों का सन्तुलन बना रहता है। आयुर्वेद के अनुसार बाल, वृद्ध, रोगी व रात में आजीविका-कार्य करने वालों के लिए दिन में सोना मान्य है।

मिताहार - विद्यार्जन में सहायक

अन्नव्यञ्जनयोर्भागौ तृतीयमुदकस्य च।

वायोः सञ्चरणार्थाय चतुर्थमुपकल्पयेत्।। (याज्ञ. शिक्षा- १७६)

विद्यार्थी को मिताहारी होना चाहिए, जिह्वारस में आसक्त बहुभोजी छात्र न तो स्वस्थ रह सकता है और न ही विद्यार्जन कर सकता है। अतः इस श्लोक में मिताहार का नियम बताया है कि अन्न (रोटी, चावल) एवं व्यञ्जन (दाल, शाक, दही आदि) से उदर के दो भाग ही भरने चाहिए। तृतीय भाग जल के लिए रखना चाहिए और चतुर्थ भाग वायु-सञ्चार के लिए रिक्त रहना चाहिए। ऐसा करने वाला मिताहारी होता है।

त्रिफला-सेवन

त्रिफलां लवणाक्तां वै भक्षयेच्छिष्यकः सदा।

अग्निमेधाजनन्येषा स्वरवर्णकरी तथा।। (याज्ञ. शिक्षा- ३६)

छात्र को चाहिए कि त्रिफलाचूर्ण में थोड़ा सैन्धव लवण मिलाकर सायंकालीन भोजन के अनन्तर सदा सेवन करे। इस प्रकार सेवित त्रिफलाचूर्ण जठराग्नि एवं मेधा को बढ़ाता है, स्वर को उत्तम करता है और वर्ण को निखारता है। इस प्रकार त्रिफलाचूर्ण विशेष रूप से स्वास्थ्यप्रद होता है। स्वस्थ एवं मेधासम्पन्न छात्र की विद्या-वृद्धि बाधित नहीं होती है। इस प्रकार त्रिफला-सेवन विद्यार्जन में सहायक है।

विद्योपार्जन में गुरुसेवा का महत्त्व

यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति।

तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति।। (याज्ञ. शिक्षा- १६७)

जैसे खनित्र (फावड़े) से भूमि को खोदता हुआ व्यक्ति जल प्राप्त कर लेता है, इसी प्रकार सेवा-शुश्रूषा करने वाला छात्र गुरु की विद्या को पा लेता है।

माण्डूक्य-शिक्षायाम्-

सुतीर्थादागतं जग्धं स्वाम्नातं सुव्यवस्थितम्।

सुस्वरेण सुवक्त्रेण प्रयुक्तं ब्रह्म राजते।। (माण्डूकीशिक्षा- १६०)

सुतीर्थ (श्रेष्ठ गुरु) से सीखा हुआ और अच्छी प्रकार से अभ्यस्त व हृदयङ्गम किया हुआ, मुखाकृति को सौम्य रखते हुए उत्तम स्वर से प्रयुक्त किया हुआ ब्रह्म (वेद-मन्त्रोच्चारण) विशेष रूप से शोभित होता है। अष्टाध्यायी स्मरण करने वाले छात्रों को भी इसी प्रकार सूत्रोच्चारण का अभ्यास करना चाहिए।

कुतीर्थादागतं दग्धमपवर्णैश्च भक्षितम्।

न तस्य परिमोक्षोऽस्ति पापाहेरिव किल्विषात्।। (माण्डूकीशिक्षा- १६१)

कुतीर्थ (अज्ञानी अध्यापक) से प्राप्त, अनभ्यस्त अशुद्ध एवं खण्डित रूप में उच्चारित ब्रह्म (वेद-मन्त्रोच्चारण) के पाप (अशुद्धोच्चारणजन्य संस्कार) से जीवनभर छुटकारा नहीं मिलता है। अत: बाल्यकाल में उत्तम गुरु से शुद्ध उच्चारण सीखकर ही सूत्र, मन्त्र, श्लोक आदि का स्मरण करना चाहिए।

येषां तीर्थागता विद्या नित्यमभ्यासवर्द्धिता।

ते भवन्ति दुराधर्षा: संसिद्धा इव पर्वता:।। (माण्डूकीशिक्षा- १६२)

जिनकी विद्या तीर्थ (उत्तम गुरु) द्वारा प्रदत्त होती है और सतत अभ्यास द्वारा बढ़ाई जाती है, वे विद्यार्थी उच्चकोटि के विद्वान् बनते हैं और वाद, शास्त्रार्थ आदि में संसिद्ध (सुदृढ) पर्वतों के समान दुराधर्ष (अपराजेय) बने रहते हैं।

येषां च न ग्रहणशक्तिरतिप्रचण्डा

लब्ध्वा च ये न शतश: परिवर्त्तयन्ति।

निद्रां च ये प्रियसखीमिव न त्यजन्ति

ते तादृशा गुरुकुलेषु जरां व्रजन्ति।। (माण्डूकीशिक्षा- १६९)

जिन छात्रों की ग्रहणशक्ति प्रबल नहीं है और स्मरण किए हुए विषय की शतशः आवृत्ति भी नहीं करते, जो निद्रा को प्रियसखी के समान नहीं छोड़ते, ऐसे छात्र गुरुकुलों में ही जरा (वृद्धावस्था) को प्राप्त हो जाते हैं, परन्तु विद्वान् नहीं बन पाते।

ऊर्ध्वं सहस्रादाम्नातं सततं चान्ववेक्षणम्।

आप्तैस्तु सह सम्पाठस्त्रिविधा धारणा स्मृता।। (माण्डूकीशिक्षा- १७१)

सहस्र से भी अधिक आवृत्ति करना, निरन्तर अर्थ का अन्ववेक्षण (चिन्तन) करते रहना, आप्त (पूर्णविद्य) जनों के साथ चर्चा करना- इन तीन प्रकारों से विद्या की धारणा (दृढता) होती है।

योजनानां सहस्रं तु शनैर्याति पिपीलिका।

अगच्छन्वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति।। (माण्डूकीशिक्षा- १७३)

पिपीलिका (चीटी) शनैः शनैः चलते हुए भी सौ योजन तक पहुँच जाती है। गरुड़ न चले तो एक कदम भी नहीं जा पाता है। भाव यह है कि यदि मन्दबुद्धि छात्र भी निरन्तर अभ्यास करते हुए विद्यार्जन में बहुत अच्छी प्रगति कर लेता है, परन्तु अभ्यास न करने वाला तीक्ष्णमति छात्र भी कोई उपलब्धि नहीं कर सकता है।

पदं पादं तथार्द्धर्चं सेवितव्यं प्रयत्नतः।

अप्राज्ञः प्राज्ञतां याति सरिद्भिः सागरो यथा।। (माण्डूकीशिक्षा- १७५)

विद्यार्थी प्रतिदिन एक पद, एक पाद (चरण) अथवा भले ही आधी ऋचा ही याद करे, परन्तु करे अवश्य। कभी भी अभ्यास में व्यवधान न होने दे। इस प्रकार करता हुआ वह एक दिन उच्चकोटि का विद्वान् बन जाता है।

अनिर्वेदः श्रियो मूलं लोहबद्धं कमण्डलु।

अहोरात्राणि दीर्घाणि कः समुद्रं न शोषयेत्।। (माण्डूकीशिक्षा- १७६)

अनिर्वेद (उत्साह) श्रीप्राप्ति का मूल है, मेरा कमण्डलु दृढ लोहे का बना हुआ है। रात-दिन बहुत लम्बे हैं, मैं देखता हूँ, समुद्र क्यों नहीं सूखता, इस समुद्र को

खाली करने में लगे किसी उत्साही व्यक्ति के इस कथन को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी को भी विशाल शास्त्र को देखकर निराश नहीं होना चाहिए। असम्भव को भी सम्भव करने में जुटे उक्त उत्साही व्यक्ति के समान अनिर्वेदपूर्वक धैर्य के साथ अभ्यासरत छात्र अपारविद्यार्णव का कर्णधार बनकर उसे पार कर लेता है। इसके लिए उत्साह ही उसका मूल मन्त्र है।

आचार्योपासनाद् योगात् तपसा प्राज्ञसेवनात्।

विगृह्य कथनात् कालात् षड्भिर्विद्या प्रपद्यते।। (माण्डूकीशिक्षा- १७९)

गुरुसेवा, योग (चित्त की एकाग्रता), तप, प्राज्ञसेवन (विद्वत्सङ्गति), विगृह्य कथन (विगृह्य सम्भाषा/शास्त्रार्थ) एवं कालक्रम (धीरे-धीरे समय बीतना, अनुभव का परिपक्व होना)- इन छः कारणों से विद्या प्राप्त होती है।

आलस्यान्मूर्खसंयोगाद् भयाद्रोगनिपीडनात्।

अत्यासक्त्या च मानाच्च षड्भिर्विद्या विनश्यति।। (माण्डूकीशिक्षा- १८०)

आलस्य, मूर्खसङ्गति, भय, रोगग्रस्तता, विषयों में अत्यासक्ति एवं अभिमान- इन छः कारणों से विद्या नष्ट हो जाती है।

★★★

★ ओ३म् ★

अध्याय, पाद एवं सूत्रसंख्याओं की संक्षिप्त परिचय सूची

१. प्रथमोऽध्यायः–	**सूत्र संख्या-३४९**	**पृष्ठ संख्या– १-९**
प्रथम पाद–	७४ सूत्र	पृष्ठ संख्या- १-३
द्वितीय पाद–	७३ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ३-४
तृतीय पाद–	९३ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ४-६
चतुर्थ पाद–	१०५ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ६-९
२. द्वितीयोऽध्यायः–	**सूत्र संख्या-२६७**	**पृष्ठ संख्या– ९-१५**
प्रथम पाद–	७१ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ९-१०
द्वितीय पाद–	३८ सूत्र	पृष्ठ संख्या- १०-११
तृतीय पाद–	७३ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ११-१३
चतुर्थ पाद–	८५ सूत्र	पृष्ठ संख्या- १३-१५
३. तृतीयोऽध्यायः–	**सूत्र संख्या-६३१**	**पृष्ठ संख्या– १५-२९**
प्रथम पाद–	१५० सूत्र	पृष्ठ संख्या- १५-१८
द्वितीय पाद–	१८८ सूत्र	पृष्ठ संख्या- १९-२३
तृतीय पाद–	१७६ सूत्र	पृष्ठ संख्या- २३-२६
चतुर्थ पाद–	११७ सूत्र	पृष्ठ संख्या- २६-२९
४. चतुर्थोऽध्यायः–	**सूत्र संख्या-६३०**	**पृष्ठ संख्या– २९-४२**
प्रथम पाद–	१७६ सूत्र	पृष्ठ संख्या- २९-३३
द्वितीय पाद–	१४४ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ३३-३६
तृतीय पाद–	१६६ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ३६-४०
चतुर्थ पाद–	१४४ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ४०-४२

५. पञ्चमोऽध्याय :–	**सूत्र संख्या-५५४**	**पृष्ठ संख्या– ४३-५५**
प्रथम पाद–	१३५ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ४३-४६
द्वितीय पाद–	१४० सूत्र	पृष्ठ संख्या- ४६-४९
तृतीय पाद–	११९ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ४९-५१
चतुर्थ पाद–	१६० सूत्र	पृष्ठ संख्या- ५१-५५
६. षष्ठोऽध्याय :–	**सूत्र संख्या- ७२८**	**पृष्ठ संख्या– ५५-७१**
प्रथम पाद–	२१७ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ५५-५९
द्वितीय पाद–	१९८ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ६०-६४
तृतीय पाद–	१३८ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ६४-६७
चतुर्थ पाद–	१७५ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ६७-७१
७. सप्तमोऽध्याय :–	**सूत्र संख्या-४३७**	**पृष्ठ संख्या– ७१-८०**
प्रथम पाद–	१०३ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ७१-७३
द्वितीय पाद–	११८ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ७३-७५
तृतीय पाद–	११९ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ७५-७८
चतुर्थ पाद–	९७ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ७८-८०
८. अष्टमोऽध्याय :–	**सूत्र संख्या- ३६८**	**पृष्ठ संख्या– ८०-८८**
प्रथम पाद–	७४ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ८०-८२
द्वितीय पाद–	१०८ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ८२-८४
तृतीय पाद–	११९ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ८४-८७
चतुर्थ पाद–	६७ सूत्र	पृष्ठ संख्या- ८७-८८
अष्टाध्यायीसूत्र-वर्णानुक्रमणी–		**पृष्ठ संख्या- ८९-११४**
कुल सूत्र –	**३,९६४**	

★ ★ ★

★ ओ३म् ★

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।

अथ शब्दानुशासनम्

अइउण्। ऋलृक्। एओङ्। ऐऔच्। हयवरट्। लण्। ञमङणनम्। झभञ्। घढधष्। जबगडदश्। खफछठथचटतव्। कपय्। शषसर्। हल्। इति प्रत्याहारसूत्राणि।।

प्रथमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ वृद्धिरादैच्। ३

२ अदेङ् गुणः। ३

३ इको गुणवृद्धी। ५,६

४ न धातुलोप आर्धधातुके। ६

५ क्ङिति च।

६ दीधीवेवीटाम्।

७ हलोऽनन्तराः संयोगः।

८ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः।

९ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्। १०

१० नाज्झलौ।

११ ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्। १२,१८

१२ अदसो मात्।

१३ शे।

१४ निपात एकाजनाङ्। १५

१५ ओत्। १६

१६ संबुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे। १७

१७ उञ ऊँ।

१८ ईदूतौ च सप्तम्यर्थे।
१९ दाधा घ्वदाप्।
२० आद्यन्तवदेकस्मिन्।
२१ तरप्तमपौ घः।
२२ बहुगणवतुडति सङ्ख्या। २४
२३ ष्णान्ता षट्। २४
२४ डति च।
२५ क्तक्तवतू निष्ठा।
२६ सर्वादीनि सर्वनामानि। ३१,३५
२७ विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ।
२८ न बहुव्रीहौ। ३१
२९ तृतीयासमासे।
३० द्वन्द्वे च। ३१
३१ विभाषा जसि। ३५
३२ प्रथमचरमतयाल्पार्ध-
कतिपयनेमाश्च।
३३ पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराध-
राणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम्।
३४ स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्।
३५ अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः।
३६ स्वरादिनिपातमव्ययम्। ४०
३७ तद्धितश्चासर्वविभक्तिः।
३८ कृन्मेजन्तः।
३९ क्त्वातोसुन्कसुनः।
४० अव्ययीभावश्च।
४१ शि सर्वनामस्थानम्। ४२
४२ सुडनपुंसकस्य।
४३ न वेति विभाषा।
४४ इग् यणः सम्प्रसारणम्।
४५ आद्यन्तौ टकितौ।
४६ मिदचोऽन्त्यात् परः।
४७ एच इग्घ्रस्वादेशे।
४८ षष्ठी स्थानेयोगा। ५४,५०
४९ स्थानेऽन्तरतमः।
५० उरण् रपरः।
५१ अलोऽन्त्यस्य। ५३, ५२
५२ ङिच्च।
५३ आदेः परस्य।
५४ अनेकाल्शित् सर्वस्य।
५५ स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ। ५८
५६ अचः परस्मिन् पूर्वविधौ। ५८,५७
५७ न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोप-
स्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्
चर्विधिषु।
५८ द्विर्वचनेऽचि।
५९ अदर्शनं लोपः। ६०
६० प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः।
६१ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्। ६२
६२ न लुमताङ्गस्य।
६३ अचोऽन्त्यादि टि।
६४ अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा।
६५ तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य। ६६
६६ तस्मादित्युत्तरस्य।
६७ स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा। ७१

६८ अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः। ६९
६९ तपरस्तत्कालस्य।
७० आदिरन्त्येन सहेता।
७१ येन विधिस्तदन्तस्य।
७२ वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्। ७४
७३ त्यदादीनि च।
७४ एङ् प्राचां देशे।

★

द्वितीयः पादः

१ गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्। ४
२ विज इट्। ३
३ विभाषोर्णोः।
४ सार्वधातुकमपित्। ५
५ असंयोगाल्लिट् कित्। ६,२६
६ इन्धिभवतिभ्यां च।
७ मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा। ८
८ रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च। १०
९ इको झल्। ११,१३
१० हलन्ताच्च। ११
११ लिङ्सिचावात्मनेपदेषु। १३,१७
१२ उश्च।
१३ वा गमः।
१४ हनः सिच्। १७
१५ यमो गन्धने। १६
१६ विभाषोपयमने।
१७ स्थाघ्वोरिच्च।
१८ न क्त्वा सेट्। २६
१९ निष्ठा शीङ्स्विदिमिदि-क्ष्विदिधृषः। २२
२० मृषस्तितिक्षायाम्।
२१ उदुपधाद्भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम्।
२२ पूङः क्त्वा च। २६
२३ नोपधात् थफान्ताद् वा। २६
२४ वञ्चिलुञ्च्यृतश्च।
२५ तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य।
२६ रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च।
२७ ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः। ३१,२८
२८ अचश्च।
२९ उच्चैरुदात्तः।
३० नीचैरनुदात्तः।
३१ समाहारः स्वरितः।
३२ तस्यादित उदात्तमर्धह्रस्वम्।
३३ एकश्रुति दूरात् सम्बुद्धौ। ३९
३४ यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु। ३५
३५ उच्चैस्तरां वा वषट्कारः।
३६ विभाषा छन्दसि।
३७ न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः।३८
३८ देवब्रह्मणोरनुदात्तः।
३९ स्वरितात् संहितायामनुदात्तानाम्। ४०

४० उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः।
४१ अपृक्त एकाल्प्रत्ययः।
४२ तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः।
४३ प्रथमानिर्दिष्टं समास-उपसर्जनम्। ४४
४४ एकविभक्ति चापूर्वनिपाते।
४५ अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्। ४६
४६ कृत्तद्धितसमासाश्च।
४७ ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य। ४८
४८ गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य। ४९
४९ लुक् तद्धितलुकि। ५०
५० इद् गोण्याः।
५१ लुपि युक्तवद् व्यक्तिवचने। ५२
५२ विशेषणानां चाजातेः।
५३ तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात्। ५७
५४ लुब् योगाप्रख्यानात्।
५५ योगप्रमाणे च तदभावेऽदर्शनं स्यात्।
५६ प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्या-न्यप्रमाणत्वात्।
५७ कालोपसर्जने च तुल्यम्।
५८ जात्याख्यायामेकस्मिन् ५९ बहुवचनमन्यतरस्याम्। ६०,६२
५९ अस्मदो द्वयोश्च। ६२
६० फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे। ६२
६१ छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम्। ६२
६२ विशाखयोश्च।
६३ तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहु-वचनस्य द्विवचनं नित्यम्।
६४ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ। ७३
६५ वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव ६६ विशेषः। ६९
६६ स्त्री पुंवच्च।
६७ पुमान् स्त्रिया।
६८ भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्।
६९ नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्-चास्यान्यतरस्याम्। ७१
७० पिता मात्रा।
७१ श्वशुरः श्वश्रूवा।
७२ त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम्।
७३ ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरुणेषु स्त्री।

★

तृतीयः पादः

१ भूवादयो धातवः।
२ उपदेशेऽजनुनासिक इत्। ८
३ हलन्त्यम्। ४
४ न विभक्तौ तुस्माः।
५ आदिर्ञिटुडवः। ८
६ षः प्रत्ययस्य। ८
७ चुटू।
८ लशक्वतद्धिते।
९ तस्य लोपः।

१० यथासंख्यमनुदेशः समानाम्।
११ स्वरितेनाधिकारः।
१२ अनुदात्तङित आत्मनेपदम्। ७७
१३ भावकर्मणोः।
१४ कर्तरि कर्मव्यतिहारे। १६
१५ न गतिहिंसार्थेभ्यः। १६
१६ इतरेतरान्योऽन्योपपदाच्च।
१७ नेर्विशः।
१८ परिव्यवेभ्यः क्रियः।
१९ विपराभ्यां जेः।
२० आङो दोऽनास्यविहरणे। २१
२१ क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च।
२२ समवप्रविभ्यः स्थः। २६
२३ प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च।
२४ उदोऽनूर्ध्वकर्मणि।
२५ उपान्मन्त्रकरणे। २६
२६ अकर्मकाच्च। २९
२७ उद्विभ्यां तपः।
२८ आङो यमहनः।
२९ समो गम्यृच्छिभ्याम्।
३० निसमुपविभ्यो ह्वः। ३१
३१ स्पर्धायामाङः।
३२ गन्धनावक्षेपणसेवनसाह
सिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु
कृञः। ३५
३३ अधेः प्रसहने।
३४ वेः शब्दकर्मणः। ३५
३५ अकर्मकाच्च।
३६ संमाननोत्सञ्जनाचार्यकरण-
ज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः। ३७
३७ कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि।
३८ वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः। ३९,४३
३९ उपपराभ्याम्।
४० आङ उद्गमने।
४१ वेः पादविहरणे।
४२ प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्।
४३ अनुपसर्गाद्वा।
४४ अपह्नवे ज्ञः। ४६
४५ अकर्मकाच्च।
४६ संप्रतिभ्यामनाध्याने।
४७ भासनोपसंभाषाज्ञानयत्न-
विमत्युपमन्त्रणेषु वदः। ५०
४८ व्यक्तवाचां समुच्चारणे। ५०
४९ अनोरकर्मकात्।
५० विभाषा विप्रलापे।
५१ अवाद् ग्रः। ५२
५२ समः प्रतिज्ञाने।
५३ उदश्चरः सकर्मकात्। ५४
५४ समस्तृतीयायुक्तात्। ५५
५५ दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे।
५६ उपाद् यमः स्वकरणे।
५७ ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः। ५९
५८ नानोर्ज्ञः। ५९

५९ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः।
६० शदेः शितः। ६१
६१ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च।
६२ पूर्ववत् सनः।
६३ आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य।
६४ प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु।
६५ समः क्ष्णुवः।
६६ भुजोऽनवने।
६७ णेरणौ यत्कर्म णौ चेत् स कर्तानाध्याने। ७१
६८ भीस्म्योर्हेतुभये।
६९ गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने।
७० लियः संमाननशालीनीकरणयोश्च।
७१ मिथ्योपपदात् कृञोऽभ्यासे।
७२ स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले। ७७
७३ अपाद्वदः।
७४ णिचश्च।
७५ समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे।
७६ अनुपसर्गाज्ज्ञः।
७७ विभाषोपपदेन प्रतीयमाने।
७८ शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्। ९३
७९ अनुपराभ्यां कृञः।
८० अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः।
८१ प्राद्वहः।
८२ परेर्मृषः।
८३ व्याङ्परिभ्यो रमः। ८५
८४ उपाच्च। ८५
८५ विभाषाकर्मकात्।
८६ बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः। ८९
८७ निगरणचलनार्थेभ्यश्च।
८८ अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्।
८९ न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः।
९० वा क्यषः। ९३
९१ द्युद्भ्यो लुङि।
९२ वृद्भ्यः स्यसनोः। ९३
९३ लुटि च क्लृपः।

★

चतुर्थः पादः

१ आ कडारादेका संज्ञा।
२ विप्रतिषेधे परं कार्यम्।
३ यू स्त्र्याख्यौ नदी। ६
४ नेयङुवङ्स्थानावस्त्री। ६
५ वामि। ६
६ ङिति ह्रस्वश्च। ७
७ शेषो घ्यसखि। ९
८ पतिः समास एव। ९
९ षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा।
१० ह्रस्वं लघु। ११
११ संयोगे गुरु। १२
१२ दीर्घं च।

१३ यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्।
१४ सुप्तिङन्तं पदम्। १७
१५ नः क्ये।
१६ सिति च।
१७ स्वादिष्वसर्वनामस्थाने। १८
१८ यचि भम्। १९
१९ तसौ मत्वर्थे।
२० अयस्मयादीनिच्छन्दसि।
२१ बहुषु बहुवचनम्।
२२ द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने।
२३ कारके। ५५
२४ ध्रुवमपायेऽपादानम्। ३१
२५ भीत्रार्थानां भयहेतुः।
२६ पराजेरसोढः।
२७ वारणार्थानामीप्सितः।
२८ अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति।
२९ आख्यातोपयोगे।
३० जनिकर्तुः प्रकृतिः। ३१
३१ भुवः प्रभवः।
३२ कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। ४१
३३ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।
३४ श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः।
३५ धारेरुत्तमर्णः।
३६ स्पृहेरीप्सितः।
३७ क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः। ३८
३८ क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म।
३९ राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः।
४० प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता। ४१
४१ अनुप्रतिगृणश्च।
४२ साधकतमं करणम्। ४४
४३ दिवः कर्म च।
४४ परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्।
४५ आधारोऽधिकरणम्। ४८
४६ अधिशीङ्स्थासां कर्म। ४८
४७ अभिनिविशश्च।
४८ उपान्वध्याङ्वसः।
४९ कर्तुरीप्सिततमं कर्म। ५३
५० तथायुक्तं चानीप्सितम्।
५१ अकथितं च।
५२ गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ। ५३
५३ हृक्रोरन्यतरस्याम्।
५४ स्वतन्त्रः कर्ता। ५५
५५ तत्प्रयोजको हेतुश्च।
५६ प्राग्रीश्वरान्निपाताः। ९५
५७ चादयोऽसत्त्वे। ५८
५८ प्रादय उपसर्गाः क्रियायोगे। ५९,७८

५९ गतिश्च। ७८
६० ऊर्यादिच्विडाचश्च।
६१ अनुकरणं चानितिपरम्।
६२ आदरानादरयोः सदसती।
६३ भूषणेऽलम्।
६४ अन्तरपरिग्रहे।
६५ कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते।
६६ पुरोऽव्ययम्। ६८
६७ अस्तं च।
६८ अच्छ गत्यर्थवदेषु।
६९ अदोऽनुपदेशे।
७० तिरोऽन्तर्धौ। ७१
७१ विभाषा कृञि। ७५, ७८
७२ उपाजेऽन्वाजे।
७३ साक्षात्प्रभृतीनि च।
७४ अनत्याधान उरसिमनसी। ७५
७५ मध्ये पदे निवचने च।
७६ नित्यं हस्ते पाणावुपयमने। ७८
७७ प्राध्वं बन्धने।
७८ जीविकोपनिषदावौपम्ये।
७९ ते प्राग् धातोः। ८१
८० छन्दसि परेऽपि। ८१
८१ व्यवहिताश्च।
८२ कर्मप्रवचनीयाः। ९७
८३ अनुर्लक्षणे। ८५
८४ तृतीयार्थे।
८५ हीने। ८६
८६ उपोऽधिके च।
८७ अपपरी वर्जने।
८८ आङ् मर्यादावचने।
८९ लक्षणेत्थम्भूताख्यानभाग-
वीप्सासु प्रतिपर्यनवः। ९०
९० अभिरभागे।
९१ प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः।
९२ अधिपरी अनर्थकौ।
९३ सुः पूजायाम्। ९४
९४ अतिरतिक्रमणे च।
९५ अपिः पदार्थसम्भावनान्ववव-
सर्गगर्हासमुच्चयेषु।
९६ अधिरीश्वरे। ९७
९७ विभाषा कृञि।
९८ लः परस्मैपदम्।
९९ तङानावात्मनेपदम्।
१०० तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्य-
मोत्तमाः। १०३
१०१ तान्येकवचनद्विवचनबहुवच-
नान्येकशः। १०२
१०२ सुपः। १०३
१०३ विभक्तिश्च।
१०४ युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे
स्थानिन्यपि मध्यमः। १०५, १०६
१०५ प्रहासे च मन्योपपदे मन्यते-
रुत्तम एकवच्च।

१०६ अस्मद्युत्तमः।
१०७ शेषे प्रथमः।
१०८ परः संनिकर्षः संहिता।
१०९ विरामोऽवसानम्।

द्वितीयोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ समर्थः पदविधिः।
२ सुबामन्त्रिते पराङ्गवत् स्वरे। २.२९
३ प्राक् कडारात् समासः। २.३८
४ सह सुपा। २.२२
५ अव्ययीभावः। २०
६ अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धि-
व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति-
शब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्य-
यौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाक-
ल्यान्तवचनेषु। ८
७ यथासादृश्ये।
८ यावदवधारणे।
९ सुप् प्रतिना मात्रार्थे।
१० अक्षशलाकासंख्याः परिणा।
११ विभाषापपरिबहिरञ्चवः २.२९
पञ्चम्या। १२
१२ आङ् मर्यादाभिविध्योः।
१३ लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये। १५
१४ अनुर्यत्समया। १५
१५ यस्य चायामः।
१६ तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च।
१७ पारे मध्ये षष्ठ्या वा।
१८ सङ्ख्या वंश्येन। १९
१९ नदीभिश्च। २०
२० अन्यपदार्थे च संज्ञायाम्।
२१ तत्पुरुषः। २.२२
२२ द्विगुश्च।
२३ द्वितीया श्रितातीतपतितगता-
त्यस्तप्राप्तापन्नैः। २८
२४ स्वयं क्तेन। २७
२५ खट्वा क्षेपे।
२६ सामि।
२७ कालाः। २८
२८ अत्यन्तसंयोगे च।
२९ तृतीया तत्कृतार्थेन गुण-
वचनेन। ३४
३० पूर्वसदृशसमोनार्थकलह-
निपुणमिश्रश्लक्ष्णैः।
३१ कर्तृकरणे कृता बहुलम्। ३२
३२ कृत्यैरधिकार्थवचने।
३३ अन्नेन व्यञ्जनम्।

३४ भक्ष्येण मिश्रीकरणम्।
३५ चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुख-रक्षितैः।
३६ पञ्चमी भयेन। ३८
३७ अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तै-रल्पशः।
३८ स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन।
३९ सप्तमी शौण्डैः। ४७
४० सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च।
४१ ध्वाङ्क्षेण क्षेपे।
४२ कृत्यैर्ऋणे।
४३ संज्ञायाम्।
४४ क्तेनाहोरात्रावयवाः। ४६
४५ तत्र।
४६ क्षेपे। ४७
४७ पात्रेसमितादयश्च।
४८ पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनव-केवलाः समानाधिकरणेन। ७१
४९ दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम्। ५०
५० तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च।
५१ सङ्ख्यापूर्वो द्विगुः।
५२ कुत्सितानि कुत्सनैः। ५३
५३ पापाणके कुत्सितैः।
५४ उपमानानि सामान्यवचनैः।
५५ उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे।
५६ विशेषणं विशेष्येण बहुलम्। ५७
५७ पूर्वापरप्रथमचरमजघन्य-समानमध्यमध्यमवीराश्च।
५८ श्रेण्यादयः कृतादिभिः।
५९ क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ्।
६० सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः।
६१ वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्य-मानम्।
६२ कतरकतमौ जातिपरिप्रश्ने।
६३ किं क्षेपे।
६४ पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टि-धेनुवशावेहद्बष्कयणीप्रवक्तृ-श्रोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जाति:। ६५
६५ प्रशंसावचनैश्च।
६६ युवा खलतिपलितवलिन-जरतीभिः।
६७ कृत्यतुल्याख्या अजात्या।
६८ वर्णो वर्णेन।
६९ कुमारः श्रमणादिभिः।
७० चतुष्पादो गर्भिण्या।
७१ मयूरव्यंसकादयश्च।

★

द्वितीयः पादः

१ पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैका-धिकरणे। ३
२ अर्धं नपुंसकम्।

३ द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्याण्य-
न्यतरस्याम्। ४
४ प्राप्तापन्ने च द्वितीयया।
५ कालाः परिमाणिना।
६ नञ्।
७ ईषदकृता।
८ षष्ठी। १७
९ याजकादिभिश्च।
१० न निर्धारणे। १६
११ पूरणगुणसुहितार्थसदव्यय-
तव्यसमानाधिकरणेन।
१२ क्तेन च पूजायाम्। १३
१३ अधिकरणवाचिना च।
१४ कर्मणि च। १५
१५ तृजकाभ्यां कर्तरि। १७
१६ कर्तरि च।
१७ नित्यं क्रीडाजीविकयोः। १९
१८ कुगतिप्रादयः।
१९ उपपदमतिङ्। २२
२० अमैवाव्ययेन। २१
२१ तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम्। २२
२२ क्त्वा च।
२३ शेषो बहुव्रीहिः। २८
२४ अनेकमन्यपदार्थे।
२५ संख्ययाव्ययासन्नादूराधिक-
संख्याः संख्येये।
२६ दिङ्नामान्यन्तराले।
२७ तत्र तेनेदमिति सरूपे।
२८ तेन सहेति तुल्ययोगे।
२९ चार्थे द्वन्द्वः।
३० उपसर्जनं पूर्वम्। ३१, ३८
३१ राजदन्तादिषु परम्।
३२ द्वन्द्वे घि। ३४
३३ अजाद्यदन्तम्।
३४ अल्पाच्तरम्।
३५ सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ। ३७
३६ निष्ठा। ३७
३७ वाहिताग्न्यादिषु। ३८
३८ कडाराः कर्मधारये।

★

तृतीयः पादः

१ अनभिहिते। ७३
२ कर्मणि द्वितीया। ३, ५
३ तृतीया च होश्छन्दसि।
४ अन्तरान्तरेणयुक्ते।
५ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे। ७, ६
६ अपवर्गे तृतीया।
७ सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये।
८ कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया। ११
९ यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं
तत्र सप्तमी।
१० पञ्चम्यपाङ्परिभिः। ११
११ प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्।

१२ गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि।
१३ चतुर्थी सम्प्रदाने। १७
१४ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः।
१५ तुमर्थाच्च भाववचनात्।
१६ नमःस्वस्तिस्वाहास्वधालं-वषड्योगाच्च।
१७ मन्यकर्मण्यनादरे विभाषा-प्राणिषु।
१८ कर्तृकरणयोस्तृतीया। २३
१९ सहयुक्तेऽप्रधाने।
२० येनाङ्गविकारः।
२१ इत्थम्भूतलक्षणे।
२२ संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि।
२३ हेतौ। २७
२४ अकर्तर्यृणे पञ्चमी। २५
२५ विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्।
२६ षष्ठी हेतुप्रयोगे। २७
२७ सर्वनाम्नस्तृतीया च।
२८ अपादाने पञ्चमी। ३५
२९ अन्यारादितरर्तेदिक्छब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते।
३० षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन।
३१ एनपा द्वितीया।
३२ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्। ३३
३३ करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकति-पयस्यासत्त्ववचनस्य।
३४ दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतर-स्याम्। ३५
३५ दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च। ३६
३६ सप्तम्यधिकरणे च। ४१
३७ यस्य च भावेन भावलक्षणम्। ३८
३८ षष्ठी चानादरे। ४१
३९ स्वामीश्वराधिपतिदायाद-साक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च।
४० आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवा-याम्।
४१ यतश्च निर्धारणम्। ४२
४२ पञ्चमी विभक्ते।
४३ साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्त-म्यप्रतेः। ४५
४४ प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च। ४५
४५ नक्षत्रे च लुपि।
४६ प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाण-वचनमात्रे प्रथमा। ४८
४७ सम्बोधने च।
४८ सामन्त्रितम्। ४९
४९ एकवचनं सम्बुद्धिः।
५० षष्ठी शेषे। ७३
५१ ज्ञोऽविदर्थस्य करणे।
५२ अधीगर्थदयेशां कर्मणि। ६१
५३ कृञः प्रतियत्ने।

५४ रुजार्थानां भाववचनाना-
मज्वरेः।
५५ आशिषि नाथः।
५६ जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां
हिंसायाम्।
५७ व्यवहृपणोः समर्थयोः।
५८ दिवस्तदर्थस्य। ६०
५९ विभाषोपसर्गे।
६० द्वितीया ब्राह्मणे।
६१ प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासम्प्र-
दाने।
६२ चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि। ६३
६३ यजेश्च करणे।
६४ कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे।
६५ कर्तृकर्मणोः कृति। ६६
६६ उभयप्राप्तौ कर्मणि।
६७ क्तस्य च वर्तमाने। ६८
६८ अधिकरणवाचिनश्च।
६९ न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थ-
तृनाम्। ७०
७० अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः।
७१ कृत्यानां कर्तरि वा।
७२ तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीया-
न्यतरस्याम्। ७३
७३ चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्र-
कुशलसुखार्थहितैः।

★

चतुर्थः पादः

१ द्विगुरेकवचनम्। १६
२ द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्ग-
नाम्। १६
३ अनुवादे चरणानाम्।
४ अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम्।
५ अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्या-
नाम्।
६ जातिरप्राणिनाम्।
७ विशिष्टलिङ्गो नदी देशोऽ-
ग्रामाः।
८ क्षुद्रजन्तवः।
९ येषां च विरोधः शाश्वतिकः।
१० शूद्राणामनिरवसितानाम्।
११ गवाश्वप्रभृतीनि च।
१२ विभाषा वृक्षमृगतृणधान्य-
व्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडव-
पूर्वापराधरोत्तराणाम्। १३
१३ विप्रतिषिद्धं चानधिकरण-
वाचि।
१४ न दधिपयआदीनि। १५
१५ अधिकरणैतावत्त्वे च। १६
१६ विभाषा समीपे।
१७ स नपुंसकम्। २५
१८ अव्ययीभावश्च।
१९ तत्पुरुषोऽनञ्कर्मधारयः। २५
२० संज्ञायां कन्थोशीनरेषु।

२१ उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्या- सायाम्।
२२ छाया बाहुल्ये।
२३ सभा राजामनुष्यपूर्वा। २४
२४ अशाला च।
२५ विभाषा सेनासुराच्छाया- शालानिशानाम्।
२६ परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः।
२७ पूर्ववदश्ववडवौ। २८
२८ हेमन्तशिशिरावहोरात्रे चच्छन्दसि।
२९ रात्राह्नाहाः पुंसि।
३० अपथं नपुंसकम्। ३१
३१ अर्धर्चाः पुंसि च।
३२ इदमोऽन्वादेशे ऽशनुदात्तस्- ३४ तृतीयादौ। ३३
३३ एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ चानु- दात्तौ। ३४
३४ द्वितीयाटौस्स्वेनः।
३५ आर्धधातुके। ५७
३६ अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति। ४०
३७ लुङ्सनोर्घस्लृ। ४०
३८ घञपोश्च। ३९
३९ बहुलं छन्दसि।
४० लिट्यन्यतरस्याम्। ४१
४१ वेञो वयिः।
४२ हनो वध लिङि। ४४
४३ लुङि च।
४४ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्।
४५ इणो गा लुङि। ४७
४६ णौ गमिरबोधने। ४८,४७
४७ सनि च। ४८
४८ इडश्च। ५१
४९ गाङ् लिटि। ५१
५० विभाषा लुङ्लृङोः। ५१
५१ णौ च संश्चङोः।
५२ अस्तेर्भूः।
५३ ब्रुवो वचिः।
५४ चक्षिङः ख्याञ्। ५५
५५ वा लिटि। ५६
५६ अजेर्व्यघञपोः। ५७
५७ वा यौ।
५८ ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि ६१ लुगणिञोः। ८३
५९ पैलादिभ्यश्च।
६० इञः प्राचाम्।
६१ न तौल्वलिभ्यः।
६२ तद्राजस्य बहुषु तेनैवा- ७० स्त्रियाम्। ६५
६३ यस्कादिभ्यो गोत्रे। ७०
६४ यञञोश्च।
६५ अत्रिभृगुकुत्सवसिष्ठगोत- मार्ङ्गिरोभ्यश्च।
६६ बह्वच इञः प्राच्यभरतेषु।

६७ न गोपवनादिभ्यः।
६८ तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे।
६९ उपकादिभ्योऽन्यतरस्या-
मद्वन्द्वे।
७० आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्ति-
कुण्डिनच्।
७१ सुपो धातुप्रातिपदिकयोः।
७२ अदिप्रभृतिभ्यः शपः। ७३,७६
७३ बहुलं छन्दसि। ७४
७४ यङोऽचि च।
७५ जुहोत्यादिभ्यः श्लुः। ७६
७६ बहुलं छन्दसि।
७७ गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः ७९
परस्मैपदेषु। ७८
७८ विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः। ७९
७९ तनादिभ्यस्तथासोः।
८० मन्त्रे घसह्वरणशवृदहाद्वृच्कृ-
गमिजनिभ्यो लेः। ८१
८१ आमः।
८२ अव्ययादाप्सुपः। ८३
८३ नाव्ययीभावादतोऽम्- ८४
त्वपञ्चम्याः।
८४ तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्।
८५ लुटः प्रथमस्य डारौरसः।

तृतीयोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ प्रत्ययः। ५.४.१६०
२ परश्च। ५.४.१६०
३ आद्युदात्तश्च। ५.४.१६०
४ अनुदात्तौ सुप्पितौ।
५ गुप्तिज्किद्भ्यः सन्। ७
६ मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्-
चाभ्यासस्य।
७ धातोः कर्मणः समानकर्तृका- १०
दिच्छायां वा। ९,२२
८ सुप आत्मनः क्यच्। ११,९,१०
९ काम्यच्च।
१० उपमानादाचारे। ११
११ कर्तुः क्यङ् सलोपश्च। १८
१२ भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च
हलः। १३
१३ लोहितादिडाज्भ्यः क्यष्।
१४ कष्टाय क्रमणे।
१५ कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां २१
वर्तिचरोः।
१६ वाष्पोष्मभ्यामुद्वमने।
१७ शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः
करणे। २१
१८ सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम्।

१९ नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्।
२० पुच्छभाण्डचीवराण्णिङ्।
२१ मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्र-
हलकलकृततूस्तेभ्यो णिच्।
२२ धातोरेकाचो हलादेः क्रिया- ९०
समभिहारे यङ्। २४
२३ नित्यं कौटिल्ये गतौ। २४
२४ लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्यो
भावगर्हायाम्।
२५ सत्यापपाशरूपवीणातूल-
श्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्ण-
चूर्णचुरादिभ्यो णिच्। २६
२६ हेतुमति च।
२७ कण्ड्वादिभ्यो यक्।
२८ गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य
आयः।
२९ ऋतेरीयङ्।
३० कमेर्णिङ्।
३१ आयादय आर्धधातुके वा।
३२ सनाद्यन्ता धातवः।
३३ स्यतासी लृलुटोः।
३४ सिब्बहुलं लेटि।
३५ कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि। ४०,३९
३६ इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः।
३७ दयायासश्च।
३८ उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्। ३९
३९ भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च।
४० कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि।
४१ विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतर-
स्याम्। ४२
४२ अभ्युत्सादयांप्रजनयांचिकयां-
रमयामकः पावयांक्रियाद्-
विदामक्रन्नितिच्छन्दसि।
४३ च्लि लुङि। ६६
४४ च्लेः सिच्। ६६
४५ शल इगुपधादनिटः क्सः। ४७
४६ श्लिष आलिङ्गने।
४७ न दृशः।
४८ णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि ६१
चङ्। ५१
४९ विभाषा धेट्श्व्योः। ५०
५० गुपेश्छन्दसि। ५१
५१ नोनयतिध्वनयत्येलयत्यर्द-
यतिभ्यः।
५२ अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्। ५९
५३ लिपिसिचिह्वश्च। ५४
५४ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्।
५५ पुषादिद्युताद्यृलृदितः परस्मै-
पदेषु। ५७
५६ सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च।
५७ इरितो वा। ५८
५८ जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचु-
ग्लुञ्चुश्विभ्यश्च।
५९ कृमृदॄरुहिभ्यश्छन्दसि।
६० चिण् ते पदः। ६५,६६

६१ दीपजनबुधपूरितायि-
प्यायिभ्योऽन्यतरस्याम्। ६३
६२ अचः कर्मकर्तरि। ६५
६३ दुहश्च।
६४ न रुधः। ६५
६५ तपोऽनुतापे च।
६६ चिण् भावकर्मणोः। ६७
६७ सार्वधातुके यक्। ८२
६८ कर्तरि शप्। ८८
६९ दिवादिभ्यः श्यन्। ७२
७० वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमु-
त्रसित्रुटिलषः। ७२
७१ यसोऽनुपसर्गात्।
७२ संयसश्च।
७३ स्वादिभ्यः श्नुः। ७६
७४ श्रुवः शृ च।
७५ अक्षोऽन्यतरस्याम्। ७६
७६ तनूकरणे तक्षः।
७७ तुदादिभ्यः शः।
७८ रुधादिभ्यः श्नम्।
७९ तनादिकृञ्भ्य उः। ८०
८० धिन्विकृण्व्योर च।
८१ क्र्यादिभ्यः श्ना। ८२
८२ स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भु-
स्कुञ्भ्यः श्नुश्च।
८३ हलः श्नः शानज्झौ। ८४
८४ छन्दसि शायजपि। ८६
८५ व्यत्ययो बहुलम्।
८६ लिङ्याशिष्यङ्।
८७ कर्मवत् कर्मणा तुल्यक्रियः। ९०
८८ तपस्तपःकर्मकस्यैव।
८९ न दुहस्नुनमां यक्चिणौ।
९० कुषिरजोः प्राचां श्यन्
परस्मैपदं च।
९१ धातोः। ३.४.११७
९२ तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्। ९४
९३ कृदतिङ्।
९४ वासरूपोऽस्त्रियाम्।
९५ कृत्याः। १३२
९६ तव्यत्तव्यानीयरः।
९७ अचो यत्। १०५
९८ पोरदुपधात्।
९९ शकिसहोश्च।
१०० गदमदचरयमश्चानुपसर्गे।
१०१ अवद्यपण्यवर्या गर्ह्य-
पणितव्यानिरोधेषु।
१०२ वह्यं करणम्।
१०३ अर्यः स्वामिवैश्ययोः।
१०४ उपसर्या काल्या प्रजने।
१०५ अजर्यं संगतम्।
१०६ वदः सुपि क्यप् च। १०८,१२१
१०७ भुवो भावे। १०८
१०८ हनस्त च।
१०९ एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्।

११० ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः।
१११ ई च खनः।
११२ भृञोऽसंज्ञायाम्।
११३ मृजेर्विभाषा।
११४ राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्य-
कुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः।
११५ भिद्योद्ध्यौ नदे।
११६ पुष्यसिद्ध्यौ नक्षत्रे।
११७ विपूयविनीयजित्या मुञ्ज-
कल्कहलिषु।
११८ प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः। ११९
११९ पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च।
१२० विभाषा कृवृषोः।
१२१ युग्यं च पत्रे।
१२२ अमावस्यदन्यतरस्याम्।
१२३ छन्दसि निष्टर्क्यदेवहूय-
प्रणीयोन्नीयोच्छिष्यमर्य-
स्तर्याध्वर्यखन्यखान्यदेव-
यज्यापृच्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्म-
वाद्यभाव्यस्ताव्योपचाय्य-
पृडानि।
१२४ ऋहलोर्ण्यत्। १३१
१२५ ओरावश्यके।
१२६ आसुयुवपिरपिलपिव्रपिचमश्च।
१२७ आनाय्योऽनित्ये।
१२८ प्रणाय्योऽसंमतौ।
१२९ पाय्यसान्नाय्यनिकाय्यधाय्या
मानहविर्निवाससामिधेनीषु।
१३० क्रतौ कुण्डपाय्यसंचाय्यौ।
१३१ अग्नौ परिचाय्योपचाय्य-
समूह्याः। १३२
१३२ चित्याग्निचित्ये च।
१३३ ण्वुल्तृचौ।
१३४ नन्दिग्रहिपचादिभ्यो
ल्युणिन्यचः।
१३५ इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः। १३६
१३६ आतश्चोपसर्गे।
१३७ पाघ्राध्माधेट्दृशः शः। १३९
१३८ अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधा- १४०
रिपारिवेद्युदेजिचेतिसाति-
साहिभ्यश्च।
१३९ ददातिदधात्योर्विभाषा। १४०
१४० ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः। १४३
१४१ श्याद्व्यधास्रुसंस्रवतीणव-
सावहलिहश्लिषश्वसश्च।
१४२ दुन्योरनुपसर्गे।
१४३ विभाषा ग्रहः। १४४
१४४ गेहे कः।
१४५ शिल्पिनि ष्वुन्। १४७
१४६ गस्थकन्। १४७
१४७ ण्युट् च। १४८
१४८ हश्च व्रीहिकालयोः।
१४९ प्रुसृल्वः समभिहारे वुन्। १५०
१५० आशिषि च।

★

द्वितीय: पाद:

१ कर्मण्यण्। ५६,२
२ ह्वावामश्च।
३ आतोऽनुपसर्गे क:। ७
४ सुपि स्थ:। ८३
५ तुन्दशोकयो: परिमृजापनुदो:।
६ प्रे दाज्ञ:।
७ समि ख्य:।
८ गापोष्टक्।
९ हरतेरनुद्यमनेऽच्। ११,१५
१० वयसि च।
११ आङि ताच्छील्ये।
१२ अर्ह:।
१३ स्तम्बकर्णयो रमिजपो:।
१४ शमि धातो: संज्ञायाम्।
१५ अधिकरणे शेते:। १६
१६ चरेष्ट:। १७, २३
१७ भिक्षासेनादायेषु च।
१८ पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्ते:। १९
१९ पूर्वे कर्तरि।
२० कृञो हेतुताच्छील्यानु-
लोम्येषु। २४
२१. दिवाविभानिशाप्रभाभास्का-
रान्तानन्तादिबहुनान्दीकिं-
लिपिलिबिबलिभक्तिकर्तृचित्र-
क्षेत्रसङ्ख्याजङ्घाबाह्वहर्यत्तद्-
धनुररुष्षु।
२२ कर्मणि भृतौ।
२३ न शब्दश्लोककलहगाथावैर-
चाटुसूत्रमन्त्रपदेषु।
२४ स्तम्बशकृतोरिन्। २७
२५ हरतेर्दृतिनाथयो: पशौ।
२६ फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च।
२७ छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्।
२८ एजे: खश्। ३७
२९ नासिकास्तनयोर्धाधेटो:। ३०
३० नाडीमुष्ट्योश्च।
३१ उदि कूले रुजिवहो:।
३२ वहाभ्रे लिह:।
३३ परिमाणे पच:। ३४
३४ मितनखे च।
३५ विध्वरुषोस्तुद:।
३६ असूर्यललाटयोर्दृशितपो:।
३७ उग्रंपश्येरंमदपाणिंधमाश्च।
३८ प्रियवशे वद: खच्। ४७
३९ द्विषत्परयोस्तापे:।
४० वाचि यमो व्रते।
४१ पू:सर्वयोर्दारिसहो:।
४२ सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कष:।
४३ मेघर्तिभयेषु कृञ:। ४४
४४ क्षेमप्रियमद्रेऽण् च।
४५ आशिते भुव: करण-
भावयो:।

४६ संज्ञायां भृतृवृजिधारिसहि-
तपिदमः। ४७
४७ गमश्च। ४८
४८ अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वा-
नन्तेषु डः। ५०
४९ आशिषि हनः। ५५
५० अपे क्लेशतमसोः।
५१ कुमारशीर्षयोर्णिनिः।
५२ लक्षणे जायापत्योष्टक्। ५४
५३ अमनुष्यकर्तृके च।
५४ शक्तौ हस्तिकपाटयोः।
५५ पाणिघताडघौ शिल्पिनि।
५६ आढ्यसुभगस्थूलपलित-
नग्नान्धप्रियेषु च्व्यर्थेष्वच्वौ ५७
कृञः करणे ख्युन्।
५७ कर्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ।
५८ स्पृशोऽनुदके क्विन्। ६०
५९ ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चु-
युजिक्रुञ्चां च।
६० त्यदादिषु दृशोऽनालोचने
कञ् च।
६१ सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिद-
च्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि
क्विप्। ७७
६२ भजो ण्विः। ६४
६३ छन्दसि सहः। ६७
६४ वहश्च। ६६
६५ कव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युट्। ६६
६६ हव्येऽनन्तःपादम्।
६७ जनसनखनक्रमगमो विट्। ६९
६८ अदोऽनन्ने। ६९
६९ क्रव्ये च।
७० दुहः कब् घश्च।
७१ मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो
ण्विन्। ७२
७२ अवे यजः। ७३
७३ विजुपे छन्दसि। ७५,७४
७४ आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च। ७५
७५ अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते।
७६ क्विप् च। ७७
७७ स्थः क च।
७८ सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये। ८६
७९ कर्तर्युपमाने।
८० व्रते।
८१ बहुलमाभीक्ष्ण्ये।
८२ मनः। ८३
८३ आत्ममाने खश्च।
८४ भूते। १२२
८५ करणे यजः।
८६ कर्मणि हनः। ९५, ८८
८७ ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्। ९२
८८ बहुलं छन्दसि।
८९ सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः।
९० सोमे सुञः।

९१ अग्नौ चे:। ९२
९२ कर्मण्यग्न्याख्यायाम्।
९३ कर्मणीनि विक्रिय:।
९४ दृशे: क्वनिप्। ९६
९५ राजनि युधिकृञ:। ९६
९६ सहे च।
९७ सप्तम्यां जनेर्ड:। १०१
९८ पञ्चम्यामजातौ।
९९ उपसर्गे च संज्ञायाम्।
१०० अनौ कर्मणि।
१०१ अन्येष्वपि दृश्यते।
१०२ निष्ठा।
१०३ सुयजोर्ङ्वनिप्।
१०४ जीर्यतेरतृन्।
१०५ छन्दसि लिट्। १०७
१०६ लिट: कानज् वा। १०९
१०७ क्वसुश्च। १०८
१०८ भाषायां सदवसश्रुव:।
१०९ उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च।
११० लुङ्।
१११ अनद्यतने लङ्। ११९
११२ अभिज्ञावचने लृट्। ११४
११३ न यदि।
११४ विभाषा साकाङ्क्षे।
११५ परोक्षे लिट्। ११८,११७
११६ हशश्वतोर्लङ् च। ११७
११७ प्रश्ने चासन्नकाले।
११८ लट् स्मे। १२२,११९
११९ अपरोक्षे च।
१२० ननौ पृष्टप्रतिवचने। १२१
१२१ नन्वोर्विभाषा। १२२
१२२ पुरि लुङ् चास्मे।
१२३ वर्तमाने लट्। ३.३.१
१२४ लट: शतृशानचावप्रथमा-
समानाधिकरणे। १२६
१२५ सम्बोधने च।
१२६ लक्षणहेत्वो: क्रियाया:।
१२७ तौ सत्।
१२८ पूङ्यजो: शानन्।
१२९ ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु
चानश्।
१३० इङ्धार्यो: शत्रकृच्छ्रिणि। १३३
१३१ द्विषोऽमित्रे।
१३२ सुञो यज्ञसंयोगे।
१३३ अर्ह: प्रशंसायाम्।
१३४ आ क्वेस्तच्छीलतद्धर्म-
तत्साधुकारिषु। १७८
१३५ तृन्।
१३६ अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्-
पचोत्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतु-
वृधुसहचर इष्णुच्। १३८
१३७ णेश्छन्दसि। १३८
१३८ भुवश्च। १३९
१३९ ग्लाजिस्थश्च क्स्नु:।

१४० त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः।
१४१ शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्। १४५
१४२ सम्पृचानुरुधाङ्यमाङ्यस-
परिसृसंसृजपरिदेविसंज्वर-
परिक्षिपपरिरटपरिवदपरि-
दहपरिमुहदुषद्विषद्रुहदुहयुजा-
क्रीडविविचत्यजरजभजाति-
चरापचरामुषाभ्याहनश्च।
१४३ वौ कषलसकत्थस्नभ्भः। १४४
१४४ अपे च लषः।
१४५ प्रे लपसृद्रुमथवदवसः।
१४६ निन्दहिंसक्लिशखादविनाश-
परिक्षिपपरिरटपरिवादि-
व्याभाषासूयो वुञ्। १४७
१४७ देविक्रुशोश्चोपसर्गे।
१४८ चलनशब्दार्थादकर्मकाद् १४९
युच्। १५३
१४९ अनुदात्तेतश्च हलादेः।
१५० जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्यसृगृधि-
ज्वलशुचलषपतपदः।
१५१ क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च।
१५२ न यः। १५३
१५३ सूददीपदीक्षश्च।
१५४ लषपतपदस्थाभूवृषहनकम-
गमशॄभ्य उकञ्।
१५५ जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङः
षाकन्।
१५६ प्रजोरिनिः। १५७
१५७ जिदृक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्य-
मपरिभूप्रसूभ्यश्च।
१५८ स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्रा-
श्रद्धाभ्य आलुच्।
१४९ दाधेट्सिशदसदो रुः।
१६० सृघस्यदः क्मरच्।
१६१ भञ्जभासमिदो घुरच्।
१६२ विदिभिदिच्छिदेः कुरच्।
१६३ इण्नशजिसर्तिभ्यः क्वरप्। १६४
१६४ गत्वरश्च।
१६५ जागरूकः। १६६
१६६ यजजपदशां यङः।
१६७ नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंस-
दीपो रः।
१६८ सनाशंसभिक्ष उः। १७०
१६९ विन्दुरिच्छुः।
१७० क्याच्छन्दसि। १७१
१७१ आदृगमहनजनः किकिनौ
लिट् च।
१७२ स्वपितृषोर्नजिङ्।
१७३ शॄवन्द्योरारुः।
१७४ भियः क्रुक्लुकनौ।
१७५ स्थेशभासपिसकसो वरच्। १७६
१७६ यश्च यङः।
१७७ भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजु-
ग्रावस्तुवः क्विप्। १७९

१७८ अन्येभ्योऽपि दृश्यते।
१७९ भुवः संज्ञान्तरयोः। १८०
१८० विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम्।
१८१ धः कर्मणि ष्ट्रन्। १८३
१८२ दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसि-
सिचमिहपतदशनहः करणे। १८६
१८३ हलसूकरयोः पुवः।
१८४ अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः। १८६
१८५ पुवः संज्ञायाम्। १८६
१८६ कर्तरि चर्षिदेवतयोः।
१८७ जीतः क्तः। १८८
१८८ मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च।

★

तृतीयः पादः

१ उणादयो बहुलम्। ३
२ भूतेऽपि दृश्यन्ते।
३ भविष्यति गम्यादयः। १५
४ यावत्पुरानिपातयोर्लट्। ९
५ विभाषा कदाकर्ह्योः। ९
६ किंवृत्ते लिप्सायाम्।
७ लिप्स्यमानसिद्धौ च।
८ लोडर्थलक्षणे च। ९
९ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके।
१० तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रिया-
र्थायाम्। १३
११ भाववचनाश्च।
१२ अण् कर्मणि च।
१३ लृट् शेषे च।
१४ लृटः सद् वा।
१५ अनद्यतने लुट्।
१६ पदरुजविशस्पृशो घञ्। ५५
१७ सृ स्थिरे।
१८ भावे। ११२
१९ अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्। ११२
२० परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः।
२१ इङश्च।
२२ उपसर्गे रुवः।
२३ समि युद्रुदुवः।
२४ श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे।
२५ वौ क्षुश्रुवः।
२६ अवोदोर्नियः।
२७ प्रेद्रुस्तुस्रुवः।
२८ निरभ्योः पूल्वोः।
२९ उन्योर्ग्रः। ३०
३० कृ धान्ये।
३१ यज्ञे समि स्तुवः।
३२ प्रे स्त्रोऽयज्ञे। ३४
३३ प्रथने वावशब्दे। ३४
३४ छन्दोनाम्नि च।
३५ उदि ग्रहः। ३६
३६ समि मुष्टौ।
३७ परिन्योर्नीणोर्द्यूताभ्रेषयोः।
३८ परावनुपात्यय इणः।
३९ व्युपयोः शेतेः पर्याये।

४० हस्तादाने चेरस्तेये। ४२
४१ निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः। ४२
४२ सङ्घे चानौत्तराधर्ये।
४३ कर्मव्यतिहारे णच् स्त्रियाम्।
४४ अभिविधौ भाव इनुण्।
४५ आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहः। ४७
४६ प्रे लिप्सायाम्।
४७ परौ यज्ञे।
४८ नौ वृ धान्ये।
४९ उदि श्रयतियौतिपूद्रुवः।
५० विभाषाङि रुप्लुवोः। ५५
५१ अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे। ५३
५२ प्रे वणिजाम्। ५४
५३ रश्मौ च।
५४ वृणोतेराच्छादने।
५५ परौ भुवोऽवज्ञाने।
५६ एरच्।
५७ ऋदोरप्। ८७
५८ ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च।
५९ उपसर्गेऽदः। ६०
६० नौ ण च।
६१ व्यधजपोरनुपसर्गे। ६५
६२ स्वनहसोर्वा। ६५
६३ यमः समुपनिविषु च।
६४ नौ गदनदपठस्वनः। ६५
६५ क्वणो वीणायां च।
६६ नित्यं पणः परिमाणे।
६७ मदोऽनुपसर्गे।
६८ प्रमदसम्मदौ हर्षे।
६९ समुदोरजः पशुषु।
७० अक्षेषु ग्लहः।
७१ प्रजने सर्तेः।
७२ ह्वः सम्प्रसारणं च न्यभ्युप- ७५
विषु।
७३ आङि युद्धे।
७४ निपानमाहावः।
७५ भावेऽनुपसर्गस्य। ७६
७६ हनश्च वधः। ८७
७७ मूर्तौ घनः। ८३
७८ अन्तर्घनो देशे।
७९ अगारैकदेशे प्रघणःप्रघाणश्च।
८० उद्घनोऽत्याधानम्।
८१ अपघनोऽङ्गम्।
८२ करणेऽयोविद्रुषु। ८४
८३ स्तम्बे क च।
८४ परौ घः।
८५ उपघ्न आश्रये।
८६ सङ्घोद्घौ गणप्रशंसयोः।
८७ निघो निमितम्।
८८ ड्वितः क्त्रिः।
८९ ट्वितोऽथुच्।
९० यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो
नङ्।

९१ स्वपो नन्।
९२ उपसर्गे घोः किः। ९३
९३ कर्मण्यधिकरणे च।
९४ स्त्रियां क्तिन्। ११२, ९७
९५ स्थागापापचो भावे। ९६
९६ मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः। १००
९७ ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकीर्तयश्च।
९८ व्रजयजोर्भावे क्यप्। १००
९९ संज्ञायां समजनिषदनिपतमनविदषुञ्शीङ्भृञिणः।
१०० कृञः श च। १०१
१०१ इच्छा।
१०२ अ प्रत्ययात्। १०३
१०३ गुरोश्च हलः।
१०४ षिद्भिदादिभ्योऽङ्। १०६
१०५ चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च।
१०६ आतश्चोपसर्गे।
१०७ ण्यासश्रन्थो युच्।
१०८ रोगाख्यायां ण्वुल्बहुलम्। ११०
१०९ संज्ञायाम्।
११० विभाषाख्यानपरिप्रश्नयोरिञ् च। १११
१११ पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच्।
११२ आक्रोशे नञ्यनिः।
११३ कृत्यल्युटो बहुलम्।
११४ नपुंसके भावे क्तः। ११६
११५ ल्युट् च। ११७
११६ कर्मणि च येन संस्पर्शात् कर्तुः शरीरसुखम्।
११७ करणाधिकरणयोश्च। १२५
११८ पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण। १२१ १२५, ११९
११९ गोचरसञ्चरवहव्रजव्यजापणनिगमाश्च।
१२० अवे तॄस्त्रोर्घञ्। १२५
१२१ हलश्च।
१२२ अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च।
१२३ उदङ्कोऽनुदके।
१२४ जालमानायः।
१२५ खनो घ च।
१२६ ईषदुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्। १२७ १३०
१२७ कर्तृकर्मणोश्च भूकृञोः।
१२८ आतो युच्। १३०
१२९ छन्दसि गत्यर्थेभ्यः। १३०
१३० अन्येभ्योऽपि दृश्यते।
१३१ वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा। १३२
१३२ आशंसायां भूतवच्च। १३३
१३३ क्षिप्रवचने लृट्।
१३४ आशंसावचने लिङ्।
१३५ नानद्यतनवत् क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः। १३८

१३६ भविष्यति मर्यादावचनेऽवर-
स्मिन्। १३९, १३८, १३७
१३७ कालविभागे चानहोरात्रा-
णाम्। १३८
१३८ परस्मिन् विभाषा।
१३९ लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियाति-
पत्तौ। १४१
१४० भूते च। १४१
१४१ वोताप्योः।
१४२ गर्हायां लडपिजात्वोः। १४४, १४३
१४३ विभाषा कथमि लिङ् च।
१४४ किंवृत्ते लिङ्लृटौ। १४५
१४५ अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिं-
वृत्तेऽपि। १४८
१४६ किंकिलास्त्यर्थेषु लृट्।
१४७ जातुयदोर्लिङ्। १५०
१४८ यच्चयत्रयोः। १५०
१४९ गर्हायां च।
१५० चित्रीकरणे च। १५१
१५१ शेषे लृडयदौ।
१५२ उताप्योः समर्थयोर्लिङ्। १५५
१५३ कामप्रवेदनेऽकच्चिति।
१५४ सम्भावनेऽलमिति चेत्
सिद्धाप्रयोगे। १५५
१५५ विभाषा धातौ सम्भावन- १५६
वचनेऽयदि।
१५६ हेतुहेतुमतोर्लिङ्।
१५७ इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ। १५९
१५८ समानकर्तृकेषु तुमुन्। १५९
१५९ लिङ् च। १६०
१६० इच्छार्थेभ्यो विभाषा
वर्तमाने।
१६१ विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट
सम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्। १६२
१६२ लोट् च। १६३
१६३ प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च। १६५
१६४ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके। १६५
१६५ स्मे लोट्। १६६
१६६ अधीष्टे च।
१६७ कालसमयवेलासु तुमुन्। १६८
१६८ लिङ् यदि। १६९
१६९ अर्हे कृत्यतृचश्च।
१७० आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः। १७१
१७१ कृत्याश्च। १७२
१७२ शकि लिङ् च।
१७३ आशिषि लिङ्लोटौ। १७४
१७४ क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्।
१७५ माङि लुङ्। १७६
१७६ स्मोत्तरे लङ् च।

★

चतुर्थः पादः

१ धातुसम्बन्धे प्रत्ययाः। ६
२ क्रियासमभिहारे लोट् लोटो
हिस्वौ वा च तध्वमोः। ३
३ समुच्चयेऽन्यतरस्याम्।
४ यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन्। ५

५ समुच्चये सामान्यवचनस्य।
६ छन्दसि लुङ्लङ्लिटः। १७
७ लिङर्थे लेट्। ८
८ उपसंवादाशङ्कयोश्च।
९ तुमर्थे सेसेनसेऽसेन्क्सेकसेन-ध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यै-शध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः। १७
१० प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै।
११ दृशे विख्ये च।
१२ शकि णमुल्कमुलौ।
१३ ईश्वरे तोसुन्कसुनौ।
१४ कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः। १५
१५ अवचक्षे च।
१६ भावलक्षणे स्थेणकृञ्वदिचरि-हुतमिजनिभ्यस्तोसुन्। १७
१७ सृपितृदोः कसुन्।
१८ अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा। २४
१९ उदीचां माङो व्यतीहारे।
२० परावरयोगे च।
२१ समानकर्तृकयोः पूर्वकाले। २६
२२ आभीक्ष्ण्ये णमुल् च। २३, २४
२३ न यद्यनाकाङ्क्षे।
२४ विभाषाग्रेप्रथमपूर्वेषु।
२५ कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ्। २८
२६ स्वादुमि णमुल्। ५८
२७ अन्यथैवंकथमित्थंसु सिद्धाप्रयोगश्चेत्। २८
२८ यथातथयोरसूयाप्रतिवचने।
२९ कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये। ३६
३० यावति विन्दजीवोः।
३१ चर्मोदरयोः पूरेः। ३२
३२ वर्षप्रमाण ऊलोपश्चास्यान्यतरस्याम्। ३३
३३ चेले क्नोपेः।
३४ निमूलसमूलयोः कषः।
३५ शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः।
३६ समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः।
३७ करणे हनः। ४०
३८ स्नेहने पिषः।
३९ हस्ते वर्तिग्रहोः।
४० स्वे पुषः।
४१ अधिकरणे बन्धः। ४२
४२ संज्ञायाम्।
४३ कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः। ४५
४४ ऊर्ध्वे शुषिपूरोः।
४५ उपमाने कर्मणि च।
४६ कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः।
४७ उपदंशस्तृतीयायाम्। ५१
४८ हिंसार्थानां च समानकर्मकाणाम्।
४९ सप्तम्यां चोपपीडरुधकर्षः। ५१
५० समासत्तौ।

५१ प्रमाणे च।
५२ अपादाने परीप्सायाम्। ५३
५३ द्वितीयायां च। ५८
५४ स्वाङ्गेऽध्रुवे। ५५
५५ परिक्लिश्यमाने च।
५६ विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्य-
मानासेव्यमानयोः।
५७ अस्यतितृषोः क्रियान्तरे
कालेषु।
५८ नाम्न्यादिशिग्रहोः।
५९ अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने
कृञः क्त्वाणमुलौ। ६०, ६४
६० तिर्यच्यपवर्गे।
६१ स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः। ६२
६२ नाधार्थप्रत्यये च्व्यर्थे।
६३ तूष्णीमि भुवः। ६४
६४ अन्वच्यानुलोम्ये।
६५ शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रम-
सहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन्। ६६
६६ पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु।
६७ कर्तरि कृत्। ६९
६८ भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीय-
जन्याप्लाव्यापात्या वा।
६९ लः कर्मणि च भावे
चाकर्मकेभ्यः। ७२
७० तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः।
७१ आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च। ७२
७२ गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थास-
वसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च।
७३ दाशगोघ्नौ सम्प्रदाने।
७४ भीमादयोऽपादाने।
७५ ताभ्यामन्यत्रोणादयः।
७६ क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगति-
प्रत्यवसानार्थेभ्यः।
७७ लस्य। ११७
७८ तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्म-
स्तातांझथासाथांध्वमिङ्-
वहिमहिङ्।
७९ टित आत्मनेपदानां टेरे। ८०
८० थासः से।
८१ लिटस्तझयोरेशिरेच्। ८२
८२ परस्मैपदानां णलतुसुस्-
थलथुसणल्वमाः। ८४
८३ विदो लटो वा। ८४
८४ ब्रुवः पञ्चानामादित आहो
ब्रुवः।
८५ लोटो लङ्वत्। ९३
८६ एरुः।
८७ सेर्ह्यपिच्च। ८८
८८ वा छन्दसि।
८९ मेर्निः।
९० आमेतः। ९१
९१ सवाभ्यां वामौ।
९२ आडुत्तमस्य पिच्च। ९३

९३ एत ऐ।
९४ लेटोऽडाटौ। ९८
९५ आत ऐ। ९६
९६ वैतोऽन्यत्र। ९८
९७ इतश्च लोपः परस्मैपदेषु। १००
९८ स उत्तमस्य। ९९
९९ नित्यं ङितः। १००, १०१
१०० इतश्च।
१०१ तस्थस्थमिपां तांतंताम:।
१०२ लिङः सीयुट्। १०८
१०३ यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च। १०४
१०४ किदाशिषि।
१०५ झस्य रन्।
१०६ इटोऽत्।
१०७ सुट् तिथोः।
१०८ झेर्जुस्। ११२
१०९ सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च। ११०
११० आतः। १११
१११ लङः शाकटायनस्यैव। ११२
११२ द्विषश्च।
११३ तिङ्शित् सार्वधातुकम्।
११४ आर्धधातुकं शेषः। ११७
११५ लिट् च।
११६ लिङाशिषि।
११७ छन्दस्युभयथा।

चतुर्थोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ ङ्याप्प्रातिपदिकात्। ५.४.१६०
२ स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्-ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्-ङसोसाम्ङ्योस्सुप्।
३ स्त्रियाम्। ८१
४ अजाद्यतष्टाप्। ८१
५ ऋन्नेभ्यो ङीप्। २४
६ उगितश्च।
७ वनो र च।
८ पादोऽन्यतरस्याम्। ९
९ टाबृचि।
१० न षट्स्वस्रादिभ्यः। १२
११ मनः।
१२ अनो बहुव्रीहेः।
१३ डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्।
१४ अनुपसर्जनात्। ८१
१५ टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्-तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः।
१६ यञश्च। १८

१७ प्राचां ष्फस्तद्धितः। १९
१८ सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः।
१९ कौरव्यमाण्डूकाभ्यां च।
२० वयसि प्रथमे।
२१ द्विगोः। २४
२२ अपरिमाणबिस्ताचितकम्बल्येभ्यो न तद्धितलुकि। २४
२३ काण्डान्तात् क्षेत्रे।
२४ पुरुषात् प्रमाणेऽन्यतरस्याम्।
२५ बहुव्रीहेरूधसो ङीष्। २९, २६
२६ सङ्ख्याव्ययादेर्ङीप्। २७, ३९
२७ दामहायनान्ताच्च।
२८ अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम्। २९
२९ नित्यं संज्ञाछन्दसोः। ३१
३० केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्यकृतसुमङ्गलभेषजाच्च।
३१ रात्रेश्चाजसौ।
३२ अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक्।
३३ पत्युर्नो यज्ञसंयोगे। ३५
३४ विभाषा सपूर्वस्य।
३५ नित्यं सपत्न्यादिषु।
३६ पूतक्रतोरै च। ३८
३७ वृषाकप्यग्निकुसितकुसीदानामुदात्तः। ३८
३८ मनोरौ वा। ३९
३९ वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः। ४०
४० अन्यतो ङीष्। ६५
४१ षिद्गौरादिभ्यश्च।
४२ जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनागकालनीलकुशकामुककबरादवृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमाश्राणास्थौल्यवर्णानाच्छादनायोविकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु।
४३ शोणात् प्राचाम्।
४४ वोतो गुणवचनात्। ४५
४५ बह्वादिभ्यश्च। ४६
४६ नित्यं छन्दसि। ४७
४७ भुवश्च।
४८ पुंयोगादाख्यायाम्। ४९
४९ इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्।
५० क्रीतात् करणपूर्वात्। ५१
५१ क्तादल्पाख्यायाम्। ५३
५२ बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात्। ५३
५३ अस्वाङ्गपूर्वपदाद् वा। ५५
५४ स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद संयोगोपधात्। ५८
५५ नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च।
५६ न क्रोडादिबह्वचः। ५८
५७ सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च।
५८ नखमुखात् संज्ञायाम्।
५९ दीर्घजिह्वी चच्छन्दसि। ६१

६० दिक्पूर्वपदान् ङीप्।
६१ वाहः।
६२ सख्यशिश्वीति भाषायाम्।
६३ जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्। ६४
६४ पाककर्णपर्णपुष्पफलमूल-वालोत्तरपदाच्च।
६५ इतो मनुष्यजातेः। ६६
६६ ऊङुतः। ७२
६७ बाह्वन्तात् संज्ञायाम्।
६८ पङ्गोश्च।
६९ ऊरूत्तरपदादौपम्ये। ७०
७० संहितशफलक्षणवामादेश्च।
७१ कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि। ७२
७२ संज्ञायाम्।
७३ शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्।
७४ यङश्चाप्। ७५
७५ आवट्याच्च।
७६ तद्धिताः।
७७ यूनस्तिः।
७८ अणिञोरनार्षयोर्गुरूपोत्तमयोः ष्यङ् गोत्रे। ७९ ८१,८०
७९ गोत्रावयवात्।
८० क्रौड्यादिभ्यश्च।
८१ दैवयज्ञिशौचिवृक्षिसात्यमुग्रि-काण्ठेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम्।
८२ समर्थानां प्रथमाद् वा। ५.३.१
८३ प्राग् दीव्यतोऽण्। ४.४.२
८४ अश्वपत्यादिभ्यश्च।
८५ दित्यदित्यादित्यपत्युत्तर-पदाण्ण्यः।
८६ उत्सादिभ्योऽञ्।
८७ स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्।
८८ द्विगोर्लुगनपत्ये।
८९ गोत्रेऽलुगचि। ९१
९० यूनि लुक्। ९१
९१ फक्फिञोरन्यतरस्याम्।
९२ तस्यापत्यम्। १७६
९३ एको गोत्रे।
९४ गोत्राद् यून्यस्त्रियाम्।
९५ अत इञ्। ९७
९६ बाह्वादिभ्यश्च।
९७ सुधातुरकङ् च।
९८ गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्चफञ्। १११
९९ नडादिभ्यः फक्। १०३
१०० हरितादिभ्योऽञः।
१०१ यञिञोश्च।
१०२ शरद्वच्छुनकदर्भाद् भृगुवत्साग्रायणेषु।
१०३ द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतर-स्याम्।
१०४ अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ्।
१०५ गर्गादिभ्यो यञ्। १०९
१०६ मधुबभ्रवोर्ब्राह्मण-कौशिकयोः।
१०७ कपिबोधादाङ्गिरसे। १०९

१०८ वतण्डाच्च। १०९
१०९ लुक् स्त्रियाम्।
११० अश्वादिभ्यः फञ्। १११
१११ भर्गात् त्रैगर्ते।
११२ शिवादिभ्योऽण्। ११९
११३ अवृद्धाभ्यो नदीमानुषीभ्यस्-
तन्नामिकाभ्यः।
११४ ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च।
११५ मातुरुत् संख्यासंभद्रपूर्वायाः।
११६ कन्यायाः कनीन च।
११७ विकर्णशुङ्गच्छगलाद्
वत्सभरद्वाजात्रिषु।
११८ पीलाया वा। ११९
११९ ढक् च मण्डूकात्।
१२० स्त्रीभ्यो ढक्। १२१, १२७
१२१ द्व्यचः। १२२
१२२ इतश्चानिञः।
१२३ शुभ्रादिभ्यश्च।
१२४ विकर्णकुषीतकात् काश्यपे।
१२५ भ्रुवो वुक् च।
१२६ कल्याण्यादीनामिनङ्। १२७
१२७ कुलटाया वा।
१२८ चटकाया ऐरक्।
१२९ गोधाया ढ्रक्। १३०, १३१
१३० आरगुदीचाम्।
१३१ क्षुद्राभ्यो वा।
१३२ पितृष्वसुश्छण्। १३४
१३३ ढकि लोपः। १३४
१३४ मातृष्वसुश्च।
१३५ चतुष्पाद्भ्यो ढञ्। १३६
१३६ गृष्ट्यादिभ्यश्च।
१३७ राजश्वशुराद् यत्।
१३८ क्षत्राद् घः।
१३९ कुलात् खः। १४०
१४० अपूर्वपदादन्यतरस्यां १४२
यड्ढकञौ।
१४१ महाकुलादञ्खञौ।
१४२ दुष्कुलाड् ढक्।
१४३ स्वसुश्छः। १४४
१४४ भ्रातुर्व्यच्च। १४५
१४५ व्यन् सपत्ने।
१४६ रेवत्यादिभ्यष्ठक्। १४७
१४७ गोत्रस्त्रियाः १५०
कुत्सने ण च। १४९
१४८ वृद्धाट् ठक् सौवीरेषु १४९
बहुलम्। १५०
१४९ फेश्छ च।
१५० फाण्टाहृतिमिमताभ्यां
णफिञौ।
१५१ कुर्वादिभ्यो ण्यः। १५२
१५२ सेनान्तलक्षणकारिभ्यश्च। १५३
१५३ उदीचामिञ्।
१५४ तिकादिभ्यः फिञ्। १५९
१५५ कौसल्यकार्मार्याभ्यां च।
१५६ अणो द्व्यचः।
१५७ उदीचां वृद्धादगोत्रात्। १५९

१५८ वाकिनादीनां कुक् च। १५९
१५९ पुत्रान्तादन्यतरस्याम्।
१६० प्राचामवृद्धात् फिन् बहुलम्।
१६१ मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च।
१६२ अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्। १६५
१६३ जीवति तु वंश्ये युवा। १६५
१६४ भ्रातरि च ज्यायसि।
१६५ वान्यस्मिन् सपिण्डे स्थविरतरे जीवति।
१६६ जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ्। १७६,१६७
१६७ साल्वेयगान्धारिभ्यां च।
१६८ द्व्यञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण्।
१६९ वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ञ्यङ्।
१७० कुरुनादिभ्यो ण्यः।
१७१ साल्वावयवप्रत्यग्रथकल-कूटाश्मकादिञ्।
१७२ ते तद्राजाः। १७६
१७३ कम्बोजाल्लुक्। १७६
१७४ स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च। १७६
१७५ अतश्च।
१७६ न प्राच्यभर्गादियौधेया-दिभ्यः।

★

द्वितीयः पादः

१ तेन रक्तं रागात्। १२, २
२ लाक्षारोचनाट् ठक्।
३ नक्षत्रेण युक्तः कालः। ६
४ लुबविशेषे। ५
५ संज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम्।
६ द्वन्द्वाच्छः।
७ दृष्टं साम। ८
८ वामदेवाड् ड्यड्ड्यौ।
९ परिवृतो रथः। ११
१० पाण्डुकम्बलादिनिः।
११ द्वैपवैयाघ्रादञ्।
१२ कौमारापूर्ववचने।
१३ तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः। १९
१४ स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते।
१५ संस्कृतं भक्षाः। १९
१६ शूलोखाद् यत्।
१७ दध्नष्ठक्। १८
१८ उदश्वितोऽन्यतरस्याम्।
१९ क्षीराड् ढञ्।
२० सास्मिन् पौर्णमासीति। २२
२१ आग्रहायण्यश्वत्थाट् ठक्। २२
२२ विभाषा फाल्गुनीश्रवणा-कार्त्तिकीचैत्रीभ्यः।
२३ सास्य देवता। ३४
२४ कस्येत्।
२५ शुक्राद् घन्।
२६ अपोनप्त्रपांनप्तृभ्यां घः। २७

२७ छ च। २८
२८ महेन्द्राद् घाणौ च।
२९ सोमाट् ट्यण्।
३० वाय्वृतुपित्रुषसो यत्। ३१
३१ द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत्व-
दग्नीषोमवास्तोष्पतिगृहमेधा-
च्छ च।
३२ अग्नेर्ढक्।
३३ कालेभ्यो भववत्।
३४ महाराजप्रोष्ठपदाट् ठञ्।
३५ पितृव्यमातुलमातामह-
पितामहाः।
३६ तस्य समूहः। ५३, ५०
३७ भिक्षादिभ्योऽण्।
३८ गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्य-
राजपुत्रवत्समनुष्याजाद् वुञ्। ३९
३९ केदाराद् यञ् च।
४० ठञ् कवचिनश्च।
४१ ब्राह्मणमाणववाडवाद् यन्।
४२ ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्।
४३ अनुदात्तादेरञ्। ४४
४४ खण्डिकादिभ्यश्च।
४५ चरणेभ्यो धर्मवत्।
४६ अचित्तहस्तिधेनोष्ठक्।
४७ केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतर-
स्याम्।
४८ पाशादिभ्यो यः। ४९
४९ खलगोरथात्। ५०
५० इनित्रकट्यचश्च।
५१ विषयो देशे। ५३
५२ राजन्यादिभ्यो वुञ्।
५३ भौरिक्याद्यैषुकार्यादिभ्यो
विधल्भक्तलौ।
५४ सोऽस्यादिरितिच्छन्दसः
प्रगाथेषु। ५५
५५ सङ्ग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः।
५६ तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडा-
यां णः।
५७ घञः सास्यां क्रियेति ञः।
५८ तदधीते तद्वेद। ६५
५९ क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट् ठक्।
६० क्रमादिभ्यो वुन्।
६१ अनुब्राह्मणादिनिः।
६२ वसन्तादिभ्यष्ठक्।
६३ प्रोक्ताल्लुक्। ६५, ६४
६४ सूत्राच्च कोपधात्।
६५ छन्दोब्राह्मणानि च तद्विष-
याणि।
६६ तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि। ६९
६७ तेन निर्वृत्तम्।
६८ तस्य निवासः। ६९
६९ अदूरभवश्च।
७० ओरञ्। ७५
७१ मतोश्च बह्वजङ्गात्।

७२ बह्वचः कूपेषु। ७३
७३ उदक् च विपाशः।
७४ सङ्कलादिभ्यश्च।
७५ स्त्रीषु सौवीरसाल्वप्राक्षु।
७६ सुवास्त्वादिभ्योऽण्। ७८
७७ रोणी।
७८ कोपधाच्च।
७९ वुञ्छण्कठजिलसेनिरढञ्यय-
यफक्फिञिञ्ञ्यकक्ठकोऽरी-
हणकृशाश्वर्श्यकुमुदकाशतृण-
प्रेक्षाश्मसखिसङ्काशबलपक्ष-
कर्णसुतङ्गमप्रगदिन्वराहकुमु-
दादिभ्यः।
८० जनपदे लुप्। ८२
८१ वरणादिभ्यश्च।
८२ शर्कराया वा। ८३
८३ ठक्छौ च।
८४ नद्यां मतुप्। ८५
८५ मध्वादिभ्यश्च।
८६ कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप्।
८७ नडशादाड् ड्वलच्।
८८ शिखाया वलच्।
८९ उत्करादिभ्यश्छः। ९०
९० नडादीनां कुक् च।
९१ शेषे। ४.३.१२०
९२ राष्ट्रावारपाराद् घखौ।
९३ ग्रामाद् यखञौ।
९४ कत्र्यादिभ्यो ढकञ्। ९५
९५ कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः
श्वास्यलङ्कारेषु।
९६ नद्यादिभ्यो ढक्।
९७ दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक्।
९८ कापिश्याः ष्फक्। ९९
९९ रङ्कोरमनुष्येऽण् च।
१०० द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत्।
१०१ कन्थायाष्ठक्। १०२
१०२ वर्णौ वुक्।
१०३ अव्ययात् त्यप्। १०४
१०४ ऐषमोह्यःश्वसोऽन्यतरस्याम्।
१०५ तीररूप्योत्तरपदादञ्औ।
१०६ दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः। १०७
१०७ मद्रेभ्योऽञ्। १०८
१०८ उदीच्यग्रामाच्च
बह्वचोऽन्तोदात्तात्।
१०९ प्रस्थोत्तरपदपलद्यादि-
कोपधादण्। ११२
११० कण्वादिभ्यो गोत्रे। ११२
१११ इञश्च। ११२
११२ न द्व्यचः प्राच्यभरतेषु।
११३ वृद्धाच्छः। ११७
११४ भवतष्ठक्छसौ।
११५ काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ। ११७
११६ वाहीकग्रामेभ्यश्च। ११७
११७ विभाषोशीनरेषु।

११८ ओर्देशे ठञ्। ११९,१४४,११९
११९ वृद्धात् प्राचाम्। १२५
१२० धन्वयोपधाद् वुञ्। १२९
१२१ प्रस्थपुरवहान्ताच्च।
१२२ रोपधेतोः प्राचाम्।
१२३ जनपदतदवध्योश्च। १२४
१२४ अवृद्धादपि बहुवचन १२५
विषयात्।
१२५ कच्छाग्निवक्त्रगर्तोत्तरपदात्।
१२६ धूमादिभ्यश्च।
१२७ नगरात् कुत्सनप्रावीण्ययोः।
१२८ अरण्यान् मनुष्ये।
१२९ विभाषा कुरुयुगन्धराभ्याम्।
१३० मद्रवृज्योः कन्।
१३१ कोपधादण्। १३२
१३२ कच्छादिभ्यश्च। १३३
१३३ मनुष्यतत्स्थयोर्वुञ्। १३४,१३५
१३४ अपदातौ साल्वात्। १३५
१३५ गोयवाग्वोश्च।
१३६ गर्तोत्तरपदाच्छः। १४४
१३७ गहादिभ्यश्च।
१३८ प्राचां कटादेः।
१३९ राज्ञः क च।
१४० वृद्धादकेकान्तखोपधात्। १४१
१४१ कन्थापलदनगरग्राम-
ह्रदोत्तरपदात्।
१४२ पर्वताच्च। १४३
१४३ विभाषामनुष्ये।
१४४ कृकणपर्णाद् भारद्वाजे।

★

तृतीयः पादः

१ युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्
च। ३
२ तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ। ३
३ तवकममकावेकवचने।
४ अर्धाद् यत्। ७, ६
५ परावराधमोत्तमपूर्वाच्च।
६ दिक्पूर्वपदाट् ठञ् च। ७
७ ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ।
८ मध्यान् मः। ९
९ अ साम्प्रतिके।
१० द्वीपादनुसमुद्रं यञ्।
११ कालाट् ठञ्। २४, १५
१२ श्राद्धे शरदः। १३
१३ विभाषा रोगातपयोः। १५
१४ निशाप्रदोषाभ्यां च।
१५ श्वसस्तुट् च।
१६ सन्धिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण्।
१७ प्रावृष एण्यः।
१८ वर्षाभ्यष्ठक्। १९
१९ छन्दसि ठञ्। २१, २२
२० वसन्ताच्च।
२१ हेमन्ताच्च। २२
२२ सर्वत्राण् च तलोपश्च।

२३ सायंचिरंप्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च। २४
२४ विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम्।
२५ तत्र जातः। ५१, ३७
२६ प्रावृषष्ठप्।
२७ संज्ञायां शरदो वुञ्। २८
२८ पूर्वाह्णापराह्णार्द्रामूलप्रदोषावस्कराद् वुन्। ३०
२९ पथः पन्थ च।
३० अमावास्याया वा। ३१
३१ अ च।
३२ सिन्ध्वपकराभ्यां कन्। ३३
३३ अणञौ च।
३४ श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वातितिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखाषाढाबहुलाल्लुक्। ३७
३५ स्थानान्तगोशालखरशालाच्च।
३६ वत्सशालाभिजिदश्वयुक्शतभिषजो वा।
३७ नक्षत्रेभ्यो बहुलम्।
३८ कृतलब्धक्रीतकुशलाः।
३९ प्रायभवः। ४०
४० उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक्।
४१ सम्भूते। ४२
४२ कोशाड् ढञ्।
४३ कालात् साधुपुष्यत्पच्यमानेषु। ५२
४४ उप्ते च। ४६
४५ आश्वयुज्या वुञ्। ४६
४६ ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम्।
४७ देयमृणे। ५०
४८ कलाप्यश्वत्थयवबुसाद् वुन्।
४९ गीष्मावरसमाद् वुञ्। ५०
५० संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ् च।
५१ व्याहरति मृगः।
५२ तदस्य सोढम्।
५३ तत्र भवः। ७३
५४ दिगादिभ्यो यत्। ५५
५५ शरीरावयवाच्च।
५६ दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेर्ढञ्। ५७
५७ ग्रीवाभ्योऽण् च।
५८ गम्भीराञ् ञ्यः। ५९
५९ अव्ययीभावाच्च। ६१
६० अन्तःपूर्वपदाट् ठञ्। ६१
६१ ग्रामात् पर्यनुपूर्वात्।
६२ जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः। ६३
६३ वर्गान्ताच्च। ६४
६४ अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम्।
६५ कर्णललाटात् कनलङ्कारे।
६६ तस्य व्याख्यान इति च व्याख्यातव्यनाम्नः। ७३
६७ बह्वचोऽन्तोदात्ताट् ठञ्। ६९

६८ क्रतुयज्ञेभ्यश्च।
६९ अध्यायेष्वेवर्षेः।
७० पौरोडाशपुरोडाशात् ष्ठन्।
७१ छन्दसो यदणौ।
७२ द्व्यजृद्ब्राह्मणर्क्प्रथमाध्वर-
पुरश्चरणनामाख्याताट् ठक्।
७३ अणृगयनादिभ्यः।
७४ तत आगतः। ८४, ८२
७५ ठगायस्थानेभ्यः।
७६ शुण्डिकादिभ्योऽण्।
७७ विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यो वुञ्। ७८
७८ ऋतष्ठञ्। ७९
७९ पितुर्यच्च।
८० गोत्रादङ्कवत्।
८१ हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां ८२
रूप्यः।
८२ मयट् च।
८३ प्रभवति। ८४
८४ विदूराञ्ञ्यः।
८५ तद् गच्छति पथिदूतयोः। ८८
८६ अभिनिष्क्रामति द्वारम्।
८७ अधिकृत्य कृते ग्रन्थे। ८८
८८ शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजन-
नादिभ्यश्छः।
८९ सोऽस्य निवासः। १००
९० अभिजनश्च। ९४
९१ आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते।
९२ शण्डिकादिभ्यो ञ्यः।
९३ सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ।
९४ तूदीशलातुरवर्मतीकूचवाराड्
ढक्छण्ढञ्यकः।
९५ भक्तिः। १००
९६ अचित्ताददेशकालाट् ठक्।
९७ महाराजाट् ठञ्।
९८ वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन्।
९९ गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो बहुलं वुञ्।
१०० जनपदिनां जनपदवत् सर्वं
जनपदेन समानशब्दानां
बहुवचने।
१०१ तेन प्रोक्तम्। १११
१०२ तित्तिरिवरतन्तुखण्डिकोखाच्-
छण्।
१०३ काश्यपकौशिकाभ्यामृषि-
भ्यां णिनिः। १०६
१०४ कलापिवैशम्पायनान्तेवासि-
भ्यश्च।
१०५ पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु।
१०६ शौनकादिभ्यश्छन्दसि। १०९
१०७ कठचरकाल् लुक्।
१०८ कलापिनोऽण्।
१०९ छगलिनो ढिनुक्।
११० पाराशर्यशिलालिभ्यां
भिक्षुनटसूत्रयोः। १११
१११ कर्मन्दकृशाश्वादिनिः।

११२ तेनैकदिक्। ११९, ११४
११३ तसिश्च। ११४
११४ उरसो यच्च।
११५ उपज्ञाते।
११६ कृते ग्रन्थे। ११९
११७ संज्ञायाम्। ११९
११८ कुलालादिभ्यो वुञ्।
११९ क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ्।
१२० तस्येदम्। १३१
१२१ रथाद् यत्। १२२
१२२ पत्रपूर्वादञ्। १२३
१२३ पत्राध्वर्युपरिषदश्च।
१२४ हलसीराट् ठक्।
१२५ द्वन्द्वाद् वुन् वैरमैथुनिकयोः।
१२६ गोत्रचरणाद् वुञ्। १३१
१२७ सङ्घाङ्कलक्षणेष्वञ्ञित्रञामण्। १२८
१२८ शकलाद्वा।
१२९ छन्दोगौक्थिकयाज्ञिकबह्वृचनटाञ्ञ्यः।
१३० न दण्डमाणवान्तेवासिषु।
१३१ रैवतिकादिभ्यश्छः। १६६
१३२ तस्य विकारः। १६६
१३३ अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः। १६६
१३४ बिल्वादिभ्योऽण्। १३६
१३५ कोपधाच्च।
१३६ त्रपुजतुनोः षुक्।
१३७ ओरञ्। १३९
१३८ अनुदात्तादेश्च।
१३९ पलाशादिभ्यो वा।
१४० शम्याष्ट्लञ्।
१४१ मयड् वैतयोर्भाषाया- १४९
मभक्ष्याच्छादनयोः। १४२
१४२ नित्यं वृद्धशरादिभ्यः।
१४३ गोश्च पुरीषे।
१४४ पिष्टाच्च। १४५
१४५ संज्ञायां कन्।
१४६ व्रीहेः पुरोडाशे।
१४७ असंज्ञायां तिलयवाभ्याम्।
१४८ द्व्यचश्छन्दसि। १४९
१४९ नोत्वद्वर्ध्रबिल्वात्।
१५० तालादिभ्योऽण्। १५१
१५१ जातरूपेभ्यः परिमाणे।
१५२ प्राणिरजतादिभ्योऽञ्। १५३
१५३ त्रितश्च तत्प्रत्ययात्।
१५४ क्रीतवत् परिमाणात्।
१५५ उष्ट्राद् वुञ्। १५६
१५६ उमोर्णयोर्वा।
१५७ एण्या ढञ्।
१५८ गोपयसोर्यत्। १५९
१५९ द्रोश्च। १६०
१६० माने वयः।

१६१ फले लुक्। १६५
१६२ प्लक्षादिभ्योऽण्। १६३
१६३ जम्ब्वा वा। १६४
१६४ लुप् च। १६५
१६५ हरीतक्यादिभ्यश्च।
१६६ कंसीयपरशव्ययोर्यञञौ लुक् च।

★

चतुर्थः पादः

१ प्राग्वहतेष्ठक्। ७४
२ तेन दीव्यति खनति जयति जितम्। २७
३ संस्कृतम्। ४
४ कुलत्थकोपधादण्।
५ तरति। ७
६ गोपुच्छाट् ठञ्।
७ नौद्व्यचष्ठन्।
८ चरति। ११
९ आकर्षात् ष्ठल्।
१० पर्पादिभ्यः ष्ठन्। ११
११ श्वगणाट् ठञ् च।
१२ वेतनादिभ्यो जीवति। १४
१३ वस्नक्रयविक्रयाट् ठन्। १४
१४ आयुधाच्छ च।
१५ हरत्युत्सङ्गादिभ्यः। १८
१६ भस्त्रादिभ्यः ष्ठन्। १८
१७ विभाषा विवधात्।
१८ अण् कुटिलिकायाः।
१९ निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः। २१
२० क्त्रेर्मम्नित्यम्।
२१ अपमित्ययाचिताभ्यां कक्कनौ।
२२ संसृष्टे। २५
२३ चूर्णादिनिः।
२४ लवणाल्लुक्।
२५ मुद्गादण्।
२६ व्यञ्जनैरुपसिक्ते।
२७ ओजःसहोऽम्भसा वर्तते। २९
२८ तत्प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम्। ४६
२९ परिमुखं च।
३० प्रयच्छति गर्ह्यम्। ३१
३१ कुसीददशैकादशात् ष्ठन्ष्ठचौ।
३२ उञ्छति।
३३ रक्षति।
३४ शब्ददर्दुरं करोति।
३५ पक्षिमत्स्यमृगान् हन्ति। ३६
३६ परिपन्थं च तिष्ठति।
३७ माथोत्तरपदपदव्यनुपदं धावति। ३८
३८ आक्रन्दाट् ठञ् च।
३९ पदोत्तरपदं गृह्णाति। ४०
४० प्रतिकण्ठार्थललामं च।
४१ धर्मं चरति।
४२ प्रतिपथमेति ठंश्च।
४३ समवायान् समवैति। ४५

४४ परिषदो ण्यः। ४५
४५ सेनाया वा।
४६ संज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ पश्यति।
४७ तस्य धर्म्यम्। ५०, ४९
४८ अण् महिष्यादिभ्यः।
४९ ऋतोऽञ्।
५० अवक्रयः।
५१ तदस्य पण्यम्। ६५, ५४
५२ लवणाट् ठञ्।
५३ किशरादिभ्यः ष्ठन्। ५४
५४ शलालुनोऽन्यतरस्याम्।
५५ शिल्पम्। ५६
५६ मड्डुकझर्झरादणन्यतरस्याम्।
५७ प्रहरणम्। ५९
५८ परश्वधाट् ठञ् च।
५९ शक्तियष्ट्योरीकक्।
६० अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः।
६१ शीलम्। ६२
६२ छत्रादिभ्यो णः।
६३ कर्माध्ययने वृत्तम्। ६४
६४ बह्वच्पूर्वपदाट् ठच्।
६५ हितं भक्षाः।
६६ तदस्मै दीयते नियुक्तम्। ६८
६७ श्राणामांसौदनाट् टिठन्।
६८ भक्तादणन्यतरस्याम्।
६९ तत्र नियुक्तः। ७४, ७०
७० अगारान्ताट् ठन्।
७१ अध्यायिन्यदेशकालात्।
७२ कठिनान्तप्रस्तारसंस्थानेषु व्यवहरति।
७३ निकटे वसति। ७४
७४ आवसथात् ष्ठल्।
७५ प्राग्घिताद् यत्।
७६ तद् वहति रथयुग- ८६
प्रासङ्गम्। ८२
७७ धुरो यड्ढकौ।
७८ खः सर्वधुरात्। ७९
७९ एकधुराल्लुक् च।
८० शकटादण्।
८१ हलसीराट् ठक्।
८२ संज्ञायां जन्याः।
८३ विध्यत्यधुनषा।
८४ धनगणं लब्धा। ८५
८५ अन्नाण् णः।
८६ वशं गतः।
८७ पदमस्मिन् दृश्यम्।
८८ मूलमस्याबर्हि।
८९ संज्ञायां धेनुष्या। ९०
९० गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः।
९१ नौवयोधर्मविषमूलमूलसीता-तुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्या-नाम्यसमसमितसम्मितेषु।
९२ धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते।
९३ छन्दसो निर्मिते। ९४

९४ उरसोऽण् च।
९५ हृदयस्य प्रियः। ९६
९६ बन्धने चर्षौ।
९७ मतजनहलात् करणजल्पकर्षेषु।
९८ तत्र साधुः। ११९, १०६
९९ प्रतिजनादिभ्यः खञ्।
१०० भक्ताण् णः।
१०१ परिषदो ण्यः।
१०२ कथादिभ्यष्ठक्।
१०३ गुडादिभ्यष्ठञ्।
१०४ पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ्।
१०५ सभाया यः। १०६
१०६ ढश्छन्दसि।
१०७ समानतीर्थे वासी।
१०८ समानोदरे शयित ओ चोदात्तः। १०९
१०९ सोदराद् यः।
११० भवे छन्दसि। ११८, १४४
१११ पाथोनदीभ्यां ड्यण्।
११२ वेशन्तहिमवद्भ्यामण्।
११३ स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ।
११४ सगर्भसयूथसनुताद् यन्।
११५ तुग्राद् घन्।
११६ अग्राद् यत्। ११७
११७ घच्छौ च।
११८ समुद्राभ्राद् घः।
११९ बर्हिषि दत्तम्।
१२० दूतस्य भागकर्मणी।
१२१ रक्षोयातूनां हननी।
१२२ रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये।
१२३ असुरस्य स्वम्। १२४
१२४ मायायामण्।
१२५ तद्वानासामुपधानोमन्त्र इतीष्टकासु लुक् च मतोः। १२७
१२६ अश्विमानण्।
१२७ वयस्यासु मूर्ध्नो मतुप्।
१२८ मत्वर्थे मासतन्वोः। १३२, १२९
१२९ मधोर्ञ च।
१३० ओजसोऽहनि यत्खौ।
१३१ वेशोयशआदेर्भगाद् यल्। १३२
१३२ ख च। १३३
१३३ पूर्वैः कृतमिनयौ च।
१३४ अद्भिः संस्कृतम्।
१३५ सहस्रेण सम्मितौ घः। १३६
१३६ मतौ च।
१३७ सोममर्हति यः। १३८
१३८ मये च। १४०
१३९ मधोः।
१४० वसोः समूहे च।
१४१ नक्षत्राद् घः।
१४२ सर्वदेवात् तातिल्। १४४
१४३ शिवशमरिष्टस्य करे। १४४
१४४ भावे च।

★

पञ्चमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ प्राक् क्रीताच्छः। १७
२ उगवादिभ्यो यत्। ४
३ कम्बलाच्च संज्ञायाम्।
४ विभाषा हविरपूपादिभ्यः।
५ तस्मै हितम्। १५
६ शरीरावयवाद् यत्। ७
७ खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च।
८ अजाविभ्यां थ्यन्।
९ आत्मन्विश्वजनभोगोत्तर-
पदात् खः।
१० सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ।
११ माणवचरकाभ्यां खञ्।
१२ तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ। १५
१३ छदिरुपधिबलेर्ढञ्।
१४ ऋषभोपानहोर्व्यः।
१५ चर्मणोऽञ्।
१६ तदस्य तदस्मिन् स्यादिति। १७
१७ परिखाया ढञ्।
१८ प्राग्वतेष्ठञ्। ११३
१९ आर्हादगोपुच्छसङ्ख्यापरिमा-
णाट् ठक्। ७०
२० असमासे निष्कादिभ्यः।
२१ शताच्च ठन्यतावशते।
२२ सङ्ख्याया अतिशदन्तायाः
कन्। २३
२३ वतोरिड् वा।
२४ विंशतित्रिंशद्भ्यां ड्वुन्न-
संज्ञायाम्।
२५ कंसाट् टिठन्।
२६ शूर्पादञन्यतरस्याम्।
२७ शतमानविंशतिकसहस्रवस-
नादण्।
२८ अध्यर्धपूर्वद्विगोर्लुग- ३५
संज्ञायाम्। ३१
२९ विभाषा कार्षापणसहस्रा-
भ्याम्। ३१
३० द्वित्रिपूर्वान्निष्कात्। ३१
३१ बिस्ताच्च।
३२ विंशतिकात् खः।
३३ खार्या ईकन्।
३४ पणपादमाषशताद् यत्। ३५
३५ शाणाद् वा।
३६ तेन क्रीतम्।
३७ तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ। ४०
३८ गोद्व्यचोऽसङ्ख्यापरिमाणा-
श्वादेर्यत्। ३९
३९ पुत्राच्छ च।
४०. सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ। ४२

४१ तस्येश्वरः।
४२ तत्र विदित इति च। ४३
४३ लोकसर्वलोकाट् ठञ्।
४४ तस्य वापः। ४५
४५ पात्रात् ष्ठन्।
४६ तदस्मिन् वृद्ध्यायलाभ-शुल्कोपदा दीयते। ४८
४७ पूरणार्धाट् ठन्। ४८
४८ भागाद् यच्च।
४९ तद्धरति वहत्यावहति ५४
भाराद् वंशादिभ्यः। ५०
५० वस्नद्रव्याभ्यां ठन्कनौ।
५१ सम्भवत्यवहरति पचति। ५४
५२ आढकाचितपात्रात् खोऽन्यतरस्याम्। ५३
५३ द्विगोः ष्ठंश्च। ५४
५४ कुलिजाल् लुक्खौ च।
५५ सोऽस्यांशवस्नभृतयः।
५६ तदस्य परिमाणम्। ६१
५७ संख्यायाः संज्ञासङ्घसूत्राध्ययनेषु।
५८ पङ्क्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशतम्।
५९ पञ्चद्दशतौ वर्गे वा। ६०
६० सप्तनोऽञ् छन्दसि।
६१ त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे संज्ञायां डण्।
६२ तदर्हति। ७५, ७०
६३ छेदादिभ्यो नित्यम्। ६४
६४ शीर्षच्छेदाद् यच्च। ६९
६५ दण्डादिभ्यो यत्।
६६ छन्दसि च।
६७ पात्राद् घंश्च।
६८ कडङ्करदक्षिणाच्छ च। ६९
६९ स्थालीबिलात्।
७० यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ।
७१ पारायणतुरायणचान्द्रायणं वर्तयति।
७२ संशयमापन्नः।
७३ योजनं गच्छति। ७६
७४ पथः ष्कन्। ७५
७५ पन्थो ण नित्यम्।
७६ उत्तरपथेनाहृतं च।
७७ कालात्। ९५
७८ तेन निर्वृत्तम्।
७९ तमधीष्टो भृतो भूतो भावी। ९१
८० मासाद् वयसि यत्खञौ। ८१, ८२
८१ द्विगोर्यप्। ८२
८२ षण्मासाण् ण्यच्च। ८३
८३ अवयसि ठंश्च।
८४ समायाः खः। ८५, ८८
८५ द्विगोर्वा। ८९, ८८

८६ रात्र्यहःसंवत्सराच्च।
८७ वर्षाल्लुक् च। ८८
८८ चित्तवति नित्यम्।
८९ षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते।
९० वत्सरान्ताच्छश्छन्दसि। ९१
९१ सम्परिपूर्वात् ख च।
९२ तेन परिजय्यलभ्यकार्य-सुकरम्।
९३ तदस्य ब्रह्मचर्यम्।
९४ तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः।
९५ तत्र च दीयते कार्यं भववत्। ९६
९६ व्युष्टादिभ्योऽण्।
९७ तेन यथाकथाचहस्ताभ्यां णयतौ। ९९
९८ सम्पादिनि। ९९
९९ कर्मवेषाद् यत्।
१०० तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः। १०२
१०१ योगाद् यच्च।
१०२ कर्मण उकञ्।
१०३ समयस्तदस्य प्राप्तम्। ११३, १०६
१०४ ऋतोरण्। १०५
१०५ छन्दसि घस्।
१०६ कालाद् यत्। १०७
१०७ प्रकृष्टे ठञ्।
१०८ प्रयोजनम्। ११३
१०९ विशाखाषाढादण् मन्थदण्डयोः।
११० अनुप्रवचनादिभ्यश्छः। १११
१११ समापनात् सपूर्वपदात्।
११२ ऐकागारिकट् चौरे।
११३ आकालिकडाद्यन्तवचने।
११४ तेन तुल्यं क्रिया चेद् वतिः। ११७
११५ तत्र तस्येव।
११६ तदर्हम्।
११७ उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे।
११८ तस्य भावस्त्वतलौ। १३५
११९ आ च त्वात्।
१२० न नञ्पूर्वात् तत्पुरुषादचतुर-सङ्गतलवणवटयुधकतरस-लसेभ्यः।
१२१ पृथ्वादिभ्य इमनिज् वा। १२२
१२२ वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् च। १२३
१२३ गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च। १३५
१२४ स्तेनाद् यन् नलोपश्च।
१२५ सख्युर्यः।
१२६ कपिज्ञात्योर्ढक्।
१२७ पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्।
१२८ प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्-गात्रादिभ्योऽञ्।
१२९ हायनान्तयुवादिभ्योऽण्। १३०
१३० इगन्ताच्च लघुपूर्वात्।
१३१ योपधाद् गुरूपोत्तमाद् वुञ्। १३३
१३२ द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च।

१३३ गोत्रचरणाच्छ्लाघात्याकारतदवेतेषु।
१३४ होत्राभ्यश्छः। १३५
१३५ ब्रह्मणस्त्वः।

★

द्वितीयः पादः

१ धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ्। ४
२ व्रीहिशाल्योर्ढक्।
३ यवयवकषष्टिकाद् यत्। ४
४ विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यः।
५ सर्वचर्मणः कृतः खखञौ।
६ यथामुखसंमुखस्य दर्शनः खः। १५
७ तत्सर्वादेः पथ्यङ्गकर्मपत्रपात्रं व्याप्नोति। १७
८ आप्रपदं प्राप्नोति।
९ अनुपदसर्वान्नायानयं बद्धाभक्षयतिनेयेषु।
१० परोवरपरम्परपुत्रपौत्रमनुभवति।
११ अवारपारात्यन्तानुकामं गामी।
१२ समांसमां विजायते। १३
१३ अद्यश्वीनावष्टब्धे।
१४ आगवीनः।
१५ अनुग्वलंगामी। १७
१६ अध्वनो यत्खौ। १७
१७ अभ्यमित्राच्छ च।
१८ गोष्ठात् खञ् भूतपूर्वे। २३
१९ अश्वस्यैकाहगमः।
२० शालीनकौपीने अधृष्टाकार्ययोः।
२१ व्रातेन जीवति।
२२ साप्तपदीनं सख्यम्।
२३ हैयङ्गवीनं संज्ञायाम्।
२४ तस्य पाकमूले पील्वादि- २५
कर्णादिभ्यः कुणब्जाहचौ।
२५ पक्षात् तिः।
२६ तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ।
२७ विनञ्भ्यां नानाञौ न सह।
२८ वेः शालच्छङ्कटचौ। २९
२९ सम्प्रोदश्च कटच्। ३०
३० अवात् कुटारच्च। ३१
३१ नते नासिकायाः संज्ञायां ३३, ३४
टीटञ्नाटञ्भ्रटचः।
३२ नेर्बिडज्बिरीसचौ। ३३
३३ इनच्पिटच्चिकचि च।
३४ उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः।
३५ कर्मणि घटोऽठच्।
३६ तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य ४४
इतच्।
३७ प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः। ३८
३८ पुरुषहस्तिभ्यामण् च।
३९ यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्। ४१

४० किमिदम्भ्यां वो घः। ४१
४१ किमः सङ्ख्यापरिमाणे डति च।
४२ सङ्ख्याया अवयवे तयप्।
४३ द्वित्रिभ्यां तयस्यायज् वा। ४४
४४ उभादुदात्तो नित्यम्।
४५ तदस्मिन्नधिकमिति दशा- ४६
न्ताड् डः।
४६ शदन्तविंशतेश्च।
४७ सङ्ख्याया गुणस्य निमाने ५८
मयट्।
४८ तस्य पूरणे डट्। ५८, ५३
४९ नान्तादसङ्ख्यादेर्मट्। ५०
५० थट् च छन्दसि।
५१ षट्कतिकतिपयचतुरां थुक्।
५२ बहुपूगगणसङ्घस्य तिथुक्।
५३ वतोरिथुक्।
५४ द्वेस्तीयः। ५५
५५ त्रेः सम्प्रसारणं च।
५६ विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतर- ५८
स्याम्।
५७ नित्यं शतादिमासार्धमास- ५८
संवत्सराच्च।
५८ षष्ट्यादेश्चासङ्ख्यादेः।
५९ मतौ छः सूक्तसाम्नोः। ६२, ६०
६० अध्यायानुवाकयोर्लुक्। ६२
६१ विमुक्तादिभ्योऽण्।
६२ गोषदादिभ्यो वुन्। ६३
६३ तत्र कुशलः पथः। ६७, ६४
६४ आकर्षादिभ्यः कन्। ८२
६५ धनहिरण्यात् कामे।
६६ स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते। ६७
६७ उदराट् ठगाद्यूने।
६८ सस्येन परिजातः।
६९ अंशं हारी।
७० तन्त्रादचिरापहृते।
७१ ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायाम्।
७२ शीतोष्णाभ्यां कारिणि।
७३ अधिकम्।
७४ अनुकाभिकाभीकः कमिता।
७५ पार्श्वेनान्विच्छति। ७६
७६ अयःशूलदण्डाजिनाभ्यां
ठक्ठञौ।
७७ तावतिथं ग्रहणमिति लुग् वा।
७८ स एषां ग्रामणीः।
७९ शृङ्खलमस्य बन्धनं करभे।
८० उत्क उन्मनाः।
८१ कालप्रयोजनाद् रोगे।
८२ तदस्मिन्नन्नं प्राये संज्ञायाम्। ८३
८३ कुल्माषादञ्।
८४ श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते।
८५ श्राद्धमनेन भुक्तमिनिठनौ। ८८
८६ पूर्वादिनिः। ८७, ९१
८७ सपूर्वाच्च।
८८ इष्टादिभ्यश्च।

८९ छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि।
९० अनुपद्यन्वेष्टा।
९१ साक्षात् द्रष्टरि संज्ञायाम्।
९२ क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः।
९३ इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा।
९४ तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्। १४०,९५
९५ रसादिभ्यश्च।
९६ प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम्। १४० ९९
९७ सिध्मादिभ्यश्च।
९८ वत्सांसाभ्यां कामबले।
९९ फेनादिलच्च।
१०० लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः।
१०१ प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः।
१०२ तपः सहस्राभ्यां विनीनी। १०३
१०३ अण् च। १०५
१०४ सिकताशर्कराभ्यां च। १०५
१०५ देशे लुबिलचौ च।
१०६ दन्त उन्नत उरच्।
१०७ ऊषसुषिमुष्कमधो रः।
१०८ द्युद्भुभ्यां मः।
१०९ केशाद् वोऽन्यतरस्याम्। ११०
११० गाण्ड्यजगात् संज्ञायाम्।
१११ काण्डाण्डादीरन्नीरचौ।
११२ रजः कृष्यासुतिपरिषदो वलच्। ११३
११३ दन्तशिखात् संज्ञायाम्।
११४ ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्जस्विन्नूर्जस्वलगोमिन्मलिनमलीमसाः।
११५ अत इनिठनौ। ११७
११६ व्रीह्यादिभ्यश्च।
११७ तुन्दादिभ्य इलच्च।
११८ एकगोपूर्वाट् ठञ् नित्यम्। ११९
११९ शतसहस्रान्ताच्च निष्कात्।
१२० रूपादाहतप्रशंसयोर्यप्।
१२१ अस्मायामेधास्रजो विनिः। १२२
१२२ बहुलं छन्दसि।
१२३ ऊर्णाया युस्।
१२४ वाचो ग्मिनिः। १२५
१२५ आलजाटचौ बहुभाषिणि।
१२६ स्वामिन्नैश्वर्ये।
१२७ अर्शआदिभ्योऽच्।
१२८ द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात् प्राणिस्थादिनिः। १३५
१२९ वातातीसाराभ्यां कुक् च।
१३० वयसि पूरणात्।
१३१ सुखादिभ्यश्च।
१३२ धर्मशीलवर्णान्ताच्च।
१३३ हस्ताज्जातौ।
१३४ वर्णाद् ब्रह्मचारिणि।

१३५ पुष्करादिभ्यो देशे।
१३६ बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम्।
१३७ संज्ञायां मन्माभ्याम्।
१३८ कंशम्भ्यां बभयुस्तितुतयसः।
१३९ तुन्दिबलिवटेर्भः।
१४० अहंशुभमोर्युस्।

★

तृतीयः पादः

१ प्राग् दिशो विभक्तिः। २६
२ किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः।
३ इदम इश्। ४
४ एतेतौ रथोः।
५ एतदोऽन्।
६ सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि।
७ पञ्चम्यास्तसिल्। ९
८ तसेश्च।
९ पर्यभिभ्यां च।
१० सप्तम्यास्त्रल्। २२
११ इदमो हः।
१२ किमोऽत्। १३
१३ वा ह च च्छन्दसि।
१४ इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते।
१५ सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा। २२
१६ इदमो र्हिल्। १८
१७ अधुना।
१८ दानीं च। १९
१९ तदो दा च।
२० तयोर्दार्हिलौ चच्छन्दसि।
२१ अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम्।
२२ सद्यःपरुत्परार्यैषमः परेद्यव्यद्य-
पूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्यु-
रपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरेद्युः।
२३ प्रकारवचने थाल्। २६
२४ इदमस्थमुः। २५
२५ किमश्च। २६
२६ था हेतौ चच्छन्दसि।
२७ दिक्शब्देभ्यः सप्तमीपञ्चमी-
प्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्व-
स्तातिः। ४१
२८ दक्षिणोत्ताराभ्यामतसुच्। २९
२९ विभाषा परावराभ्याम्।
३० अञ्चेर्लुक्।
३१ उपर्युपरिष्टात्।
३२ पश्चात्। ३३
३३ पश्च पश्चा चच्छन्दसि।
३४ उत्तराधरदक्षिणादातिः। ३५
३५ एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः। ३८
३६ दक्षिणादाच्। ३७, ३८
३७ आहि च दूरे। ३८
३८ उत्तराच्च।
३९. पूर्वाधरावराणामसि
पुरधवश्चैषाम्। ४०

४० अस्तादि च। ४१
४१ विभाषावरस्य।
४२ सङ्ख्याया विधार्थे धा। ४३
४३ अधिकरणविचाले च।
४४ एकाद्धो ध्यमुञन्यतरस्याम्। ४६
४५ द्वित्र्योश्च धमुञ्। ४६
४६ एधाच्च।
४७ याप्ये पाशप्।
४८ पूरणाद् भागे तीयादन्। ४९,५१,५०
४९ प्रागेकादशभ्योऽच्छन्दसि। ५०
५० षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च। ५१
५१ मानपश्वङ्गयोः कन्लुकौ च। ५२
५२ एकादाकिनिच्चासहाये।
५३ भूतपूर्वे चरट्। ५४
५४ षष्ठ्या रूप्य च।
५५ अतिशायने तमबिष्ठनौ। ५७, ५६
५६ तिङश्च। ९५
५७ द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ।
५८ अजादी गुणवचनादेव। ६५
५९ तुश्छन्दसि।
६० प्रशस्यस्य श्रः। ६१
६१ ज्य च। ६२
६२ वृद्धस्य च।
६३ अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ।
६४ युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम्।
६५ विन्मतोर्लुक्।
६६ प्रशंसायां रूपप्।
६७ ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः। ६८
६८ विभाषा सुपो बहुच् पुरस्तात्तु। ७१
६९ प्रकारवचने जातीयर्।
७० प्रागिवात् कः। ९६
७१ अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः। ९५
७२ कस्य च दः।
७३ अज्ञाते।
७४ कुत्सिते। ७५
७५ संज्ञायां कन्।
७६ अनुकम्पायाम्। ८२
७७ नीतौ च तद्युक्तात्। ८१
७८ बह्वचो मनुष्यनाम्नष्- ठञ् वा। ८०, ८४ ८०
७९ घनिलचौ च। ८०
८० प्राचामुपादेरडज्वुचौ च।
८१ जातिनाम्नः कन्। ८२
८२ अजिनान्तस्योत्तरपदलोपश्च। ८४
८३ ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः। ८४
८४ शेवलसुपरिविशालवरुणार्यमादीनां तृतीयात्।
८५ अल्पे।
८६ ह्रस्वे। ९०
८७ संज्ञायां कन्।
८८ कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः।
८९ कुत्वा डुपच्।
९० कासूगोणीभ्यां ष्टरच्। ९१

९१ वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे।
९२ किंयत्तदो निर्धारणे ९३
द्वयोरेकस्य डतरच्। ९४
९३ वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने
डतमच्। ९४
९४ एकाच्च प्राचाम्।
९५ अवक्षेपणे कन्। १००
९६ इवे प्रतिकृतौ। १११, १००
९७ संज्ञायां च। १००
९८ लुम्मनुष्ये।
९९ जीविकार्थे चापण्ये।
१०० देवपथादिभ्यश्च।
१०१ वस्तेर्ढञ्।
१०२ शिलाया ढः।
१०३ शाखादिभ्यो यत्। १०४
१०४ द्रव्यं च भव्ये।
१०५ कुशाग्राच्छः। १०६
१०६ समासाच्च तद्विषयात्।
१०७ शर्करादिभ्योऽण्।
१०८ अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक्।
१०९ एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम्।
११० कर्कलोहितादीकक्।
१११ प्रत्नपूर्वविश्वेमात्थाल्छन्दसि।
११२ पूगाञ्ञ्योऽग्रामणीपूर्वात्। ११३
११३ व्रातच्फञोरस्त्रियाम्।
११४ आयुधजीविसङ्घाञ्ञ्यड् ११७
वाहीकेष्वब्राह्मणराजन्यात्।
११५ वृकाट् टेण्यण्।
११६ दामन्यादिव्रिगर्तषष्ठाच्छः।
११७ पश्वादियौधेयादिभ्यो-
ऽणञौ।
११८ अभिजिद्विदभृच्छालावच्-
छखावच्छमीवदूर्णावच्-
छुमदणो यञ्।
११९ ञ्यादयस्तद्राजाः।

★

चतुर्थः पादः

१ पादशतस्य सङ्ख्यादेर्वीप्सायां
वुन् लोपश्च। २
२ दण्डव्यवसर्गयोश्च।
३ स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन्। ६
४ अनत्यन्तगतौ क्तात्। ५
५ न सामिवचने।
६ बृहत्या आच्छादने।
७ अषडक्षाशितंग्वलंकर्मालं-
पुरुषाध्युत्तरपदात् खः। ८
८ विभाषाञ्चेरदिक्स्त्रियाम्।
९ जात्यन्ताच्छ बन्धुनि। १०
१० स्थानान्ताद् विभाषा
सस्थानेनेति चेत्।
११ किमेत्तिङव्ययघादाम्वद्रव्य-
प्रकर्षे। १२
१२ अमु चच्छन्दसि।
१३ अनुगादिनष्ठक्।

१४ णचः स्त्रियामञ्।
१५ अणिनुणः। १६
१६ विसारिणो मत्स्ये।
१७ सङ्ख्याया: क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच्। २०
१८ द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्। १९
१९ एकस्य सकृच्च।
२० विभाषा बहोर्धाविप्रकृष्टकाले।
२१ तत्प्रकृतवचने मयट्। २२
२२ समूहवच्च बहुषु।
२३ अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ञ्यः।
२४ देवतान्तात्तादर्थ्ये यत्। २६, २५
२५ पादार्घाभ्यां च।
२६ अतिथेर्ञ्यः।
२७ देवात्तल्।
२८ अवेः कः।
२९ यावादिभ्यः कन्। ३३
३० लोहितान् मणौ। ३२
३१ वर्णे चानित्ये।
३२ रक्ते। ३३
३३ कालाच्च।
३४ विनयादिभ्यष्ठक्। ३५
३५ वाचो व्याहृतार्थायाम्। ३६
३६ तद्युक्तात् कर्मणोऽण्। ३८
३७ ओषधेरजातौ।
३८ प्रज्ञादिभ्यश्च।
३९ मृदस्तिकन्। ४०
४० सस्नौ प्रशंसायाम्। ४१
४१ वृकज्येष्ठाभ्यां तिल्तातिलौ चच्छन्दसि।
४२ बह्वल्पार्थाच्छस्कारका- ४३ दन्यतरस्याम्। ४९
४३ सङ्ख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम्।
४४ प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः। ४५, ४९
४५ अपादाने चाहीयरुहोः।
४६ अतिग्रहाव्यथनक्षेपेष्वकर्तरि तृतीयायाः। ४७
४७ हीयमानपापयोगाच्च।
४८ षष्ठ्या व्याश्रये। ४९
४९ रोगाच्चापनयने।
५० कृभ्वस्तियोगे सम्पद्यकर्तरि ५७, ५२ च्विः। ५१
५१ अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां लोपश्च।
५२ विभाषा साति कात्स्न्र्ये। ५३, ५५
५३ अभिविधौ सम्पदा च। ५५
५४ तदधीनवचने। ५५
५५ देये त्रा च। ५६
५६ देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम्।
५७ अव्यक्तानुकरणाद् द्व्यजवरार्धादनितौ डाच्। ६७
५८ कृञो द्वितीयतृतीयशम्ब- ६७ बीजात् कृषौ। ५९

५९ सङ्ख्यायाश्च गुणान्तायाः।
६० समयाच्च यापनायाम्।
६१ सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने।
६२ निष्कुलान्निष्कोषणे।
६३ सुखप्रियादानुलोम्ये।
६४ दुःखात् प्रातिलोम्ये।
६५ शूलात् पाके।
६६ सत्यादशपथे।
६७ मद्रात् परिवापणे।
६८ समासान्ताः। १६०
६९ न पूजनात्। ७२
७० किमः क्षेपे।
७१ नञस्तत्पुरुषात्। ७२
७२ पथो विभाषा।
७३ बहुव्रीहौ सङ्ख्येये डजबहुगणात्।
७४ ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे।
७५ अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् साम- ८७
लोम्नः।
७६ अक्ष्णोऽदर्शनात्।
७७ अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वनडुहर्क्सामवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवोर्वष्ठीवपदष्ठीवनक्तंदिवरात्रिंदिवाहर्दिवसरजसनिश्श्रेयसपुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजातोक्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः।
७८ ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः।
७९ अवसमन्धेभ्यस्तमसः।
८० श्वसो वसीयःश्रेयसः।
८१ अन्ववतप्ताद्रहसः।
८२ प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात्।
८३ अनुगवमायामे।
८४ द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः।
८५ उपसर्गादध्वनः।
८६ तत्पुरुषस्याङ्गुलेः १०५
सङ्ख्याव्ययादेः। ८८
८७ अहः सर्वैकदेशसङ्ख्यातपुण्याच्च रात्रेः।
८८ अह्नोऽह्न एतेभ्यः। ९०
८९ न सङ्ख्यादेः समाहारे। ९०
९० उत्तमैकाभ्यां च।
९१ राजाहःसखिभ्यष्टच्। ११२
९२ गोरतद्धितलुकि।
९३ अग्राख्यायामुरसः।
९४ अनोश्मायःसरसां जातिसंज्ञयोः।
९५ ग्रामकौटाभ्यां च तक्ष्णः।
९६ अतेः शुनः। ९७
९७ उपमानादप्राणिषु। ९८
९८ उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः।
९९ नावो द्विगोः। १००, १०१
१०० अर्धाच्च। १०१
१०१ खार्याः प्राचाम्।

१०२ द्वित्रिभ्यामञ्जलेः।
१०३ अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि।
१०४ ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम्। १०५
१०५ कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम्।
१०६ द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे।
१०७ अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः। ११२
१०८ अनश्च। १०९
१०९ नपुंसकादन्यतरस्याम्। ११२
११० नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः।
१११ झयः।
११२ गिरेश्च सेनकस्य।
११३ बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः १६० स्वाङ्गात् षच्। ११४
११४ अङ्गुलेर्दारुणि।
११५ द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः।
११६ अप् पूरणीप्रमाण्योः। ११७
११७ अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः।
११८ अत् नासिकायाः संज्ञायां १२१ नसं चास्थूलात्। ११९
११९ उपसर्गाच्च।
१२० सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्ष-चतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठ-पदाः।
१२१ नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्यो- १२२ रन्यतरस्याम्।
१२२ नित्यमसिच् प्रजामेधयोः। १२३
१२३ बहुप्रजाश्छन्दसि।
१२४ धर्मादनिच् केवलात्। १२६
१२५ जम्भा सुहरिततृणसोमेभ्यः।
१२६ दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे।
१२७ इच् कर्मव्यतिहारे। १२८
१२८ द्विदण्ड्यादिभ्यश्च।
१२९ प्रसम्भ्यां जानुनोर्ज्ञुः। १३०
१३० ऊर्ध्वाद् विभाषा।
१३१ ऊधसोऽनङ्। १३३
१३२ धनुषश्च। १३३
१३३ वा संज्ञायाम्।
१३४ जायाया निङ्।
१३५ गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः। १३७
१३६ अल्पाख्यायाम्।
१३७ उपमानाच्च। १३८
१३८ पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः। १४०
१३९ कुम्भपदीषु च।
१४० सङ्ख्यासुपूर्वस्य। १४१
१४१ वयसि दन्तस्य दत्। १४५
१४२ छन्दसि च।
१४३ स्त्रियां संज्ञायाम्।
१४४ विभाषा श्यावारोकाभ्याम्। १४५
१४५ अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृष-वराहेभ्यश्च।
१४६ ककुदस्यावस्थायां लोपः। १४९
१४७ त्रिककुत् पर्वते।
१४८ उद्विभ्यां काकुदस्य। १४९
१४९ पूर्णाद् विभाषा।
१५० सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः।

१५१ उरःप्रभृतिभ्यः कप्। १६०
१५२ इनः स्त्रियाम्।
१५३ नद्यृतश्च।
१५४ शेषाद् विभाषा।
१५५ न संज्ञायाम्। १६०
१५६ ईयसश्च।
१५७ वन्दिते भ्रातुः।
१५८ ऋतश्छन्दसि।
१५९ नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे।
१६० निष्प्रवाणिश्च।

षष्ठोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ एकाचो द्वे प्रथमस्य। ११
२ अजादेर्द्वितीयस्य। ११
३ न न्द्राः संयोगादयः।
४ पूर्वोऽभ्यासः।
५ उभे अभ्यस्तम्। ६
६ जक्षित्यादयः षट्।
७ तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य।
८ लिटि धातोरनभ्यासस्य। ११
९ सन्यङोः।
१० श्लौ।
११ चङि।
१२ दाश्वान् साह्वान् मीढ्वांश्च।
१३ ष्यङः सम्प्रसारणं १४, ३१
पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे।
१४ बन्धुनि बहुव्रीहौ।
१५ वचिस्वपियजादीनां किति। १६
१६ ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचति-
वृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां
ङिति च।
१७ लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्।
१८ स्वापेश्चङि।
१९ स्वपिस्यमिव्येञां यङि। २१
२० न वशः।
२१ चायः की।
२२ स्फायः स्फी निष्ठायाम्। २८
२३ स्त्यः प्रपूर्वस्य।
२४ द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः। २६
२५ प्रतेश्च।
२६ विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य। २८
२७ शृतं पाके।
२८ प्यायः पी। २९
२९ लिड्यङोश्च। ३०
३० विभाषा श्वेः। ३१
३१ णौ च संश्चङोः। ३२
३२ ह्वः सम्प्रसारणमभ्यस्तस्य च। ३३, ३५

३३ बहुलं छन्दसि। ३४, ३५
३४ चायः की।
३५ अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषे तित्याज श्राताः श्रितमाशीराशीर्ताः।
३६ न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम्। ४३
३७ लिटि वयो यः। ३९, ३८
३८ वश्चास्यान्यतरस्यां किति।
३९ वेञः। ४०
४० ल्यपि च। ४३
४१ ज्यश्च।
४२ व्यश्च। ४३
४३ विभाषा परेः।
४४ आदेच उपदेशेऽशिति। ५६, ६३
४५ न व्यो लिटि।
४६ स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि।
४७ क्रीङ्जीनां णौ। ४८
४८ सिध्यतेरपारलौकिके।
४९ मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च। ५०
५० विभाषा लीयतेः। ५५
५१ खिदेश्छन्दसि।
५२ अपगुरो णमुलि।
५३ चिस्फुरोर्णौ। ५६
५४ प्रजने वीयतेः।
५५ बिभेतेर्हेतुभये। ५६
५६ नित्यं स्मयतेः।
५७ सृजिदृशोर्झल्यमकिति। ५८
५८ अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम्।
५९ शीर्षश्छन्दसि। ६०
६० ये च तद्धिते।
६१ पद्दन्नोमास्हन्निशसन्यूषन्दोषन्न्यकञ्छकन्नुदन्नासञ्छस्प्रभृतिषु।
६२ धात्वादेः षः सः। ६३
६३ णो नः।
६४ लोपो व्योर्वलि। ६८
६५ वेरपृक्तस्य।
६६ हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्। ६७
६७ एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः।
६८ शेश्छन्दसि बहुलम्।
६९ ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्। ७१, ७३
७० संहितायाम्। १५१
७१ छे च। ७३
७२ आङ्माङोश्च।
७३ दीर्घात् पदान्ताद् वा।
७४ इको यणचि। १२०
७५ एचोऽयवायावः। ७७
७६ वान्तो यि प्रत्यये। ७७, ८०

७७ धातोस्तन्निमित्तस्यैव। ८०
७८ क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे।
७९ क्रय्यस्तदर्थे।
८० भय्यप्रवय्ये चच्छन्दसि।
८१ एकः पूर्वपरयोः। १०७
८२ अन्तादिवच्च।
८३ षत्वतुकोरसिद्धः।
८४ आद् गुणः। ९३
८५ वृद्धिरेचि। ८९, ८६
८६ एत्येधत्यूठ्सु।
८७ आटश्च।
८८ उपसर्गादृति धातौ।
८९ वा सुप्यापिशलेः।
९० औतोऽम्शसोः।
९१ एङि पररूपम्। ९६
९२ ओमाङोश्च।
९३ उस्यपदान्तात्। ९४
९४ अतो गुणे।
९५ अव्यक्तानुकरणस्यात इतौ। ९६
९६ नाम्रेडितस्यान्त्यस्य तु वा।
९७ अकः सवर्णे दीर्घः। १०३, १०२
९८ प्रथमयोः पूर्वसवर्णः। १०२
९९ तस्माच्छसो नः पुंसि।
१०० नादिचि। १०१, १०२
१०१ दीर्घाज्जसि च। १०२
१०२ वा छन्दसि।
१०३ अमि पूर्वः। १०६
१०४ सम्प्रसारणाच्च।
१०५ एङः पदान्तादति। ११८
१०६ ङसिङसोश्च। १०८
१०७ ऋत उत्। ११०
१०८ ख्यत्यात् परस्य।
१०९ अतो रोरप्लुतादप्लुते। ११०
११० हशि च।
१११ प्रकृत्यान्तःपादम्। १२६, ११२
११२ अव्यादवद्यादवक्रमुरव्रताय-मवन्त्ववस्युषु च।
११३ यजुष्युरः। ११७
११४ आपोजुषाणोवृष्णोवर्षिष्ठे अम्बेअम्बालेअम्बिकेपूर्वे।
११५ अङ्ग इत्यादौ च।
११६ अनुदात्ते च कुधपरे। ११७
११७ अवपथासि च।
११८ सर्वत्र विभाषा गोः। ११९, १२०
११९ अवङ् स्फोटायनस्य। १२०
१२० इन्द्रे च।
१२१ प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्। १२६
१२२ आङोऽनुनासिकश्छन्दसि बहुलम्।
१२३ इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च। १२४
१२४ ऋत्यकः
१२५ अप्लुतवदुपस्थिते। १२६

१२६ ईश्३ चाक्रवर्मणस्य।
१२७ दिव उत्।
१२८ एतत्तदोः सुलोपोऽको- १३० रनञ्समासे हलि। १२९
१२९ स्यश्छन्दसि बहुलम्।
१३० सोऽचि लोपे चेत् पाद- पूरणम्।
१३१ सुट् कात् पूर्वः। १५१
१३२ सम्परिभ्यां करोतौ १३३, १३४ भूषणे।
१३३ समवाये च।
१३४ उपात् प्रतियत्नवैकृत- १३६ वाक्याध्याहारेषु।
१३५ किरतौ लवने। १३६
१३६ हिंसायां प्रतेश्च।
१३७ अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्- वालेखने।
१३८ कुस्तुम्बुरूणि जातिः।
१३९ अपरस्पराः क्रियासातत्ये।
१४० गोष्पदं सेवितासेवित- प्रमाणेषु।
१४१ आस्पदं प्रतिष्ठायाम्।
१४२ आश्चर्यमनित्ये।
१४३ वर्चस्केऽवस्करः।
१४४ अपस्करो रथाङ्गम्।
१४५ विष्किरः शकुनौ वा।
१४६ ह्रस्वाच् चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे।
१४७ प्रतिष्कशश्च कशेः।
१४८ प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी।
१४९ मस्करमस्करिणौ वेणु- परिव्राजकयोः।
१५० कास्तीराजस्तुन्दे नगरे।
१५१ पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम्।
१५२ अनुदात्तं पदमेकवर्जम्।
१५३ कर्षात्वतो घञोऽन्त १६१ उदात्तः। २१७
१५४ उञ्छादीनां च।
१५५ अनुदात्तस्य च यत्रोदात्त- लोपः।
१५६ धातोः।
१५७ चितः। १५८
१५८ तद्धितस्य। १५९
१५९ कितः।
१६० तिसृभ्यो जसः।
१६१ चतुरः शसि।
१६२ सावेकाचस्तृतीयादि- १६३ र्विभक्तिः। १७८
१६३ अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यत- रस्यामनित्यसमासे। १७१
१६४ अञ्चेश्छन्दस्यसर्वनामस्था- नम्। १६९
१६५ ऊडिदम्पदाद्यप्पुम्रैद्युभ्यः।
१६६ अष्टनो दीर्घात्।
१६७ शतुरनुमो नद्यजादी। १६९
१६८ उदात्तयणो हल्पूर्वात्। १६९
१६९ नोङ्धात्वोः।
१७० ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप्। १७१

१७१ नामन्यतरस्याम्। १७२
१७२ ङ्याश्छन्दसि बहुलम्।
१७३ षट्त्रिचतुर्भ्यो हलादिः। १७५
१७४ झल्युपोत्तमम्। १७५
१७५ विभाषा भाषायाम्।
१७६ न गोश्वन्साववर्ण- १७८
राडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः।
१७७ दिवो झल्। १७८
१७८ नृ चान्यतरस्याम्।
१७९ तित् स्वरितम्।
१८० तास्यनुदात्तेन्ङिददुपदेशाल्-
लसार्वधातुकमनुदात्त- १८६
महिव्वडेः।
१८१ आदिः सिचोऽन्यतरस्याम्। १८२
१८२ स्वपादिहिंसामच्यनिटि। १८३
१८३ अभ्यस्तानामादिः। १८६, १८५
१८४ अनुदात्ते च।
१८५ सर्वस्य सुपि।
१८६ भीह्रीभृहुमदजनधनदरिद्रा-
जागरां प्रत्ययात् पूर्वं पिति। १८७
१८७ लिति।
१८८ आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम्। १९०
१८९ अचः कर्तृयकि।
१९० थलि च सेटीडन्तो वा।
१९१ ञ्नित्यादिर्नित्यम्। २१०
१९२ आमन्त्रितस्य च।
१९३ पथिमथोः सर्वनामस्थाने।
१९४ अन्तश्च तवै युगपत्।
१९५ क्षयो निवासे।
१९६ जयः करणम्।
१९७ वृषादीनां च।
१९८ संज्ञायामुपमानम्। १९९
१९९ निष्ठा च द्व्यजनात्।
२०० शुष्कधृष्टौ।
२०१ आशितः कर्ता।
२०२ रिक्ते विभाषा। २०३
२०३ जुष्टार्पिते चच्छन्दसि। २०४
२०४ नित्यं मन्त्रे।
२०५ युष्मदस्मदोर्ङसि। २०६
२०६ ङयि च।
२०७ यतोऽनावः।
२०८ ईडवन्दवृशंसदुहां ण्यतः।
२०९ विभाषा वेण्विन्धानयोः। २१०
२१० त्यागरागहासकुहश्वठक्रथा-
नाम्।
२११ उपोत्तमं रिति। २१२
२१२ चङ्यन्यतरस्याम्।
२१३ मतोः पूर्वमात् संज्ञायां
स्त्रियाम्। २१५
२१४ अन्तोऽवत्याः। २१७
२१५ ईवत्याः।
२१६ चौ।
२१७ समासस्य।

★

द्वितीयः पादः

१ बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम्। ६३,१०९
२ तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्त- २४
म्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः।
३ वर्णो वर्णेष्वनेते।
४ गाधलवणयोः प्रमाणे।
५ दायाद्यं दायादे।
६ प्रतिबन्धि चिरकृच्छ्रयोः।
७ पदेऽपदेशे।
८ निवाते वातत्राणे।
९ शारदेऽनार्तवे।
१० अध्वर्युकषाययोर्जातौ।
११ सदृशप्रतिरूपयोः सादृश्ये।
१२ द्विगौ प्रमाणे।
१३ गन्तव्यपण्यं वाणिजे।
१४ मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये
नपुंसके।
१५ सुखप्रिययोर्हिते। १६
१६ प्रीतौ च।
१७ स्वं स्वामिनि।
१८ पत्यावैश्वर्ये। २०
१९ न भूवाक्चिद्दिधिषु।
२० वा भुवनम्।
२१ आशङ्काबाधनेदीयःसु
सम्भावने।
२२ पूर्वे भूतपूर्वे।
२३ सविधसनीडसमर्यादसवेश-
सदेशेषु सामीप्ये।
२४ विस्पष्टादीनि गुण-
वचनेषु।
२५ श्रज्यावमकन्पापवत्सु भावे
कर्मधारये। २८
२६ कुमारश्च। २८
२७ आदिः प्रत्येनसि। २८
२८ पूगेष्वन्यतरस्याम्।
२९ इगन्तकालकपाल- ३०
भगालशरावेषु द्विगौ। ३१
३० बह्वन्यतरस्याम्। ३१
३१ दिष्टिवितस्त्योश्च।
३२ सप्तमी सिद्धशुष्कपक्व-
बन्धेष्वकालात्।
३३ परिप्रत्युपापा वर्ज्यमानाहो-
रात्रावयवेषु।
३४ राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धक-
वृष्णिषु। ३७
३५ सङ्ख्या।
३६ आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासी।
३७ कार्तकौजपादयश्च।
३८ महान् व्रीह्यपराह्णगृष्टीष्वास- ३९
जाबालभारभारतहैलिहिल-
रौरवप्रवृद्धेषु।
३९ क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे।
४० उष्ट्रः सादिवाम्योः।
४१ गौः सादसादिसारथिषु।
४२ कुरुगार्हपत रिक्तगुर्वसूतजर-

त्यश्लीलदृढरूपा पारेवडवा तैतिलकद्रूःपण्यकम्बलो दासीभाराणां च।

४३ चतुर्थी तदर्थे। ४५

४४ अर्थे।

४५ क्ते च। ४९

४६ कर्मधारयेऽनिष्ठा।

४७ अहीने द्वितीया।

४८ तृतीया कर्मणि। ४९

४९ गतिरनन्तरः। ५२, ५१

५० तादौ च निति कृत्यतौ।

५१ तवै चान्तश्च युगपत्।

५२ अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये। ५३

५३ न्यधी च।

५४ ईषदन्यतरस्याम्। ६३

५५ हिरण्यपरिमाणं धने।

५६ प्रथमोऽचिरोपसम्पत्तौ।

५७ कतरकतमौ कर्मधारये। ५९

५८ आर्यो ब्राह्मणकुमारयोः। ५९

५९ राजा च। ६०

६० षष्ठी प्रत्येनसि।

६१ क्ते नित्यार्थे।

६२ ग्रामः शिल्पिनि। ६३

६३ राजा च प्रशंसायाम्।

६४ आदिरुदात्तः। ११, ११८

६५ सप्तमीहारिणौ धर्म्येऽहरणे।

६६ युक्ते च।

६७ विभाषाध्यक्षे। ६८

६८ पापं च शिल्पिनि।

६९ गोत्रान्तेवासिमाणवब्राह्मणेषु क्षेपे।

७० अङ्गानि मैरेये।

७१ भक्ताख्यास्तदर्थेषु।

७२ गोबिडालसिंहसैन्धवेषूपमाने।

७३ अके जीविकार्थे। ७४

७४ प्राचां क्रीडायाम्।

७५ अणि नियुक्ते। ७७

७६ शिल्पिनि चाकृञः। ७७

७७ संज्ञायां च।

७८ गोतन्तियवं पाले।

७९ णिनि। ८०

८० उपमानं शब्दार्थप्रकृतावेव।

८१ युक्तारोह्यादयश्च।

८२ दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्रवटं जे। ८३

८३ अन्त्यात् पूर्वं बह्वचः।

८४ ग्रामेऽनिवसन्तः।

८५ घोषादिषु च।

८६ छात्र्यादयः शालायाम्।

८७ प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्यादीनाम्। ८८

८८ मालादीनां च।

८९ अमहन्नवं नगरेऽनुदीचाम्। ९०

९० अर्मे चावर्णं द्व्यच् त्र्यच्। ९१

९१ न भूताधिकसञ्जीवमद्राश्मकज्जलम्।

९२ अन्तः। १०९
९३ सर्वं गुणकात्स्न्र्ये।
९४ संज्ञायां गिरिनिकाययोः।
९५ कुमार्यां वयसि।
९६ उदकेऽकेवले।
९७ द्विगौ क्रतौ।
९८ सभायां नपुंसके।
९९ पुरे प्राचाम्। १०१
१०० अरिष्टगौडपूर्वे च।
१०१ न हास्तिनफलकमार्देयाः।
१०२ कुसूलकूपकुम्भशालं बिले।
१०३ दिक्शब्दा ग्रामजनपदाख्या-
नचानराटेषु। १०५
१०४ आचार्योपसर्जनश्चान्ते-
वासिनि।
१०५ उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च।
१०६ बहुव्रीहौ विश्वं ११९
संज्ञायाम्। १०८
१०७ उदराश्वेषुषु क्षेपे। १०८
१०८ नदी बन्धुनि।
१०९ निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतर-
स्याम्।
११० उत्तरपदादिः। १९९, १४२
१११ कर्णो वर्णलक्षणात्। ११३
११२ संज्ञौपम्ययोश्च। ११४
११३ कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घं च।
११४ शृङ्गमवस्थायां च।
११५ नञो जरमरमित्रमृताः।
११६ सोर्मनसी अलोमोषसी। ११९
११७ क्रत्वादयश्च।
११८ आद्युदात्तं द्व्यच् छन्दसि। १२०
११९ वीरवीर्यौ च।
१२० कूलतीरतूलमूलशालाक्ष-
सममव्ययीभावे।
१२१ कंसमन्थशूर्पपाय्यकाण्डं
द्विगौ।
१२२ तत्पुरुषे शालायां १३६
नपुंसके। १२४
१२३ कन्था च। १२४
१२४ आदिश्चिहणादीनाम्।
१२५ चेलखेटकटुककाण्डं गर्हायाम्।
१२६ चीरमुपमानम्।
१२७ पललसूपशाकं मिश्रे।
१२८ कूलसूदस्थलकर्षाः संज्ञा-
याम्।
१२९ अकर्मधारये राज्यम्। १३०
१३० वर्ग्यादयश्च।
१३१ पुत्रः पुम्भ्यः। १३२
१३२ नाचार्यराजर्त्विक्संयुक्त-
ज्ञात्याख्येभ्यः।
१३३ चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः। १३४
१३४ षट् च काण्डादीनि।
१३५ कुण्डं वनम्।
१३६ प्रकृत्या भगालम्। १४१
१३७ शितेर्नित्याबह्वज् बहुव्रीहा-
वभसत्।

१३८ गतिकारकोपपदात् कृत्।
१३९ उभे वनस्पत्यादिषु युगपत्। १४१
१४० देवताद्वन्द्वे च। १४१
१४१ नोत्तरपदेऽनुदात्तादा-
वपृथिवीरुद्रपूषमन्थिषु।
१४२ अन्तः। १९८
१४३ थाथघञ्क्ताजबित्रकाणाम्।
१४४ सूपमानात् क्तः। १४८
१४५ संज्ञायामनाचितादीनाम्। १४७
१४६ प्रवृद्धादीनां च।
१४७ कारकाद्दत्तश्रुतयोरेवाशिषि। १५०
१४८ इत्थम्भूतेन कृतमिति च।
१४९ अनो भावकर्मवचनः।
१५० मन्क्तिन्व्याख्यानशयनासन-
स्थानयाजकादिक्रीताः।
१५१ सप्तम्याः पुण्यम्।
१५२ ऊनार्थकलहं तृतीयायाः। १५३
१५३ मिश्रं चानुपसर्गमसन्धौ।
१५४ नञो गुणप्रतिषेधे सम्पाद्यर्ह- १६०
हितालमर्थास्तद्धिताः। १५७
१५५ ययतोश्चातदर्थे।
१५६ अच्कावशक्तौ। १५७
१५७ आक्रोशे च। १५८
१५८ संज्ञायाम्।
१५९ कृत्योकेष्णुच्चार्वादयश्च।
१६० विभाषा तृन्नन्नतीक्ष्ण-
शुचिषु।
१६१ बहुव्रीहाविदमेतत्तद्भ्यः १७६
प्रथमपूरणयोः क्रियागणने।
१६२ सङ्ख्यायाः स्तनः। १६३
१६३ विभाषा छन्दसि।
१६४ संज्ञायां मित्राजिनयोः।
१६५ व्यवायिनोऽन्तरम्।
१६६ मुखं स्वाङ्गम्। १६८
१६७ नाव्ययदिक्शब्दगोमहत्स्थूल-
मुष्टिपृथुवत्सेभ्यः।
१६८ निष्ठोपमानादन्यतरस्याम्।
१६९ जातिकालसुखादिभ्योऽना- १७०
च्छादनात् क्तोऽकृतमित-
प्रतिपन्नाः।
१७० वा जाते।
१७१ नञ्सुभ्याम्। १७३
१७२ कपि पूर्वम्। १७३
१७३ ह्रस्वान्तेऽन्त्यात् पूर्वम्।
१७४ बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि। १७५
१७५ न गुणादयोऽवयवाः।
१७६ उपसर्गात् स्वाङ्गं ध्रुवमपर्शु। १९४
१७७ वनं समासे। १७८
१७८ अन्तः।
१७९ अन्तश्च। १८०
१८० न निविभ्याम्।
१८१ परेरभितोभावि मण्डलम्।
१८२ प्रादस्वाङ्गं संज्ञायाम्।
१८३ निरुदकादीनि च।

१८४ अभेर्मुखम्। १८५
१८५ अपाच्च। १८६
१८६ स्फिगपूतवीणाञ्जोऽध्वकुक्षि-
सीरनामनाम च।
१८७ अधेरुपरिस्थम्।
१८८ अनोरप्रधानकनीयसी। १८९
१८९ पुरुषश्चान्वादिष्टः।
१९० अतेरकृत्पदे।
१९१ नेरनिधाने।
१९२ प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे। १९५
१९३ उपाद् द्यजजिनमगौरादयः।
१९४ सोरवक्षेपणे।
१९५ विभाषोत्पुच्छे। १९७
१९६ द्वित्रिभ्यां पाद्दन्मूर्धसु बहुव्रीहौ। १९७
१९७ सक्थं चाक्रान्तात्। १९८
१९८ परादिश्छन्दसि बहुलम्।

★

तृतीयः पादः

१ अलुगुत्तरपदे। २३, ३८
२ पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः।
३ ओजःसहोऽम्भस्तमसस्-
तृतीयायाः। ६
४ मनसः संज्ञायाम्। ५
५ आज्ञायिनि च।
६ आत्मनश्च। ७
७ वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः
परस्य च।
८ हलन्दन्तात् सप्तम्याः १२, १९
संज्ञायाम्।
९ कारनाम्नि च प्राचां हलादौ।
१० मध्याद् गुरौ।
११ अमूर्धमस्तकात् स्वाङ्गादकामे।
१२ बन्धे च विभाषा।
१३ तत्पुरुषे कृति बहुलम्।
१४ प्रावृट्शरत्कालदिवां जे। १५
१५ विभाषा वर्षक्षरशरवरात्। १७
१६ घकालतनेषु कालनाम्नः।
१७ शयवासवासिष्वकालात्।
१८ नेन्सिद्धबध्नातिषु च। १९
१९ स्थे च भाषायाम्।
२० षष्ठ्या आक्रोशे। २३, २१
२१ पुत्रेऽन्यतरस्याम्।
२२ ऋतो विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यः।
२३, २४
२३ विभाषा स्वसृपत्योः।
२४ आनङ् ऋतो द्वन्द्वे। २५
२५ देवताद्वन्द्वे च। ३०
२६ ईदग्नेः सोमवरुणयोः। २७
२७ इद् वृद्धौ।
२८ दिवो द्यावा। २९
२९ दिवसश्च पृथिव्याम्।
३० उषासोषसः।
३१ मातरपितरावुदीचाम्।
३२ पितरामातरा चच्छन्दसि।
३३ स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्

समानाधिकरणे स्त्रियाम-
पूरणीप्रियादिषु। ४१,४०,४२,४१
३४ तसिलादिष्वाकृत्वसुचः।
३५ क्यङ्मानिनोश्च।
३६ न कोपधायाः। ४०
३७ संज्ञापूरण्योश्च।
३८ वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धित-
स्यारक्तविकारे।
३९ स्वाङ्गाच्चेतः।
४० जातेश्च।
४१ पुंवत् कर्मधारयजातीय-
देशीयेषु।
४२ घरूपकल्पचेलड्ब्रुवगोत्रमत-
हतेषु ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः। ४४
४३ नद्याः शेषस्यान्यतरस्याम्। ४४
४४ उगितश्च।
४५ आन्महतः समानाधिकरण-
जातीययोः। ४६
४६ द्व्यष्टनः सङ्ख्यायामबहुव्रीह्य-
शीत्योः। ४८
४७ त्रेस्त्रयः। ४८
४८ विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ
सर्वेषाम्।
४९ हृदयस्य हृल्लेखयदण्लासेषु। ५०
५० वा शोकष्यञ्रोगेषु।
५१ पादस्य पदाज्यातिगोपहतेषु। ५५
५२ पद्यत्यतदर्थे। ५५
५३ हिमकाषिहतिषु च।
५४ ऋचः शे।
५५ वा घोषमिश्रशब्देषु।
५६ उदकस्योदः संज्ञायाम्। ५९
५७ पेषंवासवाहनधिषु च।
५८ एकहलादौ पूरयितव्येऽन्य-
तरस्याम्। ६०
५९ मन्थौदनसक्तुबिन्दुवज्रभार-
हारवीवधगाहेषु च।
६० इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य। ६५
६१ एक तद्धिते च।
६२ ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम्। ६३
६३ त्वे च।
६४ इष्टकेषीकामालानां चिततूल-
भारिषु।
६५ खित्यनव्ययस्य। ६७, ६६
६६ अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्। ७१
६७ इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च।
६८ वाचंयमपुरन्दरौ च।
६९ कारे सत्यागदस्य।
७० श्येनतिलस्य पाते ञे।
७१ रात्रेः कृति विभाषा।
७२ नलोपो नञः। ७६
७३ तस्मान्नुडचि।
७४ नभ्राण्नपान्नवेदानासत्यानमु-
चिनकुलनखनपुंसकनक्षत्रनक्र-
नाकेषु प्रकृत्या। ७६

७५ एकादिश्चैकस्य चादुक्।
७६ नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम्।
७७ सहस्य सः संज्ञायाम्। ८२, ८८
७८ ग्रन्थान्ताधिके च।
७९ द्वितीये चानुपाख्ये।
८० अव्ययीभावे चाकाले।
८१ वोपसर्जनस्य।
८२ प्रकृत्याशिषि।
८३ समानस्य छन्दस्यमूर्ध-
प्रभृत्युदर्केषु। ८८
८४ ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनाम-
गोत्ररूपस्थानवर्णवयोवचन-
बन्धुषु।
८५ चरणे ब्रह्मचारिणि।
८६ तीर्थे ये। ८७
८७ विभाषोदरे।
८८ दृग्दृशवतुषु। ९०
८९ इदंकिमोरीश्की।
९० आ सर्वनाम्नः। ९१
९१ विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्यतौ
वप्रत्यये। ९४
९२ समः समि।
९३ तिरसस्तिर्यलोपे।
९४ सहस्य सध्रिः। ९५
९५ सध मादस्थयोश्छन्दसि।
९६ द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत्। ९७
९७ ऊदनोर्देशे।
९८ अषष्ठ्यतृतीयास्थस्यान्यस्य ९९
दुगाशीराशास्थास्थितोत्सुको-
तिकारकरागच्छेषु।
९९ अर्थे विभाषा।
१०० कोः कत्तत्पुरुषेऽचि। १०७, १०२
१०१ रथवदयोश्च।
१०२ तृणे च जातौ।
१०३ का पथ्यक्षयोः। १०७
१०४ ईषदर्थे।
१०५ विभाषा पुरुषे। १०७
१०६ कवं चोष्णे। १०७
१०७ पथि चच्छन्दसि।
१०८ पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्।
१०९ सङ्ख्याविसायपूर्वस्या-
ह्नस्याहनन्यतरस्यां ङौ।
११० ह्वलोपे पूर्वस्य १११, ११२
दीर्घोऽणः। ४.१८, ४.२
१११ सहिवहोरोदवर्णस्य।
११२ साढ्यै साढ्वा साढेति निगमे।
११३ संहितायाम्। १३८
११४ कर्णे लक्षणस्याविष्टाष्ट-
पञ्चमणिभिन्नच्छिन्नच्छिद्र-
स्रुवस्वस्तिकस्य।
११५ नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहि-
तनिषु क्वौ।
११६ वनगिर्योः संज्ञायां ११९
कोटरकिंशुलुकादीनाम्।
११७ वले।

११८ मतौ बह्वचोऽनजि- रादीनाम्। ११९
११९ शरादीनां च।
१२० इको वहेऽपीलोः।
१२१ उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम्। १२३
१२२ इकः काशे। १२३
१२३ दस्ति।
१२४ अष्टनः संज्ञायाम्। १२५
१२५ छन्दसि च।
१२६ चितेः कपि।
१२७ विश्वस्य वसुराटोः। १२९
१२८ नरे संज्ञायाम्।
१२९ मित्रे चर्षौ।
१३० मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रिय- विश्वदेव्यस्य मतौ। १३१
१३१ ओषधेश्च विभक्तावप्रथमा- याम्।
१३२ ऋचि तुनुघमक्षुतङ्- कुत्रोरुष्याणाम्। १३५
१३३ इकः सुञि।
१३४ द्व्यचोऽतस्तिङः।
१३५ निपातस्य च।
१३६ अन्येषामपि दृश्यते।
१३७ चौ।
१३८ सम्प्रसारणस्य। ४.२

★

चतुर्थः पाठः

१ अङ्गस्य। ७.४.९७
२ हलः।
३ नामि। ७
४ न तिसृचतसृ। ५
५ छन्दस्युभयथा। ६
६ नृ च।
७ नोपधायाः। १०, १८
८ सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ। ११, १४
९ वा षपूर्वस्य निगमे।
१० सान्तमहतः संयोगस्य।
११ अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृ- क्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तॄणाम्।
१२ इन्हन्पूषार्यम्णां शौ। १३
१३ सौ च। १४
१४ अत्वसन्तस्य चाधातोः।
१५ अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति। २१ १९
१६ अज्झनगमां सनि। १७
१७ तनोतेर्विभाषा। १८
१८ क्रमश्च क्त्वि।
१९ च्छ्वोः शूडनुनासिके च। २१, २०, २१
२० ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधा- याश्च।
२१ राल्लोपः।
२२ असिद्धवदत्राभात्।
२३ श्नान्नलोपः। ३३

२४ अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति। ३४
२५ दंशसञ्जस्वञ्जां शपि। २६
२६ रञ्जेश्च। २७
२७ घञि च भावकरणयोः। २९
२८ स्यदो जवे।
२९ अवोदैधौद्म्प्रश्रथहिमश्रथाः।
३० नाञ्चेः पूजायाम्। ३२
३१ क्त्वि स्कन्दिस्यन्दोः। ३२
३२ जान्तनशां विभाषा। ३३
३३ भञ्जेश्च चिणि।
३४ शास इदङ्हलोः। ३५
३५ शा हौ। ३६
३६ हन्तेर्जः।
३७ अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिक लोपो झलि क्ङिति। ३९, ४०
३८ वा ल्यपि।
३९ न क्तिचि दीर्घश्च।
४० गमः क्वौ।
४१ विड्वनोरनुनासिकस्यात्। ४५
४२ जनसनखनां सञ्झलोः। ४३
४३ ये विभाषा। ४४
४४ तनोतेर्यकि।
४५ सनः क्तिचि लोपश्चास्यान्यतरस्याम्।
४६ आर्धधातुके।
४७ भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम्।
४८ अतो लोपः। ५४
४९ यस्य हलः। ५०
५० क्यस्य विभाषा।
५१ णेरनिटि। ५७
५२ निष्ठायां सेटि।
५३ जनिता मन्त्रे।
५४ शमिता यज्ञे।
५५ अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु। ५७
५६ ल्यपि लघुपूर्वात्। ५९
५७ विभाषापः।
५८ युप्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि।
५९ क्षियः। ६१
६० निष्ठायामण्यदर्थे। ६१
६१ वाक्रोशदैन्ययोः।
६२ स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च।
६३ दीङो युडचि क्ङिति। ६४, ६८
६४ आतो लोप इटि च। ६८
६५ ईद्यति। ६६
६६ घुमास्थागापाजहातिसां हलि। ६९
६७ एर्लिङि। ६८
६८ वान्यस्य संयोगादेः।
६९ न ल्यपि। ७०
७० मयतेरिदन्यतरस्याम्।

७१ लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः। ७५
७२ आडजादीनाम्। ७५
७३ छन्दस्यपि दृश्यते।
७४ न माङ्योगे। ७५
७५ बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि। ७६
७६ इरयो रे।
७७ अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ। १०० ७८, ८०
७८ अभ्यासस्यासवर्णे।
७९ स्त्रिया:। ८०
८० वाम्शसोः।
८१ इणो यण्। ८७
८२ एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य। ८७
८३ ओः सुपि। ८५
८४ वर्षाभ्वश्च।
८५ न भूसुधियोः। ८६
८६ छन्दस्युभयथा।
८७ हुश्नुवोः सार्वधातुके।
८८ भुवो वुग् लुङ्लिटोः।
८९ ऊदुपधाया गोहः। ९१, १००
९० दोषो णौ। ९१, ९४
९१ वा चित्तविरागे।
९२ मितां ह्रस्वः। ९३
९३ चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम्।
९४ खचि ह्रस्वः। ९७
९५ ह्लादो निष्ठायाम्।
९६ छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य। ९७
९७ इस्मन्नन्क्विषु च।
९८ गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि। १०० १२६
९९ तनिपत्योश्छन्दसि। १००
१०० घसिभसोर्हलि च। १०१
१०१ हुझल्भ्यो हेर्धिः। १०३
१०२ श्रुशृणुपॄकृवृभ्यश्छन्दसि। १०३
१०३ अङितश्च।
१०४ चिणो लुक्। १०६
१०५ अतो हेः। १०६
१०६ उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्। ११० १०७
१०७ लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः। १०९ १०८
१०८ नित्यं करोतेः। १०९, ११०
१०९ ये च।
११० अत उत् सार्वधातुके। ११८
१११ श्नसोरल्लोपः। ११२
११२ श्नाभ्यस्तयोरातः। ११३, ११४
११३ ई हल्यघोः। ११६
११४ इद् दरिद्रस्य। ११६
११५ भियोऽन्यतरस्याम्। ११७
११६ जहातेश्च। ११८
११७ आ च हौ।
११८ लोपो यि।
११९ ध्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च। १२६
१२० अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि। १२६, १२१ १२६

१२१ थलि च सेटि। १२६
१२२ तृफलभजत्रपश्च।
१२३ राधो हिंसायाम्।
१२४ वा जृभ्रमुत्रसाम्। १२५
१२५ फणां च सप्तानाम्।
१२६ न शसददवादिगुणानाम्।
१२७ अर्वणस्त्रसावनञः। १२८
१२८ मघवा बहुलम्।
१२९ भस्य।
१३० पादः पत्।
१३१ वसोः सम्प्रसारणम्। १३३
१३२ वाह ऊठ्।
१३३ श्वयुवमघोनामतद्धिते।
१३४ अल्लोपोऽनः। १३८, १४५, १३७
१३५ षपूर्वहन्धृतराज्ञामणि।
१३६ विभाषा ङिश्योः।
१३७ न संयोगाद्वमन्तात्।
१३८ अचः। १३९
१३९ उद ईत्।
१४० आतो धातोः।
१४१ मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः।
१४२ ति विंशतेर्डिति। १४३
१४३ टेः। १४५
१४४ नस्तद्धिते। १४९
१४५ अह्नष्टखोरेव।
१४६ ओर्गुणः। १४७
१४७ ढे लोपोऽकद्र्वाः। १५६
१४८ यस्येति च। १५०
१४९ सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां यउपधायाः। १५२, १५०
१५० हलस्तद्धितस्य। १५२
१५१ आपत्यस्य च १५२
तद्धितेऽनाति। १५३
१५२ क्यच्व्योश्च।
१५३ बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक्।
१५४ तुरिष्ठेमेयःसु। १६३
१५५ टेः।
१५६ स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः।
१५७ प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरु-वृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थ-स्फवर्बंहिगर्वर्षिव्रब्ध्राघिवृन्दाः।
१५८ बहोर्लोपो भू च बहोः। १५९
१५९ इष्ठस्य यिट् च।
१६० ज्यादादीयसः।
१६१ र ऋतो हलादेर्लघोः। १६२
१६२ विभाषर्जोश्छन्दसि।
१६३ प्रकृत्यैकाच्। १७०
१६४ इनण्यनपत्ये। १६६, १७१
१६५ गाथिविदथिकेशिगणि-पणिनश्च।
१६६ संयोगादिश्च।
१६७ अन्। १७०
१६८ ये चाभावकर्मणोः।
१६९ आत्माध्वानौ खे।

१७० न मपूर्वोऽपत्येवर्मणः। १७१
१७१ ब्राह्मोऽजातौ।
१७२ कार्मस्ताच्छील्ये।
१७३ औक्षमनपत्ये।
१७४ दाण्डिनायनहास्तिनायना-
वर्णिकजैह्माशिनेयवाशि-
नायनिभ्रौणहत्यधैवत्यसार-
वैक्ष्वाकमैत्रेयहिरण्मयानि।
१७५ ऋत्व्यवास्त्व्यवास्त्वमाध्वी-
थहिरण्मयानिच्छन्दसि।

सप्तमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ युवोरनाकौ।
२ आयनेयीनीयियः फढखछघां
प्रत्ययादीनाम्। ५
३ झोऽन्तः। ८
४ अदभ्यस्तात्। ८
५ आत्मनेपदेष्वनतः।
६ शीङो रुट्। ८
७ वेत्तेर्विभाषा।
८ बहुलं छन्दसि।
९ अतो भिस ऐस्। १७, ११
१० बहुलं छन्दसि।
११ नेदमदसोरकोः।
१२ टाङसिङसामिनात्स्याः।
१३ ङेर्यः। १४
१४ सर्वनाम्नः स्मै। १७
१५ ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ। १६
१६ पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा।
१७ जसः शी। १९
१८ औङ आपः। १९
१९ नपुंसकाच्च। २०
२० जश्शसोः शिः। २२
२१ अष्टाभ्य औश्।
२२ षड्भ्यो लुक्। २३
२३ स्वमोर्नपुंसकात्। २६, २४
२४ अतोऽम्।
२५ अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः। २६
२६ नेतराच्छन्दसि।
२७ युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश्। ३३
२८ ङेप्रथमयोरम्।
२९ शसो न।
३० भ्यसो भ्यम्। ३१
३१ पञ्चम्या अत्। ३२
३२ एकवचनस्य च।
३३ साम आकम्।
३४ आत औ णलः।
३५ तुह्योस्तातङाशिष्यन्यतर-
स्याम्।

३६ विदेः शतुर्वसुः।
३७ समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्। ३८
३८ क्त्वापिच्छन्दसि। ५०
३९ सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेया-
डाड्यायाजालः।
४० अमो मश्।
४१ लोपस्त आत्मनेपदेषु।
४२ ध्वमो ध्वात्।
४३ यजध्वैनमिति च।
४४ तस्य तात्। ४५
४५ तप्तनप्तनथनाश्च।
४६ इदन्तो मसि।
४७ क्त्वो यक्।
४८ इष्ट्वीनमिति च।
४९ स्नात्व्यादयश्च।
५० आज्जसेरसुक्। ५२, ५१
५१ अश्वक्षीरवृषलवणानामात्म-
प्रीतौ क्यचि।
५२ आमि सर्वनाम्नः सुट्। ५७
५३ त्रेस्त्रयः।
५४ ह्रस्वनद्यापो नुट्। ५७
५५ षट्चतुर्भ्यश्च।
५६ श्रीग्रामण्योश्छन्दसि। ५७
५७ गोः पादान्ते।
५८ इदितो नुम् धातोः। ८३
५९ शे मुचादीनाम्।
६० मस्जिनशोर्झलि।
६१ रधिजभोरचि। ६४
६२ नेट्यलिटि रधेः।
६३ रभेरशब्लिटोः। ६४
६४ लभेश्च। ६९
६५ आङो यि। ६६
६६ उपात् प्रशंसायाम्।
६७ उपसर्गात् खल्घञोः। ६८
६८ न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम्।
६९ विभाषा चिण्णमुलोः।
७० उगिदचां सर्वनाम- ७२
स्थानेऽधातोः।
७१ युजेरसमासे।
७२ नपुंसकस्य झलचः। ७७
७३ इकोऽचि विभक्तौ। ७४, ७५
७४ तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं
पुंवद् गालवस्य। ७५
७५ अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णा- ७७
मनङुदात्तः। ७६,७७
७६ छन्दस्यपि दृश्यते। ७७
७७ ई च द्विवचने।
७८ नाभ्यस्ताच्छतुः। ७९, ८१
७९ वा नपुंसकस्य। ८०
८० आच्छीनद्योर्नुम्। ८१
८१ शप्श्यनोर्नित्यम्।
८२ सावनडुहः। ८५
८३ दृक्स्ववस्स्वतवसां छन्दसि।
८४ दिव औत्।

८५ पथिमथ्यृभुक्षामात्। ८८
८६ इतोऽत् सर्वनामस्थाने। ९८
८७ थो न्थ:।
८८ भस्य टेर्लोप:।
८९ पुंसोऽसुङ्।
९० गोतो णित्। ९२
९१ णलुत्तमो वा।
९२ सख्युरसम्बुद्धौ। ९३, ९५
९३ अनङ् सौ। ९४
९४ ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च।
९५ तृज्वत् क्रोष्टु:। ९७
९६ स्त्रियां च।
९७ विभाषा तृतीयादिष्वचि।
९८ चतुरनडुहोरामुदात्त:। ९९
९९ अम् सम्बुद्धौ।
१०० ऋत इद्धातो:। १०३,१०१,१०३
१०१ उपधायाश्च।
१०२ उदोष्ठ्यपूर्वस्य। १०३
१०३ बहुलं छन्दसि।

★

द्वितीय: पाद:

१ सिचि वृद्धि: परस्मैपदेषु। ७
२ अतो ल्रान्तस्य।
३ वदव्रजहलन्तस्याच:। ४
४ नेटि। ७
५ ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणि-
श्व्येदिताम्।
६ ऊर्णोतेर्विभाषा। ७
७ अतो हलादेर्लघो:।
८ नेड् वशि कृति। ३४, ९
९ तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च।
१० एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्।
११ श्र्युक: किति। १२
१२ सनि ग्रहगुहोश्च।
१३ कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि।
१४ श्वीदितो निष्ठायाम्। ३४
१५ यस्य विभाषा।
१६ आदितश्च। १९
१७ विभाषा भावादिकर्मणो:।
१८ क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्ट-
विरिब्धफाण्टबाढानि मन्थ-
मनस्तम:सक्ताविस्पष्टस्वरा-
नायासभृशेषु।
१९ धृषिशसी वैयात्ये।
२० दृढ: स्थूलबलयो:।
२१ प्रभौ परिवृढ:।
२२ कृच्छ्रगहनयो: कष:।
२३ घुषिरविशब्दने।
२४ अर्दे: संनिविभ्य:। २५
२५ अभेश्चाविदूर्ये।
२६ णेरध्ययने वृत्तम्। २७
२७ वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्ट-
च्छन्नज्ञप्ता:। ३०
२८ रुष्यमत्वरसङ्घुषास्वनाम्।

२९ हृषेर्लोमसु।
३० अपचितश्च।
३१ हुह्वरेश्छन्दसि। ३२
३२ अपरिह्वृताश्च।
३३ सोमे ह्वरितः।
३४ ग्रसितस्कभितस्तभितोत्तभित-
चत्तविकस्ता विशस्तृशंस्तृ-
शास्तृतरुतृतरूतृवरुतृवरूतृ-
वरूत्रीरुज्ज्वलितिक्षरिति-
क्षमितिवमित्यमितीति च।
३५ आर्धधातुकस्येड् वलादेः। ७५,७८
३६ स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते।
३७ ग्रहोऽलिटि दीर्घः। ३८,४०
३८ वृतो वा। ४२
३९ न लिङि। ४०
४० सिचि च परस्मैपदेषु।
४१ इट् सनि वा। ४३
४२ लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु। ४३
४३ ऋतश्च संयोगादेः।
४४ स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो
वा। ५१
४५ रधादिभ्यश्च।
४६ निरः कुषः। ४७
४७ इण्निष्ठायाम्।
४८ तीषसहलुभरुषरिषः।
४९ सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृ-
यूर्णुभरज्ञपिसनाम्।
५० क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः। ५४
५१ पूङश्च।
५२ वसतिक्षुधोरिट्।
५३ अञ्चेः पूजायाम्।
५४ लुभो विमोहने।
५५ जृव्रश्च्योः क्त्वि। ५६
५६ उदितो वा। ५७
५७ सेऽसिचि कृतचृतच्छृद-
तृदनृतः। ६०
५८ गमेरिट् परस्मैपदेषु। ६०
५९ न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः। ६५
६० तासि च क्लृपः।
६१ अचस्तास्वत्थल्यनिटो ६३,६६
नित्यम्। ६३
६२ उपदेशेऽत्वतः।
६३ ऋतो भारद्वाजस्य।
६४ बभूथाततन्थजगृभ्मववर्थेति
निगमे।
६५ विभाषा सृजिदृशोः।
६६ इडत्यर्तिव्ययतीनाम्।
६७ वस्वेकाजाद्घसाम्। ६९
६८ विभाषा गमहनविदविशाम्।
६९ सनिंससनिवांसम्।
७० ऋद्धनोः स्ये।
७१ अञ्जेः सिचि। ७३
७२ स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु। ७३

७३ यमरमनमातां सक् च।
७४ स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि। ७५
७५ किरश्च पञ्चभ्यः। ७६
७६ रुदादिभ्यः सार्वधातुके। ८१
७७ ईशः से। ७८
७८ ईडजनोर्ध्वे च।
७९ लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य।
८० अतो येयः। ८२, ८१
८१ आतो ङितः।
८२ आने मुक्। ८३
८३ ईदासः।
८४ अष्टन आ विभक्तौ। ८८, ११३
८५. रायो हलि।
८६ युष्मदस्मदोरनादेशे। ९८, ८९
८७ द्वितीयायां च।
८८ प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम्।
८९ योऽचि।
९० शेषे लोपः।
९१ मपर्यन्तस्य। ९८
९२ युवावौ द्विवचने।
९३ यूयवयौ जसि।
९४ त्वाहौ सौ।
९५ तुभ्यमह्यौ ङयि।
९६ तवममौ ङसि।
९७ त्वमावेकवचने। ९८
९८ प्रत्ययोत्तरपदयोश्च।
९९ त्रिचतुरोः स्त्रियांतिसृचतसृ। १००
१०० अचि र ऋतः। १०१
१०१ जराया जरसन्यतरस्याम्।
१०२ त्यदादीनामः।
१०३ किमः कः। १०५
१०४ कु तिहोः।
१०५ क्वाति।
१०६ तदोः सः सावनन्त्ययोः। १०८
१०७ अदस औ सुलोपश्च।
१०८ इदमो मः। ११३, १०९
१०९ दश्च। ११०
११० यः सौ। १११
१११ इदोऽय् पुंसि। ११३
११२ अनाप्यकः। ११३
११३ हलि लोपः।
११४ मृजेर्वृद्धिः। ३.३५
११५ अचो ञ्णिति। ३.३१, ३.३५
११६ अत उपधायाः।
११७ तद्धितेष्वचामादेः। ३.३१
११८ किति च। ३.३१

★

तृतीयः पादः

१ देविकाशिंशपादित्यवाड्-दीर्घसत्रश्रेयसामात्।
२ केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः।

३ न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच्। ५
४ द्वारादीनां च।
५ न्यग्रोधस्य च केवलस्य।
६ न कर्मव्यतिहारे। ९
७ स्वागतादीनां च।
८ श्वादेरिञि। ९
९ पदान्तस्यान्यतरस्याम्।
१० उत्तरपदस्य। ३१
११ अवयवाद् ऋतोः।
१२ सुसर्वार्धाज्जनपदस्य। १३
१३ दिशोऽमद्राणाम्। १४
१४ प्राचां ग्रामनगराणाम्।
१५ सङ्ख्यायाः संवत्सरसङ्ख्यस्य च। १७
१६ वर्षस्याभविष्यति।
१७ परिमाणान्तस्यासंज्ञाशाणयोः।
१८ जे प्रोष्ठपदानाम्।
१९ हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च। २५
२० अनुशतिकादीनां च।
२१ देवताद्वन्द्वे च। २३
२२ नेन्द्रस्य परस्य। २३
२३ दीर्घाच्च वरुणस्य।
२४ प्राचां नगरान्ते।
२५ जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषितमुत्तरम्।
२६ अर्धात् परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा। २७, ३१ ३०
२७ नातः परस्य।
२८ प्रवाहणस्य ढे। २९
२९ तत्प्रत्ययस्य च।
३० नञः शुचीश्वरक्षेत्रज्ञ-कुशलनिपुणानाम्। ३१
३१ यथातथयथापुरयोः पर्यायेण।
३२ हनस्तोऽचिण्णलोः।
३३ आतो युक् चिण्कृतोः। ३५
३४ नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः। ३५
३५ जनिवध्योश्च।
३६ अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयी-क्ष्माय्यातां पुग् णौ। ४३
३७ शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक्।
३८ वो विधूनने जुक्।
३९ लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने।
४० भियो हेतुभये षुक्।
४१ स्फायो वः।
४२ शदेरगतौ तः।
४३ रुहः पोऽन्यतरस्याम्।
४४ प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात इदाप्यसुपः। ४९
४५ न यासयोः। ४८
४६ उदीचामातः ४८, ४९ स्थाने यकपूर्वायाः।
४७ भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वा नञ्पूर्वाणामपि। ४९

४८ अभाषितपुंस्काच्च। ४९
४९ आदाचार्याणाम्।
५० ठस्येकः। ५१
५१ इसुसुक्तान्तात् कः।
५२ चजोः कु घिण्ण्यतोः। ६९
५३ न्यङ्क्वादीनां च।
५४ हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु। ५६, ५५
५५ अभ्यासाच्च। ५८
५६ हेरचङि।
५७ सन्लिटोर्जेः। ५८
५८ विभाषा चेः।
५९ न क्वादेः। ६९
६० अजिव्रज्योश्च।
६१ भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः।
६२ प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे।
६३ वञ्चेर्गतौ।
६४ ओक उचः के।
६५ ण्य आवश्यके। ६९
६६ यजयाचरुचप्रवचर्चश्च।
६७ वचोऽशब्दसंज्ञायाम्।
६८ प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे।
६९ भोज्यं भक्ष्ये।
७० घोर्लोपो लेटि वा। ७२
७१ ओतः श्यनि।
७२ क्सस्याचि। ७३
७३ लुग् वा दुहदिहलिहगुहा-
मात्मनेपदे दन्त्ये।
७४ शमामष्टानां दीर्घः श्यनि। ७६
७५ ष्ठिवुक्लमुचमां शिति। ८२
७६ क्रमः परस्मैपदेषु।
७७ इषुगमियमां छः।
७८ पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्ति-
सर्तिशदसदां पिबजिघ्रधम-
तिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौ-
शीयसीदाः।
७९ ज्ञाजनोर्जा।
८० प्वादीनां ह्रस्वः। ८१
८१ मीनातेर्निगमे।
८२ मिदेर्गुणः। ८८
८३ जुसि च।
८४ सार्वधातुकार्धधातुकयोः। ८६
८५ जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु।
८६ पुगन्तलघूपधस्य च। ८७
८७ नाभ्यस्तस्याचि ८८
पिति सार्वधातुके। ९४, १०१
८८ भूसुवोस्तिङि।
८९ उतो वृद्धिर्लुकि हलि। ९०, १००
९० ऊर्णोतेर्विभाषा। ९१
९१ गुणोऽपृक्ते।
९२ तृणह इम्।
९३ ब्रुव ईट्। ९८
९४ यङो वा। ९५
९५ तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके।
९६ अस्तिसिचोऽपृक्ते। ९७, १००

९७ बहुलं छन्दसि।
९८ रुदश्च पञ्चभ्यः। ९९
९९ अड् गार्ग्यगालवयोः। १००
१०० अदः सर्वेषाम्।
१०१ अतो दीर्घो यञि। १०४, १०२
१०२ सुपि च। ११९
१०३ बहुवचने झल्येत्। १०६
१०४ ओसि च। १०५
१०५ आङि चापः। १०६
१०६ सम्बुद्धौ च। १०८
१०७ अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः।
१०८ ह्रस्वस्य गुणः। १०९, १११
१०९ जसि च।
११० ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः।
१११ घेर्ङिति। ११५
११२ आण्नद्याः।
११३ याडापः। ११४
११४ सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च। ११५
११५ विभाषा द्वितीयातृतीयाभ्याम्।
११६ ङेराम् नद्यामीभ्यः। ११८, ११७
११७ इदुद्भ्याम्। ११८
११८ औदच्च घेः। ११९
११९ आङो नास्त्रियाम्।

★

चतुर्थः पादः

१ णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः। ८, ३
२ नाग्लोपिशास्वृदिताम्।
३ भ्राजभासभाषदीपजीवमील-पीडामन्यतरस्याम्।
४ लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य।
५ तिष्ठतेरित्। ६
६ जिघ्रतेर्वा। ७
७ उर्ऋत्। ८
८ नित्यं छन्दसि।
९ दयतेर्दिगि लिटि। १२
१० ऋतश्च संयोगादेर्गुणः। ११
११ ऋच्छत्यृताम्।
१२ शृदृप्रां ह्रस्वो वा। १५
१३ केऽणः। १४
१४ न कपि। १५
१५ आपोऽन्यतरस्याम्।
१६ ऋदृशोऽङि गुणः। २०
१७ अस्यतेस्थुक्।
१८ श्वयतेरः।
१९ पतः पुम्।
२० वच उम्।
२१ शीङः सार्वधातुके गुणः। २२
२२ अयङ् यि क्ङिति। २९, २५
२३ उपसर्गाद् ध्रस्व ऊहतेः। २४
२४ एतेर्लिङि।
२५ अकृत्सार्वधातुकयो- २९ र्दीर्घः। २६
२६ च्वौ च। २७

२७ रीङ् ऋतः। ३०
२८ रिङ् शयग्लिङ्क्षु। २९
२९ गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः। ३०
३० यङि च। ३१
३१ ईद् घ्राध्मोः। ३३
३२ अस्य च्वौ। ३५
३३ क्यचि च। ३९
३४ अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्धेषु।
३५ नच्छन्दस्यपुत्रस्य। ३९
३६ दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यति-रिषण्यति।
३७ अश्वाघस्यात्। ३८
३८ देवसुम्नयोर्यजुषि काठके।
३९ कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः।
४० द्यतिस्यतिमास्थामित् ४१ तिकिति। ४७
४१ शाच्छोरन्यतरस्याम्।
४२ दधातेर्हिः। ४४
४३ जहातेश्च क्त्वि। ४४
४४ विभाषा छन्दसि। ४५
४५ सुधितवसुधितनेमधितधिष्व-धिषीय च।
४६ दो दद् घोः। ४७
४७ अच उपसर्गात् तः। ४९
४८ अपो भि।
४९ सः स्यार्धधातुके। ५२, ५७
५० तासस्त्योर्लोपः। ५२, ५३
५१ रि च।
५२ ह एति।
५३ यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः।
५४ सनि मीमाघुरभलभशक- ५७ पतपदामच इस्। ५६
५५ आज्ञप्यृधामीत्। ५६
५६ दम्भ इच्च।
५७ मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा।
५८ अत्र लोपोऽभ्यासस्य। ९७
५९ ह्रस्वः।
६० हलादिः शेषः। ६१
६१ शर्पूर्वाः खयः।
६२ कुहोश्चुः। ६४
६३ न कवतेर्यङि। ६४
६४ कृषेश्छन्दसि। ६५
६५ दाधर्तिदर्धर्तिदर्धर्षिबोभूतु-तेतिक्तेऽलर्ष्यापनीफणत्-संसनिष्यदत्करिक्रत्कनिक्रदद्-भरिभ्रद्दविध्वतोदविद्युतत्तरित्रतः-सरीसृपतंवरीवृजन्मर्मृज्याग-नीगन्तीति च।
६६ उरत्।
६७ द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्। ६८
६८ व्यथो लिटि। ७४
६९ दीर्घ इणः किति। ७०
७० अत आदेः।
७१ तस्मान्नुड् द्विहलः। ७२

७२ अश्नोतेश्च।
७३ भवतेरः। ७४
७४ ससूवेति निगमे।
७५ निजां त्रयाणां गुणः श्लौ। ७६,७८
७६ भृञामित्। ८१
७७ अर्तिपिपर्त्योश्च।
७८ बहुलं छन्दसि।
७९ सन्यतः। ८१
८० ओः पुयण्ज्यपरे। ८१
८१ स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवति-
प्लवतिच्यवतीनां वा।
८२ गुणो यङ्लुकोः। ९०
८३ दीर्घोऽकितः।
८४ नीग् वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकस-
पतपदस्कन्दाम्।
८५ नुगतोऽनुनासिकान्तस्य। ८७
८६ जपजभदहदशभञ्जपशां च।
८७ चरफलोश्च। ८९
८८ उत् परस्यातः। ८९
८९ ति च।
९० रीगृदुपधस्य च। ९२, ९१
९१ रुग्रिकौ च लुकि। ९२
९२ ऋतश्च।
९३ सन्वल्लघुनि ९४
चङ्परेऽनग्लोपे। ९७,९४
९४ दीर्घो लघोः।
९५ अत् स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तॄस्प-
शाम्। ९७
९६ विभाषा वेष्टिचेष्ट्योः।
९७ ई च गणः।

अष्टमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ सर्वस्य द्वे। १५
२ तस्य परमाम्रेडितम्। ३
३ अनुदात्तं च।
४ नित्यवीप्सयोः।
५ परेर्वर्जने।
६ प्रसमुपोदः पादपूरणे।
७ उपर्यध्यधसः सामीप्ये।
८ वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूया-
सम्मतिकोपकुत्सनभर्त्सनेषु।
९ एकं बहुव्रीहिवत्। १०
१० आबाधे च।
११ कर्मधारयवदुत्तरेषु। १५
१२ प्रकारे गुणवचनस्य।
१३ अकृच्छ्रे प्रियसुखयो-
रन्यतरस्याम्।

१४ यथास्वे यथायथम्।
१५ द्वन्द्वं रहस्यमर्यादावचन-व्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाभि-व्यक्तिषु।
१६ पदस्य। ३.५४
१७ पदात्। ६८
१८ अनुदात्तं सर्वमपादादौ। ७१
१९ आमन्त्रितस्य च।
२० युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थी-द्वितीयास्थयोर्वान्नावौ। २३
२१ बहुवचनस्य वस्नसौ।
२२ तेमयावेकवचनस्य। २३
२३ त्वामौ द्वितीयायाः।
२४ न चवाहाहैवयुक्ते। २६
२५ पश्यार्थैश्चानालोचने।
२६ सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा।
२७ तिङो गोत्रादीनि कुत्सना-भीक्ष्ण्ययोः।
२८ तिङ्ङतिङः। ६६
२९ न लुट्। ६६
३० निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्ने-च्चेच्चण्कच्चिद्यत्रयुक्तम्।
३१ नह प्रत्यारम्भे।
३२ सत्यं प्रश्ने।
३३ अङ्गात्प्रातिलोम्ये। ३४
३४ हि च। ३५
३५ छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम्।
३६ यावद्यथाभ्याम्। ३८
३७ पूजायां नानन्तरम्। ३८
३८ उपसर्गव्यपेतं च।
३९ तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम्। ४०
४० अहो च। ४१
४१ शेषे विभाषा। ४२
४२ पुरा च परीप्सायाम्।
४३ नन्वित्यनुज्ञैषणायाम्।
४४ किं क्रियाप्रश्नेऽनुपसर्ग-मप्रतिषिद्धम्। ४५
४५ लोपे विभाषा।
४६ एहि मन्ये प्रहासे लृट्।
४७ जात्वपूर्वम्। ५०
४८ किंवृत्तं च चिदुत्तरम्।
४९ आहो उताहो चानन्तरम्। ५०
५० शेषे विभाषा।
५१ गत्यर्थलोटा लृण्न चेत् कारकं सर्वान्यत्। ५३
५२ लोट् च। ५४
५३ विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम्। ५४
५४ हन्त च।
५५ आम एकान्तरमामन्त्रित-मनन्तिके।
५६ यद्धितुपरं छन्दसि।
५७ चनचिदिवगोत्रादितद्धिता-म्रेडितेष्वगतेः। ५८
५८ चादिषु च।

५९ चवायोगे प्रथमा। ६५
६० हेति क्षियायाम्। ६१
६१ अहेति विनियोगे च।
६२ चाहलोप एवेत्यवधारणम्।
६३ चादिलोपे विभाषा। ६५
६४ वैवावेति चच्छन्दसि। ६५
६५ एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम्।
६६ यद्वृत्तान्नित्यम्।
६७ पूजनात् पूजितमनुदात्तम्। ६८
६८ सगतिरपि तिङ्। ६९
६९ कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ।
७० गतिर्गतौ। ७१
७१ तिङि चोदात्तवति।
७२ आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत्। ७४
७३ नामन्त्रिते समानाधिकरणे। ७४
७४ सामान्यवचनं विभाषितं विशेषवचने।

★

द्वितीयः पादः

१ पूर्वत्रासिद्धम्। ४.६७
२ नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति।
३ न मु ने।
४ उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य। ६
५ एकादेश उदात्तेनोदात्तः। ६
६ स्वरितो वानुदात्ते पदादौ।
७ नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य। ८
८ न ङिसम्बुद्ध्योः।
९ मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः। १६ १५
१० झयः।
११ संज्ञायाम्। १३
१२ आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवत्कक्षीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती।
१३ उदन्वानुदधौ च।
१४ राजन्वान् सौराज्ये।
१५ छन्दसीरः। १६
१६ अनो नुट्। १७
१७ नाद् घस्य।
१८ कृपो रो लः। २२
१९ उपसर्गस्यायतौ।
२० ग्रो यङि। २१
२१ अचि विभाषा। २२
२२ परेश्च घाङ्कयोः।
२३ संयोगान्तस्य लोपः। २४, २९
२४ रात् सस्य। २८
२५ धि च।
२६ झलो झलि। ३८
२७ ह्रस्वादङ्गात्।
२८ इट ईटि।
२९ स्कोः संयोगाद्योरन्ते च। ३८

३० चोः कुः।
३१ हो ढः। ३५
३२ दादेर्धातोर्घः। ३८, ३३
३३ वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्।
३४ नहो धः।
३५ आहस्थः।
३६ व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराज-
भ्राजच्छशां षः।
३७ एकाचो बशो भष् झषन्तस्य
स्ध्वोः। ३८
३८ दधस्तथोश्च।
३९ झलां जशोऽन्ते।
४० झषस्तथोर्धोऽधः।
४१ षढोः कः सि।
४२ रदाभ्यां निष्ठातो नः
पूर्वस्य च दः। ६१
४३ संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः।
४४ ल्वादिभ्यः।
४५ ओदितश्च।
४६ क्षियो दीर्घात्।
४७ श्योऽस्पर्शे।
४८ अञ्चोऽनपादाने।
४९ दिवोऽविजिगीषायाम्।
५० निर्वाणोऽवाते।
५१ शुषः कः।
५२ पचो वः।
५३ क्षायो मः। ५४
५४ प्रस्थोऽन्यतरस्याम्।
५५ अनुपसर्गात् फुल्लक्षीब-
कृशोल्लाघाः।
५६ नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्यो-
ऽन्यतरस्याम्।
५७ न ध्याख्यापॄमूर्च्छिमदाम्। ६१
५८ वित्तो भोगप्रत्यययोः।
५९ भित्तं शकलम्।
६० ऋणमाधमर्ण्ये।
६१ नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्त-
गूर्तानि छन्दसि।
६२ क्विन्प्रत्ययस्य कुः। ६३
६३ नशेर्वा।
६४ मो नो धातोः। ६५
६५ म्वोश्च।
६६ ससजुषो रुः। ७१
६७ अवयाःश्वेतवाःपुरोडाश्च।
६८ अहन्। ६९
६९ रोऽसुपि। ७१
७० अम्नरूधरवरित्युभयथा
छन्दसि। ७१
७१ भुवश्च महाव्याहृतेः।
७२ वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः। ७५
७३ तिप्यनस्तेः।
७४ सिपि धातो रुर्वा। ७५, ७९, ७५
७५ दश्च।
७६ र्वोरुपधाया दीर्घ इकः। ७९

७७ हलि च। ७८
७८ उपधायां च।
७९ न भकुर्छुराम्।
८० अदसोऽसेर्दादु दो मः। ८१
८१ एत ईद् बहुवचने।
८२ वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः।
८३ प्रत्यभिवादेऽशूद्रे।
८४ दूराद् धूते च। ८५
८५ हैहेप्रयोगे हैहयोः।
८६ गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम्।
८७ ओमभ्यादाने।
८८ ये यज्ञकर्मणि। ९२
८९ प्रणवष्टेः। ९०
९० याज्यान्तः।
९१ ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौषडावहानामादेः। ९२
९२ अग्नीत्प्रेषणे परस्य च।
९३ विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः। ९४
९४ निगृह्यानुयोगे च।
९५ आम्रेडितं भर्त्सने। ९६
९६ अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम्।
९७ विचार्यमाणानाम्। ९८
९८ पूर्वं तु भाषायाम्।
९९ प्रतिश्रवणे च।
१०० अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः। १०२
१०१ चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने।
१०२ उपरिस्विदासीदिति च।
१०३ स्वरितमाम्रेडितेऽसूयासम्मतिकोपकुत्सनेषु। १०५
१०४ क्षियाशीःप्रैषेषु तिङाकाङ्क्षम्।
१०५ अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः।
१०६ प्लुतावैच इदुतौ। १०८
१०७ एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूते पूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्येदुतौ।
१०८ तयोर्य्वावचि संहितायाम्। ४.६७

★

तृतीयः पादः

१ मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि। १२
२ अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा।
३ आतोऽटि नित्यम्।
४ अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः।
५ समः सुटि।
६ पुमः खय्यम्परे। ८
७ नश्छव्यप्रशान्। १२, ८
८ उभयथर्क्षु। ९
९ दीर्घादटि समानपादे।
१० नॄन् पे।
११ स्वतवान् पायौ।
१२ कानाम्रेडिते।

१३ ढो ढे लोपः। १४
१४ रो रि। १७
१५ खरवसानयोर्विसर्जनीयः। १६
१६ रोः सुपि। १७
१७ भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि। २२ २०
१८ व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य। २२
१९ लोपः शाकल्यस्य। २२
२० ओतो गार्ग्यस्य।
२१ उञि च पदे।
२२ हलि सर्वेषाम्। २३
२३ मोऽनुस्वारः। २६, २४
२४ नश्चापदान्तस्य झलि।
२५ मो राजि समः क्वौ। २७
२६ हे मपरे वा। २७, ३१
२७ नपरे नः।
२८ ङ्णोः कुक्टुक् शरि।
२९ डः सि धुट्। ३०
३० नश्च। ३१
३१ शि तुक्।
३२ ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम्। ३३
३३ मय उञो वो वा।
३४ विसर्जनीयस्य सः। ५४
३५ शर्परे विसर्जनीयः। ३७
३६ वा शरि।
३७ कुप्वोः ×क×पौ च। ४९
३८ सोऽपदादौ। ५४, ३९
३९ इणः षः। ४८
४० नमस्पुरसोर्गत्योः।
४१ इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य।
४२ तिरसोऽन्यतरस्याम्। ४४
४३ द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोऽर्थे।
४४ इसुसोः सामर्थ्ये। ४५
४५ नित्यं समासेऽनुत्तर-पदस्थस्य। ४७
४६ अतः कृकमिकंसकुम्भपात्र-कुशाकर्णीष्वनव्ययस्य।
४७ अधःशिरसी पदे।
४८ कस्कादिषु च।
४९ छन्दसि वाप्राम्रेडितयोः। ५४
५० कः करत्करतिकृधिकृतेष्वन-दितेः।
५१ पञ्चम्याः परावध्यर्थे। ५२
५२ पातौ च बहुलम्।
५३ षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपद-पयस्पोषेषु। ५४
५४ इडाया वा।
५५ अपदान्तस्य मूर्धन्यः।
५६ सहेः साडः सः। ११९
५७ इण्कोः। ११९
५८ नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि। ११९
५९ आदेशप्रत्यययोः।
६० शासिवसिघसीनां च।
६१ स्तौतिण्योरेव षण्यभ्यासात्। ६२
६२ सः स्विदिस्वदिसहीनां च।

६३ प्राक् सितादड्व्यवायेऽपि। ६४,७०
६४ स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य। ७०
६५ उपसर्गात् सुनोतिसुवतिस्यति-
स्तौतिस्तोभतिस्थासेनयसेध-
सिचसञ्जस्वञ्जाम्। ७७
६६ सदिरप्रतेः।
६७ स्तन्भेः। ६८
६८ अवाच्चालम्बनाविदूर्ययोः। ६९
६९ वेश्च स्वनो भोजने।
७० परिनिविभ्यः सेवसितसय- ७१
सिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम्।
७१ सिवादीनां वाड्व्यवायेऽपि। ७६
७२ अनुविपर्यभिनिभ्यः स्यन्दते-
रप्राणिषु।
७३ वेः स्कन्देरनिष्ठायाम्। ७४
७४ परेश्च।
७५ परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु।
७६ स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निविभ्यः।
७७ वेः स्कभ्नातेर्नित्यम्।
७८ इणः षीध्वंलुङ्लिटां
धोऽङ्गात्। ७९
७९ विभाषेटः।
८० समासेऽङ्गुलेः सङ्गः। ८५
८१ भीरोः स्थानम्।
८२ अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः।
८३ ज्योतिरायुषः स्तोमः।
८४ मातृपितृभ्यां स्वसा। ८५
८५ मातुःपितुर्भ्यामन्यतरस्याम्। ८६
८६ अभिनिसः स्तनः शब्द-
संज्ञायाम्।
८७ उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्परः।
८८ सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः।
८९ निनदीभ्यां स्नातेः कौशले।
९० सूत्रं प्रतिष्णातम्।
९१ कपिष्ठलो गोत्रे।
९२ प्रष्ठोऽग्रगामिनि।
९३ वृक्षासनयोर्विष्टरः। ९४
९४ छन्दोनाम्नि च।
९५ गवियुधिभ्यां स्थिरः।
९६ विकुशमिपरिभ्यः स्थलम्।
९७ अम्बाम्बगोभूमिसव्यापद्विश्वि-
कुशेकुशङ्क्वङ्गुमञ्जिपुञ्जि-
परमेबर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः।
९८ सुषामादिषु च।
९९ एति संज्ञायामगात्। १००
१०० नक्षत्राद् वा।
१०१ ह्रस्वात् तादौ तद्धिते। १०४
१०२ निसस्तपतावनासेवने।
१०३ युष्मत्ततक्षुःष्वन्तःपादम्। १०४
१०४ यजुष्येकेषाम्। १०६
१०५ स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि। १०९
१०६ पूर्वपदात्। १०९
१०७ सुञः।
१०८ सनोतेरनः।
१०९ सहेः पृतनर्ताभ्यां च।

११० न रपरसृपिसृजिस्पृशिस्पृहि-
सवनादीनाम्। ११९
१११ सात्पदाद्योः।
११२ सिचो यङि।
११३ सेधतेर्गतौ।
११४ प्रतिस्तब्धनिस्तब्धौ च।
११५ सोढः।
११६ स्तम्भुसिवुसहां चङि।
११७ सुनोतेः स्यसनोः।
११८ सदेः परस्य लिटि।
११९ निव्यभिभ्योऽड्व्यवाये वा
छन्दसि।

★

चतुर्थः पादः

१ रषाभ्यां नो णः समानपदे। ३८
२ अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि। ३८
३ पूर्वपदात् संज्ञायामगः। १३, ४
४ वनं पुरगामिश्रकासिध्र-
कासारिकाकोटराग्रेभ्यः। ६
५ प्रनिरन्तःशरेक्षुप्लक्षाम्रकार्ष्य-
खदिरपीयूक्षाभ्योऽसंज्ञायामपि।
६ विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः।
७ अह्नोऽदन्तात्।
८ वाहनमाहितात्।
९ पानं देशे। १०
१० वा भावकरणयोः। ११
११ प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु १३
च।
१२ एकाजुत्तरपदे णः।
१३ कुमतिं च।
१४ उपसर्गादसमासेऽपि
णोपदेशस्य। २२
१५ हिनुमीना।
१६ आनि लोट्।
१७ नेर्गदनदपतपदघुमास्यति-
हन्तियातिवातिद्रातिप्साति-
वपतिवहतिशाम्यतिचिनोति-
देग्धिषु च। १८
१८ शेषे विभाषाकखादावषान्त
उपदेशे।
१९ अनितेरन्तः। २०
२० उभौ साभ्यासस्य।
२१ हन्तेरत्पूर्वस्य। २३
२२ वमोर्वा।
२३ अन्तरदेशे। २४
२४ अयनं च।
२५ छन्दस्यृदवग्रहात्। २६
२६ नश्च धातुस्थोरुषुभ्यः। २७
२७ उपसर्गादनोत्परः। २८
२८ कृत्यचः। ३३
२९ णेर्विभाषा। ३०
३० हलश्चेजुपधात्। ३१

३१ इजादेः सनुमः।
३२ वा निंसनिक्षनिन्दाम्।
३३ न भाभूपूकमिगमि-
प्यायीवेपाम्। ३८
३४ षात् पदान्तात्।
३५ नशेः षान्तस्य।
३६ पदान्तस्य।
३७ पदव्यवायेऽपि।
३८ क्षुभ्नादिषु च।
३९ स्तोः श्चुना श्चुः। ४१
४० ष्टुना ष्टुः। ४१
४१ न पदान्ताट् टोरनाम्। ४३
४२ तोः षि। ४३
४३ शात्।
४४ यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा। ४६
४५ अचो रहाभ्यां द्वे। ४६, ५१
४६ अनचि च।
४७ नादिन्याक्रोशे पुत्रस्य। ५१
४८ शरोऽचि।
४९ त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य।
५० सर्वत्र शाकल्यस्य।
५१ दीर्घादाचार्याणाम्।
५२ झलां जश् झशि। ५५, ५३
५३ अभ्यासे चर्च। ५५
५४ खरि च।
५५ वावसाने। ५६
५६ अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः।
५७ अनुस्वारस्य ययि ५८
परसवर्णः। ५९, ६१
५८ वा पदान्तस्य।
५९ तोर्लि।
६० उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य। ६१
६१ झयो होऽन्यतरस्याम्। ६२, ६४
६२ शश्छोऽटि।
६३ हलो यमां यमि लोपः। ६४
६४ झरो झरि सवर्णे।
६५ उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः। ६६
६६ नोदात्तस्वरितोदयमगार्ग्य-
काश्यपगालवानाम्।
६७ अ अ।

इति श्रीपाणिनिप्रणीतोऽष्टाध्यायीसूत्रपाठः
समाप्तः।।

अष्टाध्यायीसूत्र-वर्णानुक्रमणी

अ अ ८.४.६७
अंशं हारी० ५.२.६९
अक: सव० ६.१.९७
अकथितं० १.४.५१
अकर्तरि० ३.३.१९
अकर्तर्यृ० २.३.२४
अकर्मकाच्च १.३.२६
अकर्मकाच्च १.३.३५
अकर्मकाच्च १.३.४५
अकर्मधार० ६.२.१२९
अकृच्छ्रे प्रि० ८.१.१३
अकृत्सार्व० ७.४.२५
अके जीवि० ६.२.७३
अकेनोर्भ० २.३.७०
अक्षशला० २.१.१०
अक्षेषु ग्लह: ३.३.७०
अक्षोऽन्य० ३.१.७५
अक्ष्णोऽद० ५.४.७६
अगारान्ता० ४.४.७०
अगारैक० ३.३.७९
अग्नीत्० ८.२.९२
अग्रे: स्तुत्० ८.३.८२
अग्नेर्ढक् ४.२.३२
अग्नौ चे: ३.२.९१
अग्नौ परि ३.१.१३१
अग्राख्यायाο ५.४.९३
अग्राद्यत् ४.४.११६
अग्रान्त० ५.४.१४५
अङितश्च ६.४.१०३
अङ्ग इत्या० ६.१.११५
अङ्गयुक्तं० ८.२.९६
अङ्गस्य ६.४.१
अङ्गानि मैरे० ६.२.७०
अङ्गाऽ० ८.१.३३
अङ्गुलेर्दा० ५.४.११४
अङ्गुल्या० ५.३.१०८
अ च ४.३.३१
अच: ६.४.१३८
अच: कर्तृ० ६.१.१८९
अच: कर्म० ३.१.६२
अच: परस्मि० १.१.५६
अचतुर० ५.४.७७
अचश्च १.२.२८
अचस्ता० ७.२.६१
अचित्त० ४.२.४६
अचित्ता० ४.३.९६
अचि र० ७.२.१००
अचि वि० ८.२.२१
अचि श्नु० ६.४.७७
अचोञ्णिति ७.२.११५
अचोन्त्या० १.१.६३
अचो यत् ३.१.९७
अचो रहा० ८.४.४५
अच्का० ६.२.१५६
औदव्व घे: ७.३.११८
अच्छगत्य० १.४.६८
अच्छत्य० ५.४.७५
अजर्य० ३.१.१०५
अजादी० ५.३.५८
अजादे० ६.१.२
अजाद्यत० ४.१.४
अजाद्यद० २.२.३३
अजाविभ्यां० ५.१.८
अजिनान्त० ५.३.८२
अजिन्रज्यो० ७.३.६०
अजेर्व्यघ० २.४.५६
अञ्जनगमां० ६.४.१६
अज्ञाते ५.३.७३
अञ्चे: पूजा० ७.२.५३
अञ्चेर्लुक् ५.३.३०
अञ्चेश्छ० ६.१.१६४
अञ्चोऽन० ८.२.४८
अञ्जे:सिचि ७.२.७१
अट्कु० ८.४.२
अङ्गार्य्य० ७.३.९९
अणजौ च ४.३.३३
अणावकर्म० १.३.८८
अणि नियु० ६.२.७५
अणिञो० ४.१.७८
अणिगुण: ५.४.१५
अणुदित् १.१.६८
अणृगय० ४.३.७३
अणो द्व्यच: ४.१.१५६
अणोऽप्र० ८.४.५६
अण्कर्मणि च ३.३.१२
अण्कुटि० ४.४.१८
अण्च ५.२.१०३
अण्महि० ४.४.४८
अत आदे: ७.४.७०
अत इञ् ४.१.९५
अत इनिं० ५.२.११५
अत उत्० ६.४.११०
अत उप० ७.२.११६
अत एक० ६.४.१२०
अत: कृ० ८.३.४६
अतश्च ४.१.१७५
अतिग्र० ५.४.४६
अतिथेर्ञ्य: ५.४.२६
अतिरति० १.४.९४
अतिशाय० ५.३.५५
अते: शुन: ५.४.९६
अतेरकृ० ६.२.१९०
अतो गुणे ६.१.९४
अतो दी० ७.३.१०१
अतो भिस० ७.१.९
अतोऽम् ७.१.२४
अतो येय: ७.२.८०
अतो रो० ६.१.१०९
अतो लोप: ६.४.४८
अतो हला० ७.२.७
अतो हे: ६.४.१०५
अत्यन्त० २.१.२८
अत्र लो० ७.४.५८
अत्रानुनासि० ८.३.२
अत्रिभृगु० २.४.६५
अत्वसन्त० ६.४.१४
अत्स्मृदृ० ७.४.९५
अद: स० ७.३.१००
अदभ्यस्तात् ७.१.४
अदर्शनं० १.१.५९
अदसऔ० ७.२.१०७
अदसो मात् १.१.१२
अदसोऽ० ८.२.८०
अदिप्रभृ० २.४.७२
अदूरभव० ४.२.६९
अदेङ् गुण: १.१.२
अदोज० २.४.३६
अदोऽन० ३.२.६८
अदोऽनु० १.४.६९
अद्भुत० ७.१.२५
अद्भि: सं० ४.४.१३४
अद्यश्वी० ५.२.१३
अध:शि० ८.३.४७
अधिकम् ५.२.७३
अधिकरण० २.३.६८
अधिकरण० २.२.१३
अधिकरण० ५.३.४३
अधिकरणे० ३.४.४१
अधिकरणे० ३.२.१५
अधिकरणै० २.४.१५
अधिकृत्य० ४.३.८७
अधिपरी० १.४.९२
अधिरीश्वरे १.४.९६
अधिशीङ्० १.४.४६
अधीगर्थ० २.३.५२

अधीष्टे ३.३.१६६
अधुना ५.३.१७
अधेःप्रस० १.३.३३
अधेरुप० ६.२.१८७
अध्ययन० २.४.५
अध्यर्ध० ५.१.२८
अध्याय० ३.३.१२२
अध्याया० ५.२.६०
अध्यायिन्य० ४.४.७१
अध्यायेष्वे० ४.३.६९
अध्वनो० ५.२.१६
अध्वर्यु० ६.२.१०
अध्वर्युक्र० २.४.४
अन् ६.४.१६७
अन उप० ४.१.२८
अनङ् सौ ७.१.९३
अनचि च ८.४.४६
अनत्यन्त० ५.४.४
अनत्याधा० १.४.७४
अनद्यतने० ३.२.१११
अनद्यतने० ३.३.१५
अनद्यतने० ५.३.२१
अनन्ताव० ५.४.२३
अनन्त्य० ८.२.१०५
अनभिहिते २.३.१
अनवक्लृ० ३.३.१४५
अनश्च ५.४.१०८
अनसन्ता० ५.४.१०३
अनाप्यकः ७.२.११२
अनिगन्तो० ६.२.५२
अनितेरन्तः ८.४.१९
अनिदितां० ६.४.२४
अनुकम्पा० ५.३.७६
अनुकरणं० १.४.६१
अनुकाभि० ५.२.७४
अनुगव० ५.४.८३
अनुगादि० ५.४.१३
अनुग्वलं० ५.२.१५
अनुदात्तं० ८.१.१८
अनुदात्तडितः १.३.१२
अनुदात्तं च ८.१.३
अनु०पदमे० ६.१.१५२
अनु०प्रश्ना० ८.२.१००
अनुदात्तस्य० ६.१.१५५
अनुदात्तस्य० ६.१.५८
अनुदात्तादे० ४.२.४३
अनुदात्तादे० ४.३.१३८
अनुदात्ते च ६.१.१८४
अनुदात्ते० ६.१.११६
अनुदात्तेत० ३.२.१४९
अनुदात्तोप० ६.४.३७
अनु०सुप्तिौ ३.१.४
अनुनासिक० ६.४.१५
अनुनासिका० ८.३.४
अनुपद० ५.२.९
अनुपद्य० ५.२.९०
अनुपराभ्यां १.३.७९
अनुपसर्गा० १.३.७६
अनुपसर्गा० ८.२.५५
अनु० वा १.३.४३
अनु० लि० ३.१.१३८
अनुप्रति० १.४.४१
अनुप्रवच० ५.१.११०
अनुब्राह्म० ४.२.६१
अनुर्यत्० २.१.१४
अनुर्लक्ष० १.४.८३
अनुवादे० २.४.३
अनुविपर्य० ८.३.७२
अनुशतिका० ७.३.२०
अनुस्वारस्य० ८.४.५७
अनृष्यान० ४.१.१०४
अनेकम० २.२.२४
अनेकाल्० १.१.५४
अनो नुँट् ८.२.१६
अनो बहु० ४.१.१२
अनो भाव० ६.२.१४९
अनोरकर्म० १.३.४९
अनोरप्र० ६.२.१८८
अनोश्माय: ५.४.९४
अनौकर्म० ३.२.१००
अन्तः ६.२.९२
अन्तः ६.२.१४२
अन्तः ६.२.१७८
अन्तःपूर्व० ४.३.६०
अन्तरं १.१.३५
अन्तरदेशे० ८.४.२३
अन्तरपरि० १.४.६४
अन्तरान्तरेण० २.३.४
अन्तर्घनो० ३.३.७८
अन्तर्धौ० १.४.२८
अन्तर्बहि० ५.४.११७
अन्तर्वत्० ४.१.३२
अन्तश्च ६.२.१७९
अन्तश्चत० ६.१.१९४
अन्तात्य० ३.२.४८
अन्तादिवच्च ६.१.८२
अन्तिक० ५.३.६३
अन्तोदात्ता० ६.१.१६३
अन्तोऽव० ६.१.२१४
अन्त्यात्० ६.२.८३
अन्नाण्णः ४.४.८५
अन्नेन व्य० २.१.३३
अन्यतो ङीष् ४.१.४०
अन्यथैवं० ३.४.२७
अन्यपदार्थे० २.१.२०
अन्यारादित० २.३.२९
अन्येभ्यो० ३.२.१७८
अन्येभ्यो० ३.३.१३०
अन्येभ्यो० ३.२.७५
अन्येषा० ६.३.१३६
अन्येष्वपि० ३.२.१०१
अन्वच्या० ३.४.६४
अन्ववतप्ता० ५.४.८१
अपगुरो० ६.१.५२
अपघनो० ३.३.८१
अपचितश्च ७.२.३०
अपत्यं० ४.१.१६२
अपथंनपुं० २.४.३०
अपदातौ० ४.२.१३४
अप०मू० ८.३.५५
अप०व० १.४.८७
अपमित्य० ४.४.२१
अपरस्पराः ६.१.१३९
अपरिमाण० ४.१.२२
अपरिह्वृता० ७.२.३२
अपरोक्षे च ३.२.११९
अपवर्गे० २.३.६
अपस्करो० ६.१.१४४
अपस्पृधे० ६.१.३५
अपह्नवे० १.३.४४
अपाच्च ६.२.१८५
अपान्नतु० ६.१.१३७
अपादाने० ५.४.४५
अपादाने० २.३.२८
अपा०परी० ३.४.५२
अपाद्वदः १.३.७३
अपिःपदार्थ १.४.९५
अपूर्वपदा० ४.१.१४०
अपृक्तएका० १.२.४१
अपे क्लेः ३.२.५०
अपे च लषः ३.२.१४४
अपेतापोढ० २.१.३७
अपोनप्त्र० ४.२.२६
अप्पृक्तो भि ७.४.४८
अप्तृन् ६.४.११
अप्पूरणी० ५.४.११६
अ प्रत्य० ३.३.१०२
अप्लुत० ६.१.१२५
अभाषित० ७.३.४८
अभिजनश्च ४.३.९०
अभिजिद्० ५.३.११८
अभिज्ञा० ३.२.११२
अभिनिवि० १.४.४७
अभिनिष्क्रा० ४.३.८६
अभि० स्त० ८.३.८६
अभिप्रत्य० १.३.८०
अभिरभागे १.४.९०
अभिविधौ० ३.३.४४
अभिविधौ० ५.४.५३
अभेर्मुखम् ६.२.१८४
अभेश्चा० ७.२.२५
अभ्यमित्रा० ५.२.१७
अभ्यस्ता० ६.१.१८३

अभ्यासस्या० ६.४.७८
अभ्यासाच्च ७.३.५५
अभ्यासे० ८.४.५३
अभ्युत्साद० ३.१.४२
अमनुष्य० ३.२.५३
अमहन्नवं० ६.२.८९
अमावस्य० ३.१.१२२
अमावास्या० ४.३.३०
अमि पूर्वः ६.१.१०३
अमु च्छ० ५.४.१२
अमूर्धमस्त० ६.३.११
अमैवाव्य० २.२.२०
अमो मश् ७.१.४०
अम्नरूध० ८.२.७०
अम्बाम्ब० ८.३.९७
अम्बार्थ० ७.३.१०७
अम्संबु० ७.१.९९
अयःशूल० ५.२.७६
अयङ् यि० ७.४.२२
अयनं च ८.४.२४
अस्मयादीनि० १.४.२०
अयामन्ता० ६.४.५५
अरण्यान्० ४.२.१२८
अरिष्ट० ६.२.१००
अरुर्द्विष० ६.३.६६
अरुर्मन० ५.४.५१
अर्त्तिपिप० ७.४.७७
अर्तिलू० ३.२.१८४
अर्तिह्री ७.३.३६
अर्थवदधा० १.२.४५
अर्थे ६.२.४४
अर्थे विभाषा ६.३.९९
अर्देः संनि० ७.२.२४
अर्धं नपुं० २.२.२
अर्धर्चाः० २.४.३१
अर्धाच्च ५.४.१००
अर्धात्० ७.३.२६
अर्धाद्० ४.३.४
अर्मे चा० ६.२.९०
अर्यः स्वा० ३.१.१०३
अर्वणस्० ६.४.१२७
अर्शआं० ५.२.१२७
अर्हः ३.२.१२
अर्हःप्रशं० ३.२.१३३
अर्हे कृत्य० ३.३.१६९
अलंकृञ्० ३.२.१३६
अलंखल्वोः ३.४.१८
अलुगुत्तर० ६.३.१
अलोऽन्त्य० १.१.५१
अलोऽन्त्यात्० १.१.६४
अल्पाख्या० ५.४.१३६
अल्पाच्तर० २.२.३४
अल्पे ५.३.८५
अल्लोपो० ६.४.१३४
अवक्रयः ४.४.५०
अवक्षेपणे० ५.३.९५
अवङ्स्फो० ६.१.१२९
अवचक्षे० ३.४.१५
अवद्य० ३.१.१०१
अवपथा० ६.१.११७
अवयवाद्० ७.३.११
अवयवे० ४.३.१३३
अवयसि० ५.१.८३
अवयाःश्वे० ८.२.६७
अवसम० ५.४.७९
अवाच्चा० ८.३.६८
अवात् कुः ५.२.३०
अवाद् ग्रः १.३.५१
अवारपा० ५.२.११
अवृद्धादः ४.२.१२४
अवृद्धाभ्यो० ४.१.११३
अवेः कः ५.४.२८
अवे ग्रहो० ३.३.५१
अवे तॄस्त्रो० ३.३.१२०
अवे यजः ३.२.७२
अवोदैधौ० ६.४.२९
अवोदो० ३.३.२६
अव्यक्तानु० ६.१.९५
अव्यक्तानु० ५.४.५७
अव्ययं वि० २.१.६
अव्ययस० ५.३.७१
अव्ययात्० ४.२.१०३
अव्ययादा० २.४.८२
अव्ययीभावः २.१.५
अव्ययी० च० १.१.४०
अव्ययी० च० २.४.१८
अव्ययी० ४.३.५९
अव्ययीभावे० ६.३.८०
अव्ययीभावे ५.४.१०७
अव्ययेऽय० ३.४.५९
अव्यादव० ६.१.११२
अशनायो० ७.४.३४
अशब्दे यत्० ४.३.६४
अशाला च २.४.२४
अश्नोतेश्च ७.४.७२
अश्वक्षीर० ७.१.५१
अश्वपत्या० ४.१.८४
अश्वस्यैका० ५.२.१९
अश्वाघ० ७.४.३७
अश्वादिभ्यः ४.१.११०
अश्विमा० ४.४.१२६
अषडक्षा० ५.४.७
अषष्ठ्यतृ० ६.३.९८
अष्टन आ० ७.२.८४
अष्टन० ६.३.१२४
अष्टनो० ६.१.१६६
अष्टाभ्य० ७.१.२१
असंयोगा० १.२.५
असंज्ञायां ४.३.१४७
असमासे० ५.१.२०
अ साम्प्रतिके ४.३.९
असिद्धवद० ६.४.२२
असुरस्य० ४.४.१२३
असूर्य० ३.२.३६
अस्तं च १.४.६७
अस्तीति च ५.३.४०
अस्तिनास्ति० ४.४.६०
अस्तिसिचो० ७.३.९६
अस्तेर्भूः २.४.५२
अस्थिदधि० ७.१.७५
अस्मदो० १.२.५९
अस्मद्युत्तमः १.४.१०६
अस्माया० ५.२.१२१
अस्य च्वौ ७.४.३२
अस्यतितृ० ३.४.५७
अस्यतिव० ३.१.५२
अस्यतेस्थुक् ७.४.१७
अस्वाङ्ग० ४.१.५३
अहःसर्वै० ५.४.८७
अहंशुभ० ५.२.१४०
अहन् ८.२.६८
अहीने ६.२.४७
अहेति० ८.१.६१
अहो च ८.१.४०
अह्नष्ट० ६.४.१४५
अह्नोऽद० ८.४.७
अह्नोऽह्न० ५.४.८८
आकडारा० १.४.१
आकर्षात्० ४.४.९
आकर्षादि० ५.२.६४
आकालि० ५.१.११३
आक्रन्दाद्० ४.४.३८
आक्रोशे० ६.२.१५७
आक्रोशे० ३.३.११२
आक्रोशेऽ० ३.३.४५
आक्वेस्त० ३.२.१३४
आख्यातो० १.४.२९
आगवीनः ५.२.१४
आगस्त्य० २.४.७०
आग्रहाय० ४.२.२१
आङ उद्० १.३.४०
आङि चा० ७.३.१०५
आङि ता० ३.२.११
आङियुद्धे ३.३.७३
आङो दो० १.३.२०
आङो ना० ७.३.११९
आङोऽनु० ६.१.१२२
आङो यम० १.३.२८
आङो यि ७.१.६५
आङ्मर्या० २.१.१२

आङ् मर्या० १.४.८८
आङ्माङो० ६.१.७२
आच त्वात् ५.१.११९
आ च हौ ६.४.११७
आचार्यो० ६.२.१०४
आचार्यो० ६.२.३६
आच्छी० ७.१.८०
आज्जसे० ७.१.५०
आज्ञायिनि० ६.३.५
आटश्च ६.१.८७
आडजादी० ६.४.७२
आडुत्तम० ३.४.९२
आढकाचि० ५.१.५२
आढ्य० ३.२.५६
आण्नद्याः ७.३.११२
आत ऐ ३.४.९५
आत औ० ७.१.३४
आतः ३.४.११०
आतश्चो० ३.१.१३६
आतश्चो० ३.३.१०६
आतो ङितः ७.२.८१
आतोऽटि० ८.३.३
आतो धातोः ६.४.१४०
आतोऽनुप० ३.२.३
आतो मनि० ३.२.७४
आतो युक्० ७.३.३३
आतो युच् ३.३.१२८
आतो लोप० ६.४.६४
आत्मनश्च ६.३.६
आत्मनेपदे० ७.१.५
आत्मनेपदे० २.४.४४
आत्मनेपदे० ३.१.५४
आत्मन् वि० ५.१.९
आत्ममाने० ३.२.८३
आत्माध्वा० ६.४.१६९
आदराना० १.४.६२
आदाचार्या० ७.३.४९
आदिःप्रत्ये० ६.२.२७
आदिःसि० ६.१.१८१
आदिकर्म० ३.४.७१
आदितश्च ७.२.१६
आदिरन्त्ये० १.१.७०
आदिरुदात्तः ६.२.६४
आदिर्जि० १.३.५
आदिर्ण० ६.१.१८८
आदिश्चि० ६.२.१२४
आदृगम० ३.२.१७१
आदेःपरस्य १.१.५३
आदेच उ० ६.१.४४
आदेशप्र० ८.३.५९
आद्गुणः ६.१.८४
आद्यन्त० १.१.२०
आद्यन्तौ० १.१.४५
आद्युदात्तं० ६.२.११८
आद्युदात्तश्च ३.१.३
आधारोऽ० १.४.४५
आनङृतो० ६.३.२४
आनाय्यो० ३.१.१२७
आनि लोट् ८.४.१६
आने मुक् ७.२.८२
आन्महतः० ६.३.४५
आपत्यस्य० ६.४.१५१
आपो जुषा० ६.१.११४
आपोऽन्य० ७.४.१५
आप्नृष्यृ० ७.४.५५
आप्रपदं० ५.२.८
आबाधे च ८.१.१०
आभीक्ष्ण्ये० ३.४.२२
आम एका० ८.१.५५
आमः २.४.८१
आमन्त्रितं० ८.१.७२
आमन्त्रित० ६.१.१९२
आमन्त्रित० ८.१.१९
आमि सर्व० ७.१.५२
आमेतः ३.४.९०
आम्प्रत्यय० १.३.६३
आम्रेडितं० ८.२.९५
आयनेयी० ७.१.२
आयादय० ३.१.३१
आयुक्त० २.३.४०
आयुधजी० ४.३.९१
आयुधजी० ५.३.११४
आयुधाच्छ० ४.४.१४
आरगुदी० ४.१.१३०
आर्धधातु० ३.४.११४
आर्धधातु० ७.२.३५
आर्धधातुके ६.४.४६
आर्धधातुके २.४.३५
आर्यो ब्रा० ६.२.५८
आर्हादि० ५.१.१९
आलजा० ५.२.१२५
आवश्यका० ४.१.७५
आवश्य० ३.३.१७०
आवसथा० ४.४.७४
आशंसा० ३.३.१३२
आशंसाव० ३.३.१३४
आशङ्काबा० ६.२.२१
आशितः० ६.१.२०१
आशिते भु० ३.२.४५
आशिषि च ३.१.१५०
आशिषि० २.३.५५
आशिषि० ३.३.१७३
आशिषि ह० ३.२.४९
इणः षः ८.३.३९
इणः षीध्वं ८.३.७८
इणो गा० २.४.४५
इणोयण् ६.४.८१
इण्कोः ८.३.५७
इण्नश्० ३.२.१६३
इण्निष्ठा० ७.२.४७
इतराभ्यो० ५.३.१४
इतरेतरा० १.३.१६
इतश्च ३.४.१००
इतश्च लोपः० ३.४.९७
इतश्चानि० ४.१.१२२
इतोऽत्० ७.१.८६
इतो मनु० ४.१.६५
इत्थंभूत० २.३.२१
इत्थं भूतेन० ६.२.१४८
इदंकिमो० ६.३.८९
इदन्तो० ७.१.४६
इकोह्रस्वो० ६.३.६०
इगन्त० ६.२.२९
इगन्ता० ५.१.१३०
इगुपध० ३.१.१३५
इग्यणः० १.१.४४
इङश्च २.४.४८
इङश्च ३.३.२१
इङ्धार्योः ३.२.१३०
इच एका० ६.३.६७
इच्कर्म० ५.४.१२७
इच्छा ३.३.१०१
इच्छार्थेभ्यो ३.३.१६०
इच्छार्थेषु० ३.३.१५७
इजादेः० ८.४.३१
इजादेश्च० ३.१.३६
इञः प्राचाम् २.४.६०
इञश्च ४.२.१११
इट ईटि ८.२.२८
इटोऽत् ३.४.१०६
इट् सनि० ७.२.४१
इडत्यर्ति० ७.२.६६
इडाया वा ८.३.५४
इणः षः ८.३.३९
इणः षीध्वं ८.३.७८
इणो गा० २.४.४५
इणोयण् ६.४.८१
इण्कोः ८.३.५७
इण्नश्० ३.२.१६३
इण्निष्ठा० ७.२.४७
इतराभ्यो० ५.३.१४
इतरेतरा० १.३.१६
इतश्च ३.४.१००
इतश्च लोपः० ३.४.९७
इतश्चानि० ४.१.१२२
इतोऽत्० ७.१.८६
इतो मनु० ४.१.६५
इत्थंभूत० २.३.२१
इत्थं भूतेन० ६.२.१४८
इदंकिमो० ६.३.८९
इदन्तो० ७.१.४६

इदम इश् ५.३.३
इदमस्थ० ५.३.२४
इदमोऽन्वा० २.४.३२
इदमो मः ७.२.१०८
इदमोर्हिल् ५.३.१६
इदमो हः ५.३.११
इदितो० ७.१.५८
इदुदुप० ८.३.४१
इदुद्भ्याम् ७.३.११७
इदोऽय् ७.२.१११
इद् गोण्याः १.२.५०
इद्दरिद्र० ६.४.११४
इद् वृद्धौ ६.३.२७
इनःस्त्रि० ५.४.१५२
इनच्पिट० ५.२.३३
इनण्यन० ६.४.१६४
इनित्र० ४.२.५०
इन्द्रवरुण० ४.१.४९
इन्द्रिय० ५.२.९३
इन्द्रे च० ६.१.१२०
इन्धिभव० १.२.६
इन्हन्पू० ६.४.१२
इरयो रे ६.४.७६
इरितो वा ३.१.५७
इवे प्रति० ५.३.९६
इषुगमि० ७.३.७७
इष्टकेषी० ६.३.६४
इष्टादिभ्य० ५.२.८८
इष्ट्वीन० ७.१.४८
इष्ठस्य० ६.४.१५९
इसुसुक्० ७.३.५१
इसुसोः० ८.३.४४
इस्मन्० ६.४.९७
ई घ्राध्मोः ७.४.३१
ई च खनः ३.१.१११
ई च गणः ७.४.९७
ई च द्विव० ७.१.७७
ईडजनो० ७.२.७८
ईडवन्द० ६.१.२०८
ईदग्नेः० ६.३.२६
ईदासः ७.२.८३
ईदूतौ च० १.१.१८
ईदूदेद्० १.१.११
ईद्यति ६.४.६५
ईयसश्च ५.४.१५६
ईवत्याः ६.१.२१५
ईशः से ७.२.७७
ईश्वरे० ३.४.१३
ईषदकृता २.२.७
ईषदन्य० ६.२.५४
ईषदर्थे ६.३.१०४
ईषदस० ५.३.६७
ईषद्दुः० ३.३.१२६
ईहल्य० ६.४.११३
ईऽचाक्र० ६.१.१२६
उगवादि० ५.१.२
उगितश्च ४.१.६
उगितश्च ६.३.४४
उगिदचां० ७.१.७०
उग्रंपश्ये० ३.२.३७
उच्चैरुदात्तः १.२.२९
उच्चैस्० १.२.३५
उञ ऊँ १.१.१७
उञि च० ८.३.२१
उञ्छति ४.४.३२
उञ्छादी० ६.१.१५४
उणादयो० ३.३.१
उतश्च ६.४.१०६
उताप्योः ३.३.१५२
उतो वृ० ७.३.८९
उत्क उन्० ५.२.८०
उत्करादि० ४.२.८९
उत्तमै० ५.४.९०
उत्तरपथे० ५.१.७६
उत्तरपद० ६.२.१०५
उत्तरपदस्य ७.३.१०
उत्तरपदा० ६.२.११०
उत्तरमृग० ५.४.९८
उत्तराच्च ५.३.३८
उत्तराधर० ५.३.३४
उत्परस्या० ७.४.८८
उत्सादि० ४.१.८६
उद ईत् ६.४.१३९
उदः स्था० ८.४.६०
उदकस्यो० ६.३.५६
उदके० ६.२.९६
उदक् च० ४.२.७३
उदङ्को० ३.३.१२३
उदन्वानु० ८.२.१३
उदराट्० ५.२.६७
उदराश्वे० ६.२.१०७
उदश्चरः० १.३.५३
उदश्वि० ४.२.१८
उदात्तयणो० ६.१.१६८
उदात्तस्व० १.२.४०
उदात्तस्व० ८.२.४
उदात्तादनु० ८.४.६५
उदि कूले० ३.२.३१
उदि ग्रहः ३.३.३५
उदितो वा ७.२.५६
उदि श्रय० ३.३.४९
उदीचां० ३.४.१९
उदीचांवृ० ४.१.१५७
उदीचमा० ७.३.४६
उदीचामिञ् ४.१.१५३
उदीच्य० ४.२.१०८
उदुपधा० १.२.२१
उदोऽनू० १.३.२४
उदोष्ठ्य० ७.१.१०२
उद्घनो० ३.३.८०
उद्विभ्यां० ५.४.१४८
उद्विभ्यां तपः० १.३.२७
उन्योर्ग्रः ३.३.२९
उपकादि० २.४.६९
उपघ्न आ० ३.३.८५
उपजानू० ४.३.४०
उपज्ञाते ४.३.११५
उपज्ञोप० २.४.२१
उपदंश० ३.४.४७
उपदेशेऽज० १.३.२
उपदेशेऽत्वतः ७.२.६२
उपधायां० ८.२.७८
उपधाया० ७.१.१०१
उपपद० २.२.१९
उपपरा० १.३.३९
उपमानं० ६.२.८०
उपमानाच्च ५.४.१३७
उपमानाद० ५.४.९७
उपमानादा० ३.१.१०
उपमानानि० २.१.५४
उपमाने० ३.४.४५
उपमितं० २.१.५५
उपरिस्वि० ८.२.१०२
उपर्यध्य० ८.१.७
उपर्युप० ५.३.३१
उपसंवा० ३.४.८
उपसर्ग० ८.३.८७
उपसर्गाव्य० ८.१.३८
उपसर्गस्य ६.३.१२१
उपसर्गस्या ८.२.१९
उपसर्गाच्च ५.४.११९
उपसर्गा० ५.१.११७
उपसर्गात्० ७.१.६७
उपसर्गात्० ८.३.६५
उपसर्गात्० ६.२.१७६
उपसर्गाद० ५.४.८५
उपसर्गाद० ८.४.१४
उपसर्गाद्० ६.१.८८
उपसर्गाद्० ७.४.२३
उपसर्गाद्० ८.४.२७
उपसर्गे घोः० ३.३.९२
उपसर्गेच० ३.२.९९
उपसर्गेऽदः ३.३.५९
उपसर्गे रुवः ३.३.२२
उपसर्जनं० २.२.३०
उपसर्या० ३.१.१०४
उपाच्च १.३.८४
उपाजे० १.४.७२
उपात्० ६.१.१३४
उपात् प्रशं० ७.१.६६

उपाद्द्वय०	६.२.१९३	ऊर्ध्वाद्०	५.४.१३०	एकवचनस्य०	७.१.३२	एरनेकाचो०	६.४.८२
उपाद्यमः०	१.३.५६	ऊर्ध्वे शु०	३.४.४४	एकविभ०	१.२.४४	एरुः	३.४.८६
उपाधिभ्यां०	५.२.३४	ऊर्यादिच्वि०	१.४.६०	एकशाला०	५.३.१०९	एर्लिङि	६.४.६७
उपान्मन्त्र०	१.३.२५	ऊषसुषि०	५.२.१०७	एकश्रुति०	१.२.३३	एहिमन्ये०	८.१.४६
उपान्वध्या०	१.४.४८	ऋक्पू०	५.४.७४	एकस्य०	५.४.१९	ऐकागारि०	५.१.११२
उपेयिवा०	३.२.१०९	ऋचः शे	६.३.५४	एकहला०	६.३.५८	ऐषमो०	४.२.१०४
उपोत्तमं०	६.१.२११	ऋचि तुनु०	६.३.१३२	एकाच उप०	७.२.१०	ओःपुयण्०	७.४.८०
उपोऽधि०	१.४.८६	ऋच्छत्यृ०	७.४.११	एकाचो द्वे०	६.१.१	ओः सुपि	६.४.८३
उभे च	४.३.४४	ऋणमा०	८.२.६०	एकाचोबशो०	८.२.३७	ओकउचः०	७.३.६४
उभयथर्क्षु	८.३.८	ऋत उत्	६.१.१०७	एकाच्च०	५.३.९४	ओजःसहो०	४.४.२७
उभयप्राप्तौ०	२.३.६६	ऋतश्च	७.४.९२	एकाजुत्तर०	८.४.१२	ओजःसहो०	६.३.३
उभादुदा०	५.२.४४	ऋतश्च सं०	७.२.४३	एकादाकि०	५.३.५२	ओजसोऽ	४.४.१३०
उभे अभ्य०	६.१.५	ऋतश्च सं०	७.४.१०	एकादिश्चैो०	६.३.७५	ओत्	१.१.१५
उभे वन०	६.२.१३९	ऋतश्छन्द०	५.४.१५८	एकादेश०	८.२.५	ओतः श्यनि	७.३.७१
उभौ सा०	८.४.२०	ऋतष्ठञ्	४.३.७८	एकाद्धो ध्य०	५.३.४४	ओतो गार्ग्य०	८.३.२०
उमोर्णयो०	४.३.१५६	ऋतेरीयङ्	३.१.२९	एकान्या०	८.१.६५	ओदितश्च	८.२.४५
उरःप्रभृ०	५.४.१५१	ऋतो ङि०	७.३.११०	एको गोत्रे	४.१.९३	ओमभ्या०	८.२.८७
उरण्०	१.१.५०	ऋतोऽञ्	४.४.४९	एङः प०	६.१.१०५	ओमाङोश्च	६.१.९२
उरत्	७.४.६६	ऋतो भार०	७.२.६३	एङि पर०	६.१.९१	ओरञ्	४.२.७०
उरसोऽण्०	४.४.९४	ऋतोरण्	५.१.१०४	एङ् प्राचां०	१.१.७४	ओरञ्	४.३.१३७
उरसो यः०	४.३.११४	ऋतो विः०	६.३.२२	एङ् ह्रस्वा०	६.१.६७	ओराव०	३.१.१२५
उर्ऋत्	७.४.७	ऋत्यकः	६.१.१२४	एच इग्०	१.१.४७	ओर्गुणः	६.४.१४६
उश्च	१.२.१२	ऋत्विग्द०	३.२.५९	एचोऽप्र०	८.२.१०७	ओर्देशे०	४.२.११८
उषविद०	३.१.३८	ऋत्व्य०	६.४.१७५	एचोऽय०	६.१.७५	ओषधेर०	५.४.३७
उषासो०	६.३.३०	ऋदुपधा०	३.१.११०	एजेः खश्	३.२.२८	ओषधैश्च०	६.३.१३१
उष्टूः०	६.२.४०	ऋदुशन०	७.१.९४	एण्या ढञ्	४.३.१५७	ओसि च	७.३.१०४
उष्ट्राद्०	४.३.१५५	ऋदृशोऽङि०	७.४.१६	एत ईद्०	८.२.८१	औक्षमन०	६.४.१७३
उस्यपद०	६.१.९३	ऋद्धनोः०	७.२.७०	एत ऐ	३.४.९३	औङ आपः	७.१.१८
ऊकालो०	१.२.२७	ऋन्नेभ्यो०	४.१.५	एतत्तदोः०	६.१.१२८	औतोऽम्०	६.१.९०
ऊडुतः	४.१.६६	ऋषभो०	५.१.१४	एतदस्त्र०	२.४.३३	औदच्च०	७.३.११८
ऊडिदम्०	६.१.१६५	ऋष्यन्ध०	४.१.११४	एतदोऽन्	५.३.५	कःकरत्०	८.३.५०
ऊतियूति०	३.३.९७	ऋहलो०	३.१.१२४	एति संज्ञा०	८.३.९९	कंशंभ्यां०	५.२.१३८
ऊदनो०	६.३.९७	ऋत इद्०	७.१.१००	एतिस्तु०	३.१.१०९	कंसमन्थ०	६.२.१२१
ऊदुपधा०	६.४.८९	ऋदोरप्	३.३.५७	एतेतौ०	५.३.४	कंसाट्ठिठन्०	५.१.२५
ऊथसो०	५.४.१३१	एकः पूर्व०	६.१.८१	एतेर्लिङि	७.४.२४	कंसीय०	४.३.१५६
ऊनार्थ०	६.२.१५२	एकगो०	५.२.११८	एत्येध०	६.१.८६	ककुदस्या०	५.४.१४६
ऊरूत्तर०	४.१.६९	एकतद्धि०	६.३.६१	एधाच्च	५.३.४६	कच्छाग्नि०	४.२.१२५
ऊर्णाया०	५.२.१२३	एकधुरा०	४.४.७९	एनपा द्वि०	२.३.३१	कच्छादि०	४.२.१३२
ऊर्णोति०	७.३.९०	एकं बहु०	८.१.९	एनबन्य०	५.३.३५	कठचर०	४.३.१०७
ऊर्णोति०	७.२.६	एकवचनं०	२.३.४९	एरच्	३.३.५६	कठिनान्त०	४.४.७२

कडङ्कर० ५.१.६८
कडाराः० २.२.३८
कणेमनसी० १.४.६५
कण्ठपृष्ठ० ६.२.११३
कण्ड्वादि० ३.१.२७
कण्वादि० ४.२.११०
कतर० कर्म० ६.२.५७
कतर० जाति० २.१.६२
कत्र्यादि० ४.२.९४
कथादि० ४.४.१०२
कद्रुकम० ४.१.७१
कन्था च ६.२.१२३
कन्थापल० ४.२.१४१
कन्थाया० ४.२.१०१
कन्यायाः० ४.१.११६
कपिञ्जा० ५.१.१२६
कपि पूर्वम् ६.२.१७२
कपिबोधा ४.१.१०७
कपिष्ठलो० ८.३.९१
कमेर्णिङ् ३.१.३०
कम्बला० ५.१.३
कम्बोजा० ४.१.१७३
करणाधि० ३.३.११७
करणे च० २.३.३३
करणे यजः ३.२.८५
करणेऽयो० ३.३.८२
करणे हनः ३.४.३७
कर्कलो० ५.३.११०
कर्णलला० ४.३.६५
कर्णे लक्ष० ६.३.११४
कर्णो वर्ण० ६.२.१११
कर्तरि कर्म० १.३.१४
कर्तरि कृत् ३.४.६७
कर्तरि च २.२.१६
कर्तरिचर्षि० ३.२.१८६
कर्तरि भुवः ३.२.५७
कर्तरि शप् ३.१.६८
कर्तर्युप० ३.२.७९
कर्तुःक्यङ्० ३.१.११
कर्तुरीप्सि० १.४.४९
कर्तृकरण० २.३.१८
कर्तृकरणे० २.१.३१
कर्तृकर्म० २.३.६५
कर्तृकर्म० ३.३.१२७
कर्तृस्थे० १.३.३७
कर्त्रो० ३.४.४३
कर्मण उकञ् ५.१.१०२
कर्मणायम० १.४.३२
कर्मणि घ० ५.२.३५
कर्मणि च २.२.१४
कर्मणि च० ३.३.११६
कर्मणि दृ० ३.४.२९
कर्मणि द्वि० २.३.२
कर्मणि भृतौ ३.२.२२
कर्म०हनः ३.२.८६
कर्मणीनि० ३.२.९३
कर्मणो रो० ३.१.१५
कर्मण्यग्न्या० ३.२.९२
कर्मण्यण् ३.२.१
कर्मण्यधि० ३.३.९३
कर्मण्याको० ३.४.२५
कर्मधारय० ८.१.११
कर्मधारये० ६.२.४६
कर्मन्दकृ० ४.३.१११
कर्मप्रवच० २.३.८
कर्मप्रवच० १.४.८२
कर्मवत्० ३.१.८७
कर्मवेषाद्० ५.१.९९
कर्मव्यति० ३.३.४३
कर्माध्यय० ४.४.६३
कर्षात्वतो० ६.१.१५३
कलापिनो० ४.३.१०८
कलापिवै० ४.३.१०४
कलाप्यश्व० ४.३.४८
कल्याण्या० ४.१.१२६
कवं चोष्णे ६.३.१०६
कव्यध्वर० ७.४.३९
कव्यपुरी० ३.२.६५
कषादिषु० ३.४.४६
कष्टाय० ३.१.१४
कस्कादि० ८.३.४८
कस्य च दः ५.३.७२
कस्येत् ४.२.२४
काण्डाण्डा० ५.२.१११
काण्डान्ता० ४.१.२३
कानाम्रेडिते ८.३.१२
का पथ्य० ६.३.१०३
कापिश्याः० ४.२.९८
कामप्रवे० ३.३.१५३
काम्यच्च ३.१.९
कारकाद् ६.२.१४७
कारके १.४.२३
कारनाम्नि० ६.३.९
कारेसत्या० ६.३.६९
कार्तकौ० ६.२.३७
कार्मस्ता० ६.४.१७२
कालप्रयो० ५.२.८१
कालविभा० ३.३.१३७
कालसमय० ३.३.१६७
कालाः २.१.२७
कालाःपरि० २.२.५
कालाच्च ५.४.३३
कालाट्ठञ् ४.३.११
कालात् ५.१.७७
कालात्साधु० ४.३.४३
कालाद्यत् ५.१.१०६
कालाध्वनो० २.३.५
कालेभ्यो० ४.२.३३
कालोपस० १.२.५७
काश्यप० ४.३.१०३
काश्यादि० ४.२.११५
कासूगोणी० ५.३.९०
कास्तीरा० ६.१.१५०
कास्प्रत्य० ३.१.३५
किंयत्तदो० ५.३.९२
किंवृत्तं च० ८.१.४८
किंवृत्ते लि० ३.३.१४४
किंवृत्तेलिप्सा० ३.३.६
किंसर्वनाम० ५.३.२
किंकिला० ३.३.१४६
किंक्रिया० ८.१.४४
किं क्षेपे २.१.६३
कितः ६.१.१५९
किति च ७.२.११८
किदाशिषि ३.४.१०४
किमःकः ७.२.१०३
किमःक्षेपे ५.४.७०
किमःसं० ५.२.४१
किमश्च ५.३.२५
किमिदंभ्यां ५.२.४०
किमेत्तिङ० ५.४.११
किमोऽत् ५.३.१२
किरतौ० ६.१.१३५
किरश्च० ७.२.७५
किशरा० ४.४.५३
कुगति० २.२.१८
कुटीशमी० ५.३.८८
कुण्डं वनम् ६.२.१३५
कु तिहोः ७.२.१०४
कुत्वा डुपच् ५.३.८९
कुत्सने० ८.१.६९
कुत्सितानि० २.१.५२
कुत्सिते ५.३.७४
कुप्वोः० ८.३.३७
कुमति च ८.४.१३
कुमहद्० ५.४.१०५
कुमारः० २.१.६९
कुमारशी० ३.२.५१
कुमारश्च ६.२.२६
कुमार्यां० ६.२.९५
कुमुद० ४.२.८६
कुम्भपदी० ५.४.१३९
कुरुगार्ह० ६.२.४२
कुरुनादि० ४.१.१७०
कुर्वादि० ४.१.१५१
कुलकुक्षि० ४.२.९५
कुलटाया० ४.१.१२७
कुलत्थ० ४.४.४
कुलात्खः ४.१.१३९
कुलाला० ४.३.११८

कुलिजा० ५.१.५४
कुल्माषा० ५.२.८३
कुशाग्रा० ५.३.१०५
कुषिरजोः० ३.१.९०
कुसीद० ४.४.३१
कुसूल० ६.२.१०२
कुस्तुम्बु० ६.१.१३८
कुहोश्चुः ७.४.६२
कूलतीर० ६.२.१२०
कूलसूद० ६.२.१२८
कृकण० ४.२.१४४
कृच्छ्रगहन० ७.२.२२
कृञः प्रति० २.३.५३
कृञः श च ३.३.१००
कृञो द्वि० ५.४.५८
कृञो हेतु० ३.२.२०
कृञ्चानु० ३.१.४०
कृतलब्ध० ४.३.३८
कृते ग्रन्थे ४.३.११६
कृत्तद्धित० १.२.४६
कृत्यचः ८.४.२८
कृत्यतुल्या० २.१.६७
कृत्यल्युः ३.३.११३
कृत्याः ३.१.९५
कृत्यानां० २.३.७१
कृत्यार्थे० ३.४.१४
कृत्याश्च ३.३.१७१
कृत्यैरधि० २.१.३२
कृत्यैर्ऋणे २.१.४२
कृत्योकेः० ६.२.१५९
कृत्वोऽर्थ० २.३.६४
कृदतिङ् ३.१.९३
कृन्मेजन्तः १.१.३८
कृपो रो लः ८.२.१८
कृभ्वस्ति० ५.४.५०
कृमृदृ० ३.१.५९
कृषेश्छन्द० ७.४.६४
कृसृभृवृ० ७.२.१३
कॄ धान्ये ३.३.३०
केकय० ७.३.२
केऽणः ७.४.१३
केदाराद्० ४.२.३९
केवल० ४.१.३०
केशाद्वो० ५.२.१०९
केशाश्वा० ४.२.४७
कोः कत्० ६.३.१००
कोपधाच्च ४.२.७८
कोपधाच्च ४.३.१३५
कोपधादण् ४.२.१३१
कोशाड्ढञ् ४.३.४२
कौमारा० ४.२.१२
कौरव्य० ४.१.१९
कौसल्य० ४.१.१५५
क्ङिति च १.१.५
क्तक्तवतू० १.१.२५
क्तस्य च० २.३.६७
क्तादल्पा० ४.१.५१
क्तिच्क्तौ० ३.३.१७४
क्ते च ६.२.४५
क्तेन च पू० २.२.१२
क्तेन नञ् २.१.५९
क्तेनाहोरा० २.१.४४
क्ते नित्यार्थे ६.२.६१
क्तोऽधिकर० ३.४.७६
त्रेर्मम्नित्यम्० ४.४.२०
क्त्वा च २.२.२२
क्त्वातोसुन्० १.१.३९
क्त्वापि छ० ७.१.३८
क्त्वि स्कन्दि० ६.४.३१
क्त्वो यक् ७.१.४७
क्यङ्मानि० ६.३.३५
क्यचि च ७.४.३३
क्यच्व्योश्च ६.४.१५२
क्यस्य वि० ६.४.५०
क्याच्छन्० ३.२.१७०
क्रतुयज्ञे० ४.३.६८
क्रतूक्था० ४.२.५९
क्रतौ कुण्ड० ३.१.१३०
क्रत्वादयश्च ६.२.११७
क्रमः परः० ७.३.७६
क्रमश्च० ६.४.१८
क्रमादिभ्यो० ४.२.६०
क्रय्यस्० ६.१.७९
क्रव्ये च ३.२.६९
क्रियार्थो० २.३.१४
क्रियासमभि० ३.४.२
क्रीङ्जीनां० ६.१.४७
क्रीडोऽनु० १.३.२१
क्रीतवत्० ४.३.१५४
क्रीतात्० ४.१.५०
क्रुधद्रुहे० १.४.३७
क्रुधद्रुहो० १.४.३८
क्रुधमण्डा० ३.२.१५१
क्रौड्यादि० ४.१.८०
क्रयादिभ्यः० ३.१.८१
क्लिशः क्त्वा० ७.२.५०
क्वणो वीणा० ३.३.६५
क्वसुश्च ३.२.१०७
क्वाति ७.२.१०५
क्विन्प्रत्य० ८.२.६२
क्विप् च ३.२.७६
क्षत्राद् घः ४.१.१३८
क्षयो निवासे ६.१.१९५
क्षय्यजय्यौ० ६.१.७८
क्षायो मः ८.२.५३
क्षिप्रवच० ३.३.१३३
क्षियः ६.४.५९
क्षियाशीः० ८.२.१०४
क्षियो दी० ८.२.४६
क्षीराड्ढञ् ४.२.१९
क्षुद्रजन्तवः २.४.८
क्षुद्राभ्यो वा ४.१.१३१
क्षुद्राभ्रमर० ४.३.११९
क्षुब्धस्वान्त० ७.२.१८
क्षुभ्नादिषु च ८.४.३८
क्षुल्लकश्च० ६.२.३९
क्षेत्रियच्० ५.२.९२
क्षेपे २.१.४६
क्षेमप्रिय० ३.२.४४
क्ष्मस्याचि ७.३.७२
खः सर्व० ४.४.७८
ख च ४.४.१३२
खचि ह्रस्वः ६.४.९४
खट्वा क्षेपे २.१.२५
खण्डिकादि० ४.२.४४
खनो घ च ३.३.१२५
खरवसान० ८.३.१५
खरि च ८.४.५४
खलगोरथात् ४.२.४९
खलयव० ५.१.७
खार्या ईकन् ५.१.३३
खार्याः प्राः ५.४.१०१
खित्यन० ६.३.६५
खिदेश्छ० ६.१.५१
ख्यत्यात्० ६.१.१०८
गतिकारको० ६.२.१३८
गतिबुद्धि० १.४.५२
गतिरनन्तरः ६.२.४९
गतिर्गतौ ८.१.७०
गतिश्च १.४.५९
गत्यर्थकर्म० २.३.१२
गत्यर्थलो० ८.१.५१
गत्यर्थाक० ३.४.७२
गत्वरश्च ३.२.१६४
गदमद० ३.१.१००
गन्तव्यप० ६.२.१३
गन्धनावक्षे० १.३.३२
गन्धस्येदु० ५.४.१३५
गमः क्वौ ६.४.४०
गमश्च ३.२.४७
गमहन० ६.४.९८
गमेरिट्० ७.२.५८
गम्भीरा० ४.३.५८
गर्गादिभ्यो० ४.१.१०५
गर्तोत्तर० ४.२.१३६

गर्हायां च ३.३.१४९
गर्हायां ल० ३.३.१४२
गवाश्वप्र० २.४.११
गवियुधि० ८.३.९५
गस्थकन् ३.१.१४६
गहादिभ्य० ४.२.१३७
गाङ्कुटादि० १.२.१
गाङ् लिटि २.४.४९
गाण्ड्य० ५.२.११०
गातिस्था० २.४.७७
गाथिविद० ६.४.१६५
गाधलवण० ६.२.४
गापोष्टक् ३.२.८
गिरेश्च० ५.४.११२
गुडादिभ्य० ४.४.१०३
गुणवचन० ५.१.१२३
गुणोऽपृक्ते ७.३.९१
गुणो यङ्० ७.४.८२
गुणोऽर्ति० ७.४.२९
गुपूधूप० ३.१.२८
गुपेश्छ० ३.१.५०
गुप्तिज्किद्० ३.१.५
गुरोरनृ० ८.२.८६
गुरोश्च० ३.३.१०३
गृधिव० १.३.६९
गृष्ट्यादि० ४.१.१३६
गृहपतिना० ४.४.९०
गेहे कः ३.१.१४४
गोः पादान्ते ७.१.५७
गोचर० ३.३.११९
गोतन्ति० ६.२.७८
गोतो णित् ७.१.९०
गोत्रक्षत्रि० ४.३.९९
गोत्रचरणा० ५.१.१३३
गोत्रचरणा० ४.३.१२६
गोत्रस्त्रियाः० ४.१.१४७
गोत्रादङ्० ४.३.८०
गोत्राद्यून्य० ४.१.९४
गोत्रान्ते० ६.२.६९
गोत्रावयवात् ४.१.७९
गोत्रे कुञ्जा० ४.१.९८
गोत्रेऽलुगचि ४.१.८९
गोत्रोक्षो० ४.२.३८
गोद्व्यचो० ५.१.३८
गोधाया० ४.१.१२९
गोपयसो० ४.३.१५८
गोपुच्छा० ४.४.६
गोबिडाल० ६.२.७२
गोयवा० ४.२.१३५
गोरतद्धि० ५.४.९२
गोश्च पु० ४.३.१४३
गोषदादि० ५.२.६२
गोष्ठात्० ५.२.१८
गोष्पदं० ६.१.१४०
गोस्त्रियो० १.२.४८
गौः साद० ६.२.४१
ग्रन्थान्ता० ६.३.७८
ग्रसित० ७.२.३४
ग्रहवृदृ० ३.३.५८
ग्रहिज्या० ६.१.१६
ग्रहोऽलिटि० ७.२.३७
ग्रामः शि० ६.२.६२
ग्रामकौ० ५.४.९५
ग्रामजन० ४.३.७
ग्राम०तल् ४.२.४२
ग्रामात् पर्य० ४.३.६१
ग्रामाद् य० ४.२.९३
ग्रामेऽनि० ६.२.८४
ग्राम्यपशु० १.२.७३
ग्रीवाभ्यो० ४.३.५७
ग्रीष्मवस० ४.३.४६
ग्रीष्मावर० ४.३.४९
ग्रो यङि ८.२.२०
ग्लाजि० ३.२.१३९
घकाल० ६.३.१६
घच्छौ च ४.४.११७
घञः सास्यां० ४.२.५७
घञपोश्च २.४.३८
घञि च० ६.४.२७
घनिलचौ० ५.३.७९
घरूपकल्प० ६.३.४२
घसिभसो० ६.४.१००
घुमास्था० ६.४.६६
घुषिरवि० ७.२.२३
घेर्डिति ७.३.१११
घोर्लोपो० ७.३.७०
घोषादिषु च ६.२.८५
घ्वसोरेद्धा० ६.४.११९
ङमो ह्र० ८.३.३२
ङयि च ६.१.२०६
ङसिङसो० ६.१.११०६
ङसिङ्योः ७.१.१५
ङिच्च १.१.५२
ङिति ह्र० १.४.६
ङेप्रथम० ७.१.२८
ङेराम्० ७.३.११६
ङेर्यः ७.१.१३
ङ्णोःकुक्० ८.३.२८
ङ्यापोः० ६.३.६२
ङ्याप्प्राति० ४.१.१
ङ्याश्छ० ६.१.१७२
चक्षिङः० २.४.५४
चङि ६.१.११
चङन्यन्य० ६.१.२१२
चजोः कु० ७.३.५२
चटकाया० ४.१.१२८
चतुरः शसि ६.१.१६१
चतुरनडु० ७.१.९८
चतुर्थी चा० २.३.७३
चतुर्थी तदर्था० २.१.३५
चतुर्थी तदर्थे ६.२.४३
चतुर्थी सम्प्र० २.३.१३
चतुर्थ्यर्थे० २.३.६२
चतुष्पादो० २.१.७०
चतुष्पाद्० ४.१.१३५
चनचिदिव० ८.१.५७
चरणे ब्रह्म० ६.३.८५
चरणेभ्यो० ४.२.४५
चरति ४.४.८
चरफलोश्च ७.४.८७
चरेष्टः ३.२.१६
चर्मणोऽञ् ५.१.१५
चर्मोदर० ३.४.३१
चलनश० ३.२.१४८
चवायोगे० ८.१.५९
चादयोऽसत्त्वे १.४.५७
चादिलोपे० ८.१.६३
चादिषु च ८.१.५८
चायःकी ६.१.२१
चायःकी ६.१.३४
चार्थे द्वन्द्वः २.२.२९
चाहलोप० ८.१.६२
चिणो लुक् ६.४.१०४
चिण्णमुलो० ६.४.९३
चिण्ते पदः ३.१.६०
चिण्भाव० ३.१.६६
चितः ६.१.१५७
चितेः कपि ६.३.१२६
चित्तवति० ५.१.८८
चित्याग्नि० ३.१.१३२
चित्रीकरणे० ३.३.१५०
चिदिति० ८.२.१०१
चिन्तिपूजि० ३.३.१०५
चिस्फुरोः ६.१.५३
चीरमुप० ६.२.१२६
चुटू १.३.७
चूर्णादिनिः ४.४.२३
चूर्णादीन्य० ६.२.१३३
चेलखेट० ६.२.१२५
चेलेक्नोपेः ३.४.३३
चोः कुः ८.२.३०
चौ ६.१.२१६

चौ	६.३.१३७	छात्र्यादयः०	६.२.८६	जात्वपूर्वम्	८.१.४७	झल्युपो०	६.१.१७४
च्छोः शूड०	६.४.१९	छादेर्घे०	६.४.९६	जानपद०	४.१.४२	झषस्तथो०	८.२.४०
च्लि लुङि	३.१.४३	छाया बाहु०	२.४.२२	जान्तनशां०	६.४.३२	झस्य रन्	३.४.१०५
च्लेःसिच्	३.१.४४	छे च	६.१.७१	जायाया निङ्	५.४.१३४	झेर्जुस्	३.४.१०८
च्वौ च	७.४.२६	छेदादिभ्यो०	५.१.६३	जालमानायः	३.३.१२४	झोऽन्तः	७.१.३
छगलिनो०	४.३.१०९	जक्षित्या०	६.१.६	जासिनिप्र०	२.३.५६	ञितश्च०	४.३.१५३
छ च	४.२.२७	जङ्गल०	७.३.२५	जिघ्रतेर्वा	७.४.६	ञीतः क्तः	३.२.१८७
छत्रादिभ्यो०	४.४.६२	जनपद०	४.२.१२३	जिदृक्षिवि०	३.२.१५७	ञ्नित्यादि०	६.१.१९१
छदिरुपधि०	५.१.१३	ज०शब्दा०	४.१.१६६	जिह्वामूला०	४.३.६२	ञ्यादयः	५.३.११९
छन्दसि ग०	३.३.१२९	ज०जन०	४.३.१००	जीर्यते०	३.२.१०४	टाङसि०	७.१.१२
छ०घस्	५.१.१०५	ज०लुप्	४.२.८०	जीवति०	४.१.१६३	टाबृचि	४.१.९
छन्दसि च	५.१.६६	जनसन०	३.२.६७	जीविकार्थे०	५.३.९९	टिड्ढा०	४.१.१५
छन्दसि च	५.४.१४२	जनसन०	६.४.४२	जीविकोप०	१.४.७८	टित आत्म०	३.४.७९
छन्दसि च	६.३.१२५	जनिकर्तुः०	१.४.३०	जुचङक्रं०	३.२.१५०	टेः	६.४.१४३
छ०ठञ्	४.३.१९	जनिता मन्त्रे	६.४.५३	जुष्टार्पिते०	६.१.२०३	टेः	६.४.१५५
छ०निष्ट०	३.१.१२३	जनिवध्यो०	७.३.३५	जुसि च०	७.३.८३	ट्वितो०	३.३.८९
छ०परि०	५.२.८९	जपजभ०	७.४.८६	जुहोत्या०	२.४.७५	ठक्छौ च	४.२.८३
छ०परेऽपि	१.४.८०	जम्ब्वा वा	४.३.१६३	जृव्रश्च्योः०	७.२.५५	ठगाय०	४.३.७५
छ०पुन०	१.२.६१	जम्भासु०	५.४.१२५	जृस्तम्भु०	३.१.५८	ठञ्कव०	४.२.४०
छ०लिट्	३.२.१०५	जयःकरणम्	६.१.१९६	जे प्रोष्ठ०	७.३.१८	ठस्येकः	७.३.५०
छ०लुङ्लङ्०	३.४.६	जराया०	७.२.१०१	ज्ञाजनोर्जा	७.३.७९	ठाजादा०	५.३.८३
छ०वन०	३.२.२७	जल्पभिक्ष०	३.२.१५५	ज्ञाश्रुस्मृ०	१.३.५७	डःसि धुट	८.३.२९
छ०वाप्राप्रे०	८.३.४९	जश्शसोः शिः	७.१.२०	झोऽविद०	२.३.५१	डति च	१.१.२४
छ०शायज०	३.१.८४	जसः शी	७.१.१७	ज्य च	५.३.६१	डाबुभाभ्या०	४.१.१३
छ०सहः	३.२.६३	जसि च	७.३.१०९	ज्यश्च	६.१.४१	ड्वितः०	३.३.८८
छन्दसीरः	८.२.१५	जहातेश्च	६.४.११६	ज्यादादी०	६.४.१६०	ढकि लोपः	४.१.१३३
छ०निर्मिते	४.४.९३	ज०क्त्वि	७.४.४३	ज्योतिरायु०	८.३.८३	ढक्व मण्डू०	४.१.११९
छ०यदणौ	४.३.७१	जागरुकः	३.२.१६५	ज्यो०जन०	६.३.८४	ढश्छन्दसि	४.४.१०६
छन्दस्यने०	८.१.३५	जाग्रोऽवि०	७.३.८५	ज्योत्स्ना०	५.२.११४	ढे लोपो०	६.४.१४७
छ०दृश्यते	६.४.७३	जातरूपे०	४.३.१५१	ज्वरत्वर०	६.४.२०	ढो ढे लोपः०	८.३.१३
छ०दृश्यते	७.१.७६	जातिकाल०	६.२.१६९	ज्वलिति०	३.१.१४०	ढ्रलोपे०	६.३.११०
छन्दस्यु०	३.४.११७	जातिनाम्नः०	५.३.८१	झयः	५.४.१११	णचःस्त्रिया०	५.४.१४
छन्दस्यु०	६.४.५	जातिरप्रा०	२.४.६	झयः	८.२.१०	णलुत्तमो०	७.१.९१
छन्दस्यृद०	८.४.२५	जातुयदो०	३.३.१४७	झयो होऽ०	८.४.६१	णिचश्च	१.३.७४
छन्दोगौ०	४.३.१२९	जातेरस्त्री०	४.१.६३	झरो झरि०	८.४.६४	णिजां त्रया०	७.४.७५
छन्दोना०	३.३.३४	जातेश्च	६.३.४०	झलां जशो०	८.२.३९	णिनि	६.२.७९
छन्दोना०	८.३.९४	जात्यन्ता०	५.४.९	झलां जश्	८.४.५२	णिश्रिद्रुस्रु०	३.१.४८
छ०ब्राह्म०	४.२.६५	जात्याख्या०	१.२.५८	झलो झलि	८.२.२६	णेरणौ यत्	१.३.६७

णेरध्ययने० ७.२.२६
णेरनिटि ६.४.५१
णेर्विभाषा ८.४.२९
णेश्छन्दसि ३.२.१३७
णो नः ६.१.६३
णौ गमिर० २.४.४६
णौ चङ्युप् ७.४.१
णौ च संश्च० २.४.५१
णौ च संश्च० ६.१.३१
ण्यआवश्य० ७.३.६५
ण्यक्षत्रि० २.४.५८
ण्यासश्र० ३.३.१०७
ण्युट् च ३.१.१४७
ण्वुल्तृचौ ३.१.१३३
तङानावा० १.४.९९
तत आगतः ४.३.७४
तत्पुरुषः २.१.२१
त०समाना० १.२.४२
तत्संङ्ख्याव्ययादेः ५.४.८६
त०कृति ६.३.१३
तत्पु०तुल्यार्थ० ६.२.२
त०शाला० ६.२.१२२
तत्पुरुषो० २.४.१९
तत्प्रकृत० ५.४.२१
तत्प्रत्यनु० ४.४.२८
तत्प्रत्ययस्य च० ७.३.२९
तत्प्रयोजको० १.४.५५
तत्र २.१.४५
तत्र चकुशलः० ५.२.६३
तत्र दीयते० ५.१.९५
तत्र जातः ४.३.२५
तत्र तस्येव ५.१.११५
तत्र तेनेद० २.२.२७
तत्र नियुक्तः ४.४.६९
तत्र भवः ४.३.५३
तत्र विदित० ५.१.४२
तत्र साधुः ४.४.९८
तत्रोद्धृत० ४.२.१३
तत्रोपपदं० ३.१.९२
तत्सवादेः० ५.२.७
तथायुक्तं० १.४.५०
तदधीते० ४.२.५८
तद०वचने ५.४.५४
तदर्थं० ५.१.१२
तदर्हति ५.१.६२
तदर्हम् ५.१.११६
तदशिष्यं० १.२.५३
तदस्मिन्नधिक० ५.२.४५
तदस्मिन्नन्नं ५.२.८२
तदस्मिन्नस्ती० ४.२.६६
तदस्मिन्० ५.१.४६
तदस्मै दी० ४.४.६६
तदस्य तद० ५.१.१६
तदस्यपण्यम् ४.४.५१
तदस्य परि० ५.१.५६
त०ब्रह्म० ५.१.९३
तदस्य सं० ५.२.३६
तदस्यसोढम् ४.३.५२
तदस्यांप्रह० ४.२.५६
तदस्यास्त्य० ५.२.९४
तदोः सः० ७.२.१०६
तदो दा च ५.३.१९
तद्गच्छति० ४.३.८५
तद्धरति० ५.१.४९
तद्धितश्चा० १.१.३७
तद्धितस्य ६.१.१५८
तद्धिताः ४.१.७६
तद्धितार्थो० २.१.५०
तद्धितेष्व० ७.२.११७
तद्युक्तात्० ५.४.३६
तद्राजस्य० २.४.६२
तद्वहति० ४.४.७६
तद्वानासा० ४.४.१२५
तनादिकृञ्० ३.१.७९
तनादिभ्य० २.४.७९
तनिपत्यो० ६.४.९९
तनूकरणे० ३.१.७६
तनोतेर्यकि ६.४.४४
तनोते र्विभा० ६.४.१७
तन्त्रादचि० ५.२.७०
तपःसह० ५.२.१०२
तपरस्तत्का० १.१.६९
तपस्तपः० ३.१.८८
तपोऽनु० ३.१.६५
तप्तनप्तन० ७.१.४५
तमधीष्टो० ५.१.७९
तयोरेव० ३.४.७०
तयोर्दार्हि० ५.३.२०
तयोर्य्वा० ८.२.१०८
तरति ४.४.५
तरप्तमपौ घः १.१.२१
तवकममका० ४.३.३
तवममौ० ७.२.९६
तवै चान्त० ६.२.५१
तव्यत्तव्या० ३.१.९६
तसिलादि० ६.३.३४
तसिश्च ४.३.११३
तसेश्च ५.३.८
तसौ मत्व० १.४.१९
तस्थस्थ० ३.४.१०१
तस्माच्छ० ६.१.९९
तस्मादित्यु० १.१.६६
तस्मान्नुड० ६.३.७३
तस्मान्नुड्० ७.४.७१
तस्मिन्निणि० ४.३.२
तस्मिन्निति० १.१.६५
तस्मै प्रभ० ५.१.१००
तस्मै हितम् ५.१.५
तस्य च द० ५.१.९४
तस्य तात् ७.१.४४
तस्य धर्म्यम् ४.४.४७
तस्य निमित्तं० ५.१.३७
तस्य निवासः ४.२.६८
तस्य परमा० ८.१.२
तस्य पाक० ५.२.२४
तस्य पूरणे० ५.२.४८
तस्य भाव० ५.१.११८
तस्य लोपः १.३.९
तस्य वापः ५.१.४४
तस्य विकार : ४.३.१३२
तस्य व्या० ४.३.६६
तस्य समूहः ४.२.३६
तस्यादित० १.२.३२
तस्यापत्यम् ४.१.९२
तस्येदम् ४.३.१२०
तस्येश्वरः ५.१.४१
ताच्छील्य० ३.२.१२९
तादौ च नि० ६.२.५०
तान्येकव० १.४.१०१
ताभ्यामन्य० ३.४.७५
तालादिभ्यो० ४.३.१५०
तावतिथं० ५.२.७७
तासस्त्यो० ७.४.५०
तासि च क्लृ० ७.२.६०
तास्यनुदा० ६.१.१८०
तिककित० २.४.६८
तिकादिभ्यः० ४.१.१५४
तिङश्च ५.३.५६
तिङस्त्रीणि० १.४.१००
तिंङि चोदा० ८.१.७१
तिङो गोत्रा० ८.१.२७
तिङ्ङतिङः ८.१.२८
तिङ्शित् ३.४.११३
ति च ७.४.८९
तितुत्रतथ० ७.२.९
तित्तिरि० ४.३.१०२
तित्स्वरि० ६.१.१७९
तिप्तस्झि० ३.४.७८
तिप्यनस्तेः ८.२.७३
तिरसस्ति० ६.३.९३
तिरसोऽन्य० ८.३.४२
तिरोन्तर्धौ १.४.७०

तिर्यच्यप० ३.४.६०
ति विंशते० ६.४.१४२
तिष्ठतेरित् ७.४.५
तिष्ठद्गु० २.१.१६
तिष्यपुन० १.२.६३
तिसृभ्यो० ६.१.१६०
तीररूप्यो० ४.२.१०५
तीर्थे ये ६.३.८६
तीषसह० ७.२.४८
तुग्राद् घन् ४.४.११५
तुजादीनां० ६.१.७
तुदादिभ्यः० ३.१.७७
तुन्दशोक० ३.२.५
तुन्दादिभ्य० ५.२.११७
तुन्दिबलि० ५.२.१३९
तुपश्य० ८.१.३९
तुभ्यमह्यौ० ७.२.९५
तुमर्थाच्च० २.३.१५
तुमर्थे सेसेनसे० ३.४.९
तुमुन्ण्वु० ३.३.१०
तुरिष्ठे० ६.४.१५४
तुरुस्तु० ७.३.९५
तुल्यार्थै० २.३.७२
तुल्यास्य० १.१.९
तुश्छन्दसि ५.३.५९
तुह्योस्ता० ७.१.३५
तूदीशला० ४.३.९४
तृष्णीमि० ३.४.६३
तृजकाभ्यां० २.२.१५
तृज्वत् ७.१.९५
तृणह इम् ७.३.९२
तृणे च जा० ६.३.१०२
तृतीया कर्म० ६.२.४८
तृतीया च० २.३.३
तृतीया त० २.१.२९
तृतीयादि० ७.१.७४
तृतीयाप्र० २.२.२१
तृतीयार्थे १.४.८४
तृतीयासप्त० २.४.८४
तृतीयासमा० १.१.२९
तृन् ३.२.१३५
तृषिमृषि० १.२.२५
तृफलभज० ६.४.१२२
ते तद्राजाः ४.१.१७२
तेन क्रीतम् ५.१.३६
तेन तुल्यं० ५.१.११४
तेन दीव्यति ४.४.२
तेन निर्वृत्तम् ४.२.६७
तेननिर्वृत्तम् ५.१.७८
तेन परि० ५.१.९२
तेन प्रोक्तम् ४.३.१०१
तेन यथा० ५.१.९७
तेन रक्तं० ४.२.१
तेन वित्त० ५.२.२६
तेन सहेति० २.२.२८
तेनैकदिक् ४.३.११२
ते प्राग्धातोः १.४.७९
तेमयावे० ८.१.२२
तोः षि ८.४.४२
तोर्लि ८.४.५९
तौ सत् ३.२.१२७
त्यदादिषु० ३.२.६०
त्यदादीनामः ७.२.१०२
त्यदादीनि च १.१.७३
त्यदादीनि स० १.२.७२
त्यागराग० ६.१.२१०
त्रपुजतु० ४.३.१३६
त्रसिगृधि० ३.२.१४०
त्रिंशच्च० ५.१.६१
त्रिककुत्० ५.४.१४७
त्रिचतुरोः० ७.२.९९
त्रिप्रभृति० ८.४.४९
त्रेः संप्रसा० ५.२.५५
त्रेस्त्रयः ६.३.४७
त्रेस्त्रयः ७.१.५३
त्वमावेक० ७.२.९७
त्वामौ द्वि० ८.१.२३
त्वाहौ सौ ७.२.९४
त्वे च ६.३.६३
थट् च छन्द० ५.२.५०
थलि च० ६.४.१२१
थलि च० ६.१.१९०
थाथघञ्० ६.२.१४३
थासः से ३.४.८०
था हेतौ० ५.३.२६
थो न्थः ७.१.८७
दंशसञ्ज० ६.४.२५
दक्षिणादाच् ५.३.३६
दक्षिणाप० ४.२.९७
दक्षिणेर्मा० ५.४.१२६
दक्षिणोत्तराभ्या० ५.३.२८
दण्डव्यव० ५.४.२
दण्डादिभ्यः० ५.१.६५
ददाति० ३.१.१३९
दधस्तथो० ८.२.३८
दधातेर्हिः ७.४.४२
दध्नष्ठक् ४.२.१७
दन्तउन्न० ५.२.१०६
दन्तशि० ५.२.११३
दम्भ इच्च ७.४.५६
दयतेर्दि० ७.४.९
दयायासश्च ३.१.३७
दश्च ७.२.१०९
दश्च ८.२.७५
दस्ति ६.३.१२३
दाणश्च० १.३.५५
दाण्डिना० ६.४.१७४
दादेर्धातो० ८.२.३२
दाधर्ति० ७.४.६५
दाधा घ्वदाप् १.१.१९
दाधेट्सि० ३.२.१५९
दानीं च ५.३.१८
दामन्या० ५.३.११६
दामहायना० ४.१.२७
दाम्नीशस० ३.२.१८२
दायाद्य० ६.२.५
दाशगो० ३.४.७३
दाश्वान्० ६.१.१२
दिक्पूर्वप० ४.३.६
दिक्पूर्वप० ४.२.१०६
दिक्पूर्वप० ४.१.६०
दिक्शब्दा० ६.२.१०३
दिक्शब्दे० ५.३.२७
दिक्संख्ये० २.१.४९
दिगादिभ्यो० ४.३.५४
दिङ्नामा० २.२.२६
दित्यदित्या० ४.१.८५
दिव उत् ६.१.१२७
दिव औत् ७.१.८४
दिवःकर्म च १.४.४३
दिवसश्च० ६.३.२९
दिवस्तद० २.३.५८
दिवादिभ्यः० ३.१.६९
दिवाविभा० ३.२.२१
दिवो झल् ६.१.१७७
दिवो द्यावा ६.३.२८
दिवोऽविजि० ८.२.४९
दिशोऽम० ७.३.१३
दिष्टिवित० ६.२.३१
दीङो युड० ६.४.६३
दीधीवेवी० १.१.६
दीपजन० ३.१.६१
दीर्घ इणः० ७.४.६९
दीर्घकाश० ६.२.८३
दीर्घजि० ४.१.५९
दीर्घं च १.४.१२
दीर्घाच्च० ७.३.२३
दीर्घात् ६.१.७३
दीर्घाज्जसि च ६.१.१०१
दीर्घादटि० ८.३.९
दीर्घादाचा० ८.४.५१
दीर्घोऽकितः ७.४.८३

दीर्घो लघोः ७.४.९४
दुःखात्प्रा० ५.४.६४
दुन्योरनुप० ३.१.१४२
दुरस्यु० ७.४.३६
दुष्कुलाड्० ४.१.१४२
दुहःकब्घश्च० ३.२.७०
दुहश्च ३.१.६३
दूतस्य भाग० ४.४.१२०
दूरादधूते च ८.२.८४
दूरान्तिका० २.३.३५
दूरान्तिका० २.३.३४
दृक्स्ववः ७.१.८३
दृग्दृशवतुषु ६.३.८८
दृढः स्थूल० ७.२.२०
दृतिकुक्षि० ४.३.५६
दृशेः क्वः ३.२.९४
दृशे विख्ये० ३.४.११
दृष्टं साम ४.२.७
देयमृणे ४.३.४७
देये त्रा च ५.४.५५
देवताद्वन्द्वे० ६.२.१४०
देवताद्वन्द्वे० ६.३.२५
देवताद्वन्द्वे० ७.३.२१
देवपथा० ५.३.१००
देवब्रह्म० १.२.३८
देवमनुष्य० ५.४.५६
देवसुम्न० ७.४.३८
देवात् तल् ५.४.२७
देविका० ७.३.१
देविक्रुशो० ३.२.१४७
देशे लुबि० ५.२.१०५
दैवयज्ञि० ४.१.८१
दो दद् घोः ७.४.४६
दोषो णौ ६.४.९०
द्यतिस्यति० ७.४.४०
द्यावापृथि० ४.२.३१
द्युतिस्वा० ७.४.६७
द्युद्भ्यो० १.३.९१
द्युद्भ्यां० ५.२.१०८
द्युप्रागपा० ४.२.१००
द्रवमूर्ति० ६.१.२४
द्रव्यं च० ५.३.१०४
द्रोणपर्व० ४.१.१०३
द्रोश्च ४.३.१५९
द्वन्द्वं रह० ८.१.१५
द्वन्द्वमनो० ५.१.१३२
द्वन्द्वश्च प्रा० २.४.२
द्वन्द्वाच्चु० ५.४.१०६
द्वन्द्वाच्छः ४.२.६
द्वन्द्वाद् वुन्० ४.३.१२५
द्वन्द्वे घि २.२.३२
द्वन्द्वे च १.१.३०
द्वन्द्वोपता० ५.२.१२८
द्वारादीनां च ७.३.४
द्विगुरेक० २.४.१
द्विगुश्च २.१.२२
द्विगोः ४.१.२१
द्विगोर्यप् ५.१.८१
द्विगोर्लुग० ४.१.८८
द्विगोर्वा ५.१.८५
द्विगोष्ठंः ५.१.५३
द्विगौ क्रतौ ६.२.९७
द्विगौ प्रमाणे ६.२.१२
द्वितीयतृती० २.२.३
द्वितीयाटौ० २.४.३४
द्वितीया ब्रा० २.३.६०
द्वितीयायां च ३.४.५३
द्वितीयायां च ७.२.८७
द्वितीयाश्रि० २.१.२३
द्वितीये चानु० ६.३.७९
द्वित्रिचतु० ५.४.१८
द्वित्रिपूर्वा० ५.१.३०
द्वित्रिभ्यां ष० ५.४.११५
द्वित्रिभ्यां तय० ५.२.४३
द्वित्रिभ्याम० ५.४.१०२
द्वित्रिभ्यांपा० ६.२.१९६
द्व्यन्तरुप० ६.३.९६
द्व्यष्टनः० ६.३.४६
द्व्येकयो० १.४.२२
धः कर्मणि० ३.२.१८१
धनगणं० ४.४.८४
धनहिर० ५.२.६५
धनुषश्च ५.४.१३२
धन्वयो० ४.२.१२०
धर्मं चरति ४.४.४१
धर्मपथ्य० ४.४.९२
धर्मशील० ५.२.१३२
धर्मादनिच्० ५.४.१२४
धातुसंब० ३.४.१
धातोः ३.१.९१
धातोः ६.१.१५६
धातोः कर्मणः० ३.१.७
धातोरेकाचो० ३.१.२२
धातोस्तन्नि० ६.१.७७
धात्वादेः० ६.१.६२
धान्यानां० ५.२.१
धारेरुत्त० १.४.३५
धि च ८.२.२५
धिन्विकृ० ३.१.८०
धुरो यड्० ४.४.७७
धूमादि० ४.२.१२६
धृषिशसी० ७.२.१९
ध्रुवमपाये० १.४.२४
ध्वमो ध्वात् ७.१.४२
ध्वाङ्क्षेण० २.१.४१
नः क्ये १.४.१५
न कपि ७.४.१४
न कर्मव्यतिहारे ७.३.६
न कवते० ७.४.६३
न कोपधा० ६.३.३६
न क्तिचि दी० ६.४.३९
न क्त्वा सेट् १.२.२८
न क्रोडादि० ४.१.५६
न क्वादेः ७.३.५९
नक्षत्रादघः ४.४.१४१
नक्षत्राद् वा ८.३.१००
नक्षत्रे च० २.३.४५
नक्षत्रेण यु० ४.२.३
नक्षत्रेभ्यो० ४.३.३७
नखमुखात्० ४.१.५८
न गतिहिं० १.३.१५
नगरात्० ४.२.१२७
न गुणादयो० ६.२.१७५
न गोपवना० २.४.६७
नगोऽप्राणि० ६.३.७६
न गोश्वन् ६.१.१७६
न ङिसम्बु० ८.२.८
न चवाहा० ८.१.२४
न च्छन्दस्य० ७.४.३५
नञ् २.२.६
नञः शुची० ७.३.३०
नञस्तत्पु० ५.४.७१
नञो गुण० ६.२.१५४
नञो जर० ६.२.११५
नञ्दुःसु० ५.४.१२१

न ङसुभ्याम् ६.२.१७१
नडशादा० ४.२.८७
नडादिभ्यः० ४.१.९९
नडादीनां० ४.२.९०
न तिसृचतसृ ६.४.४
नते नाभि० ५.२.३१
न तौल्वलि० २.४.६१
न दण्डमाण० ४.३.१३०
न दधिपय० २.४.१४
नदीपौर्ण० ५.४.११०
नदीबन्धुनि ६.२.१०८
नदीभिश्च २.१.१९
न दुहस्नु० ३.१.८९
न दृशः ३.१.४७
नद्याःशेष० ६.३.४३
नद्यादिभ्यो० ४.२.९६
नद्यां मतुप् ४.२.८४
नद्यृतश्च ५.४.१५३
न द्व्यचः प्रा० ४.२.११२
न धातुलोप० १.१.४
न ध्याख्या० ८.२.५७
न नञ्पूर्वा० ५.१.१२०
न निर्धारणे २.२.१०
न निविभ्याम् ६.२.१८०
ननौ पृष्ट० ३.२.१२०
नन्दिग्रहि० ३.१.१३४
नन्द्राः संयो० ६.१.३
नन्वित्यनु० ८.१.४३
नन्वोर्विभा० ३.२.१२१
न पदान्तद्वि० १.१.५७
न पदान्ताट्० ८.४.४१
नपरे नः ८.३.२७
न पादम्याङ्० १.३.८९
नपुंसकमनपु० १.२.६९
नपुंसकस्य० ७.१.७२
नपुंसकाच्च ७.१.१९
नपुंसकाद० ५.४.१०९
नपुंसके भा० ३.३.११४
न पूजनात् ५.४.६९
न प्राच्य० ४.१.१७६
न बहुव्रीहौ १.१.२८
न भकुर्छुराम् ८.२.७९
न भाभूपू० ८.४.३३
न भूताधिक० ६.२.९१
न भूवाक्० ६.२.१९
न भूसुधियोः ६.४.८५
नभ्राण्नपा० ६.३.७४
नमःस्वस्ति० २.३.१६
न मपूर्वो० ६.४.१७०
नमस्पुर० ८.३.४०
न माङ्योगे ६.४.७४
नमिकम्पि० ३.२.१६७
न मु ने ८.२.३
नमोवरि० ३.१.१९
न यः ३.२.१५२
न यदि ३.२.११३
न यद्यनाका० ३.४.२३
न यासयोः ७.३.४५
न य्वाभ्यां० ७.३.३
न रपरसृपि० ८.३.११०
न रुधः ३.१.६४
नरे संज्ञा० ६.३.१२८
न लिङि ७.२.३९
न लुट् ८.१.२९
न लुमताङ्गस्य १.१.६२
न लोकाव्यय० २.३.६९
नलोपःप्रति० ८.२.७
नलोपःसुप्० ८.२.२
नलोपो नञः ६.३.७२
न ल्यपि ६.४.६९
न वशः ६.१.२०
न विभक्तौ० १.३.४
न वृद्भ्यश्च० ७.२.५९
न वेतिविभा० १.१.४३
न व्योलिटि ६.१.४५
न शब्दश्लो० ३.२.२३
न शसदद० ६.४.१२६
नशेःषान्तस्य ८.४.३५
नशेर्वा ८.२.६३
नश्च ८.३.३०
नश्चधातु० ८.४.२६
नश्चापदा० ८.३.२४
नश्छव्यप्र० ८.३.७
न षट्स्व० ४.१.१०
न संयोगा० ६.४.१३७
न संख्यादेः ५.४.८९
न संज्ञायाम् ५.४.१५५
नसत्त० ८.२.६१
न संप्रसार० ६.१.३६
न सामि० ५.४.५
न सुदुर्भ्यां० ७.१.६८
न सुब्रह्म० १.२.३७
नस्तद्धिते ६.४.१४४
नह प्रत्या० ८.१.३१
न हास्तिन० ६.२.१०१
नहिवृति० ६.३.११५
नहो धः ८.२.३४
नाग्लोपि० ७.४.२
नाचार्य० ६.२.१३२
नाञ्जलौ १.१.१०
नाञ्जेःपूजा० ६.४.३०
नाडीत० ५.४.१५९
नाडीमु० ३.२.३०
नातःपरस्य ७.३.२७
नादिचि ६.१.१००
नादिन्या० ८.४.४७
नाद्धस्य ८.२.१७
नाधार्थप्रत्यये० ३.४.६२
नानद्यतन० ३.३.१३५
नानोर्ज्ञः १.३.५८
नान्ताद० ५.२.४९
नाभ्यस्त० ७.३.८७
नाभ्यस्ता० ७.१.७८
नामन्त्रिते० ८.१.७३
नामन्य० ६.१.१७१
नामि ६.४.३
नाम्यादि० ३.४.५८
नाम्रेडित० ६.१.९६
नावो द्विगोः ५.४.९९
नाव्ययात्० ६.२.१६७
नाव्ययीभाव० २.४.८३
नासिकास्त० ३.२.२९
नासिकोद० ४.१.५५
निकटे वसति ४.४.७३
निगरण० १.३.८७
निगृह्यानु० ८.२.९४
निघो निमि० ३.३.८७
नित्यं वृद्ध० ४.३.१४२
नित्यं शता० ५.२.५७
नित्यं संज्ञा० ४.१.२९
नित्यं सप० ४.१.३५
नित्यं समासे० ८.३.४५
नित्यं स्मयतेः ६.१.५६
नित्यं हस्ते० १.४.७६
नित्यं करोतेः ६.४.१०८
नित्यं कौटि० ३.१.२३
नित्यं क्रीडा० २.२.१७
नित्यं ङितः ३.४.९९
नित्यं छन्दसि ४.१.४६
नित्यं छन्दसि ७.४.८
नित्यमसिच्० ५.४.१२२
नित्यं पणः० ३.३.६६
नित्यं मन्त्रे ६.१.२०४
नित्यवीप्सयोः ८.१.४
निनदीभ्यां० ८.३.८९
निन्दहिंस० ३.२.१४६
निपात एका० १.१.१४
निपातस्य० ६.३.१३५
निपातैर्यद्० ८.१.३०
निपानमाहावः ३.३.७४
निमूलसमू० ३.४.३४
निरः कुषः ७.२.४६

निरभ्योः० ३.३.२८
निरुदका० ६.२.१८३
निर्वाणो० ८.२.५०
निर्वृतेऽक्ष० ४.४.१९
निवाते वात० ६.२.८
निवासचिति० ३.३.४१
निव्यभिभ्यो० ८.३.११९
निशाप्रदो० ४.३.१४
निष्कुला० ५.४.६२
निष्ठा २.२.३६
निष्ठा ३.२.१०२
निष्ठा च० ६.१.१९९
निष्ठायां सेटि ६.४.५२
निष्ठायाम० ६.४.६०
निष्ठा शीङ् १.२.१९
निष्ठोपमा० ६.२.१६८
निष्ठोपसर्ग० ६.२.१०९
निष्प्रवाणिश्च ५.४.१६०
निसमुप० १.३.३०
निसस्त० ८.३.१०२
नीग्वञ्चु० ७.४.८४
नीचैरनुदात्तः १.२.३०
नीतौ च त० ५.३.७७
नुगतोऽनु० ७.४.८५
नुदविदो० ८.२.५६
नुम्विसर्ज० ८.३.५८
नृ च ६.४.६
नृ चान्य० ६.१.१७८
नॄन् पे ८.३.१०
नेटि ७.२.४
नेट्यलिटि० ७.१.६२
नेड् वशि० ७.२.८
नेतराच्छ० ७.१.२६
नेदमदसो० ७.१.११
नेन्द्रस्य० ७.३.२२
नेन्सिद्ध० ६.३.१८
नेयङुवङ् १.४.४
नेरनिधा० ६.२.१९१
नेर्गदनद० ८.४.१७
नेर्बिडज् ५.२.२२
नेर्विशः १.३.१७
नोङ्धात्वोः ६.१.१६९
नोत्तरपदे० ६.२.१४१
नोत्वद्व० ४.३.१४९
नोदात्तस्व० ८.४.६६
नोदात्तोप० ७.३.३४
नोनयति० ३.१.५१
नोपधात्० १.२.२३
नोपधायाः ६.४.७
नौ गदनद० ३.३.६४
नौ ण च ३.३.६०
नौद्व्यच० ४.४.७
नौवयोधर्म० ४.४.९१
नौ वृ धान्ये ३.३.४८
न्यग्रोधस्य० ७.३.५
न्यङ्क्वा० ७.३.५३
न्यधी च ६.२.५३
पक्षात्तिः ५.२.२५
पक्षिमत्स्य० ४.४.३५
पङ्क्ति० ५.१.५८
पङ्गोश्च ४.१.६८
पचो वः ८.२.५२
पञ्चदद्दश० ५.१.५९
पञ्चमी भयेन २.१.३६
पञ्चमी विभ० २.३.४२
पञ्चम्यपा० २.३.१०
पञ्चम्याअत् ७.१.३१
पञ्चम्याःपरा० ८.३.५१
पञ्चम्याःस्तो० ६.३.२
पञ्चम्याम० ३.२.९८
पञ्चम्यास्त० ५.३.७
पणपाद० ५.१.३४
पतः पुम् ७.४.१९
पतिःसमास० १.४.८
पत्यन्त० ५.१.१२७
पत्यावैश्व० ६.२.१८
पत्युर्नोयज्ञ० ४.१.३३
पत्रपूर्वा० ४.३.१२२
पत्राध्वर्यु० ४.३.१२३
पथःपन्थ च ४.३.२९
पथःष्कन् ५.१.७४
पथि च० ६.३.१०७
पथिमथोः० ६.१.१९३
पथिमभ्यृ० ७.१.८५
पथो विभा० ५.४.७२
पथ्यतिथि० ४.४.१०४
पदमस्मिन्० ४.४.८७
पदरुज० ३.३.१६
पदव्यवाये० ८.४.३७
पदस्य ८.१.१६
पदात् ८.१.१७
पदान्तस्य ८.४.३६
पदान्तस्या० ७.३.९
पदास्वैरि० ३.१.११९
पदेऽपदेशे ६.२.७
पदोत्तरपदं० ४.४.३९
पद्दन्नोमास्० ६.१.६१
पद्यत्यतदर्थे ६.३.५२
पन्थो ण० ५.१.७५
परःसन्नि० १.४.१०८
परवल्लि० २.४.२६
परश्च ३.१.२
परश्वधा० ४.४.५८
परस्मिन्० ३.३.१३८
परस्मैपदा० ३.४.८२
पराजेरसोढः १.४.२६
परादिश्छ० ६.२.१९८
परावनु० ३.३.३८
परावरयोगे० ३.४.२०
परावराधमो० ४.३.५
परिक्रयणे० १.४.४४
परिक्लिश्य० ३.४.५५
परिखाया० ५.१.१७
परिनिविभ्यः० ८.३.७०
परिन्योर्नी० ३.३.३७
परिपन्थं० ४.४.३६
परिप्रत्यु० ६.२.३३
परिमाणा० ३.३.२०
परिमाणा० ७.३.१७
परिमाणे पचः ३.२.३३
परिमुखं च ४.४.२९
परिवृतो रथः ४.२.९
परिव्यवेभ्यः० १.३.१८
परिषदो ण्यः ४.४.४४
परिषदो ण्यः ४.४.१०१
परिस्कन्दः० ८.३.७५
परेरभितो० ६.२.१८१
परेर्मृषः १.३.८२
परेर्वर्जने ८.१.५
परेश्च ८.३.७४
परेश्च घाः ८.२.२२
परोक्षे लिट् ३.२.११५
परोवर० ५.२.१०
परौ घः ३.३.८४
परौ भुवो० ३.३.५५
परौ यज्ञे ३.३.४७
पर्पादिभ्यः० ४.४.१०
पर्यभिभ्यां च ५.३.९
पर्यायार्ह० ३.३.१११
पर्वताच्च ४.२.१४२
पश्वादियौ० ५.३.११७
पलल० ६.२.१२७
पलाशादि० ४.३.१३९
पश्चपश्चा० ५.३.३३
पश्चात् ५.३.३२
पश्यार्थै० ८.१.२५
पाककर्ण० ४.१.६४
पाघ्राध्मा० ३.१.१३७
पाघ्राध्मा० ७.३.७८
पाणिघ० ३.२.५५
पाण्डुकम्ब० ४.२.१०

पातौ च० ८.३.५२
पात्रात् घ्छन् ५.१.४५
पात्राद् घँश्च ५.१.६७
पात्रे समि० २.१.४७
पाथोनदी० ४.४.१११
पादः पत् ६.४.१३०
पादशतस्य० ५.४.१
पादस्य पदा० ६.३.५१
पादस्य लो० ५.४.१३८
पादार्घाभ्यां च ५.४.२५
पादोऽन्य० ४.१.८
पानं देशे ८.४.९
पापं च शि० ६.२.६८
पापाणके० २.१.५३
पाय्यसां० ३.१.१२९
पारस्कर० ६.१.१५१
पारायण० ५.१.७१
पाराशर्य० ४.३.११०
पारेमध्ये० २.१.१७
पार्श्वेना० ५.२.७५
पाशादिभ्यो० ४.२.४८
पितरा० ६.३.३२
पिता मात्रा १.२.७०
पितुर्यच्च ४.३.७९
पितृव्य० ४.२.३५
पितृष्वसु० ४.१.१३२
पिष्टाच्च ४.३.१४४
पीलाया वा ४.१.११८
पुंयोगा० ४.१.४८
पुंवत् कर्म० ६.३.४१
पुंसि संज्ञा० ३.३.११८
पुंसोऽसुङ् ७.१.८९
पुगन्तलघू० ७.३.८६
पुच्छभाण्ड० ३.१.२०
पुत्रःपुम्भ्यः ६.२.१३१
पुत्राच् छ च ५.१.३९
पुत्रान्तात्० ४.१.१५९
पुत्रेऽन्यत० ६.३.२१
पुमः खय्यम्परे ८.३.६
पुमान् स्त्रिया १.२.६७
पुरा च परी० ८.१.४२
पुराणप्रो० ४.३.१०५
पुरि लुङ्० ३.२.१२२
पुरुषश्चा० ६.२.१८९
पुरुषहस्ति० ५.२.३८
पुरुषात् प्र० ४.१.२४
पुरे प्राचाम् ६.२.९९
पुरोऽग्रतो० ३.२.१८
पुरोऽव्ययम् १.४.६६
पुवःसंज्ञा० ३.२.१८५
पुषादिद्युता० ३.१.५५
पुष्करा० ५.२.१३५
पुष्यसि० ३.१.११६
पूःसर्वयो० ३.२.४१
पूगाञ्ज्यो० ५.३.११२
पूगेष्वन्य० ६.२.२८
पूङःक्त्वा० १.२.२२
पूङश्च ७.२.५१
पूङ्यजोः ३.२.१२८
पूजनात्० ८.१.६७
पूजायां० ८.१.३७
पूतक्रतोरै च ४.१.३६
पूरणगुण० २.२.११
पूरणाद्० ५.३.४८
पूरणार्धाट्० ५.१.४७
पूर्णाद् वि० ५.४.१४९
पूर्वकालैक० २.१.४८
पूर्वत्रासिद्धम् ८.२.१
पूर्वं तु भाषा० ८.२.९८
पूर्वपदात् ८.३.१०६
पूर्वप०संज्ञा० ८.४.३
पूर्वपरावर० १.१.३३
पूर्ववत्सनः १.३.६२
पूर्ववदश्व० २.४.२७
पूर्वसदृश० २.१.३०
पूर्वादिनिः ५.२.८६
पूर्वादिभ्यो० ७.१.१६
पूर्वाधरा० ५.३.३९
पूर्वापरप्रथ० २.१.५७
पूर्वापराधरो० २.२.१
पूर्वाह्णा० ४.३.२८
पूर्वे कर्त्तरि ३.२.१९
पूर्वे भूत० ६.२.२२
पूर्वैःकृत० ४.४.१३३
पूर्वोऽभ्यासः ६.१.४
पृथग्विना० २.३.३२
पृथ्वादिभ्य० ५.१.१२१
पृषोदरा० ६.३.१०८
पेषंवास० ६.३.५७
पैलादिभ्यश्च २.४.५९
पोटायुव० २.१.६४
पोरदुपधात् ३.१.९८
पौरोडाश० ४.३.७०
प्यायः पी ६.१.२८
प्रकारवचने० ५.३.६९
प्र०थाल् ५.३.२३
प्रकारे गुण० ८.१.१२
प्रकाशन० १.३.२३
प्रकृत्यान्तः० ६.१.१११
प्रकृत्या भ० ६.२.१३६
प्रकृत्याशि० ६.३.८२
प्रकृत्यैकाच् ६.४.१६३
प्रकृष्टे ठञ् ५.१.१०७
प्रजने वीयतेः ६.१.५४
प्रजने सर्तेः ३.३.७१
प्रजोरिनिः ३.२.१५६
प्रज्ञादिभ्यश्च ५.४.३८
प्रज्ञाश्रद्धा० ५.२.१०१
प्रणवष्टेः ८.२.८९
प्रणाय्यो० ३.१.१२८
प्रतिः प्रति० १.४.९१
प्रतिकण्ठार्थ० ४.४.४०
प्रतिजनादि० ४.४.९९
प्रतिनिधि० २.३.११
प्रतिपथ० ४.४.४२
प्रतिबन्धि० ६.२.६
प्रतियोगे० ५.४.४४
प्रतिश्रवणे च ८.२.९९
प्रतिष्कश० ६.१.१४७
प्रतिस्तब्ध० ८.३.११४
प्रतेरंश्वा० ६.२.१९२
प्रतेरुरसः० ५.४.८२
प्रतेश्च ६.१.२५
प्रत्नपूर्व० ५.३.१११
प्रत्यपिभ्यां ३.१.११८
प्रत्यभि० ८.२.८३
प्रत्ययः ३.१.१
प्रत्ययलोपे० १.१.६१
प्रत्ययस्थात्० ७.३.४४
प्रत्ययस्य० १.१.६०
प्रत्ययोत्तर० ७.२.९८
प्रत्याङ्भ्यां० १.३.५९
प्रत्याङ्भ्यां० १.४.४०
प्रथने वावः ३.३.३३
प्रथमचरम० १.१.३२
प्रथमयोः० ६.१.९८
प्रथमानिर्दि० १.२.४३
प्रथमायाः ७.२.८८
प्रथमोऽचि० ६.२.५६
प्रधानप्रत्य० १.२.५६
प्रनिरन्तः० ८.४.५
प्रभवति ४.३.८३
प्रभौ परि० ७.२.२१
प्रमद० ३.३.६८
प्रमाणे च ३.४.५१
प्रमाणेद्वय० ५.२.३७
प्रयच्छति० ४.४.३०
प्रयाजानु० ७.३.६२
प्रयैरोहि० ३.४.१०
प्रयोजनम् ५.१.१०८
प्रयोज्य० ७.३.६८
प्रवाहणस्य० ७.३.२८

प्रवृद्धादी० ६.२.१४६
प्रशंसायां० ५.३.६६
प्रशंसावच० २.१.६५
प्रशस्यस्यश्रः ५.३.६०
प्रश्नेचा० ३.२.११७
प्रष्ठोऽग्र० ८.३.९२
प्रसमुपोदः० ८.१.६
प्रसंभ्यां ५.४.१२९
प्रसितो० २.३.४४
प्रस्कण्व० ६.१.१४८
प्रस्त्योऽ० ८.२.५४
प्रस्थपुर० ४.२.१२१
प्रस्थेऽवृद्ध० ६.२.८७
प्रस्थोत्तर० ४.२.१०९
प्रहरणम् ४.४.५७
प्रहासे च० १.४.१०५
प्राक्कडारात्० २.१.३
प्राक्क्रीताच्छः ५.१.१
प्राक्सिता० ८.३.६३
प्रागिवात्० ५.३.७०
प्रागेकाद० ५.३.४९
प्राग्घिता० ४.४.७५
प्राग्दिशो० ५.३.१
प्राग्दीव्यतो० ४.१.८३
प्राग्रीश्वरा० १.४.५६
प्राग्वतेष्ठञ् ५.१.१८
प्राग्वहतेष्ठक् ४.४.१
प्राचां ष्फ० ४.१.१७
प्राचां कटा० ४.२.१३८
प्राचां क्रीडा० ६.२.७४
प्राचां ग्राम० ७.३.१४
प्राचां नगरा० ७.३.२४
प्राचामवृ० ४.१.१६०
प्राचामुपादे० ५.३.८०
प्राणभृज्जा० ५.१.१२८
प्राणिरज० ४.३.१५२
प्राणिस्थादा० ५.२.९६
प्रातिपदिका० ८.४.११
प्रातिपदिकार्थ० २.३.४६
प्रादय० १.४.५८
प्रादस्वाङ्गं० ६.२.१८२
प्राद्वहः १.३.८१
प्राध्वं बन्ध० १.४.७७
प्रापापन्ने० २.२.४
प्रायभवः ४.३.३९
प्रावृट्० ६.३.१४
प्रावृष एण्यः ४.३.१७
प्रावृषष्ठप् ४.३.२६
प्रियवशे० ३.२.३८
प्रियस्थिर० ६.४.१५७
प्रीतौ च० ६.२.१६
प्रुसृल्वः० ३.१.१४९
प्रे दाज्ञः ३.२.६
प्रेदुस्तु० ३.३.२७
प्रेलपसृ० ३.२.१४५
प्रे लिप्सायाम् ३.३.४६
प्रे वणिजाम् ३.३.५२
प्रेष्यब्रु० २.३.६१
प्रे स्त्रोऽ० ३.३.३२
प्रैषाति० ३.३.१६३
प्रोक्तात्लुक् ४.२.६३
प्रोपाभ्यां० १.३.६४
प्रोपाभ्यां स० १.३.४२
प्लक्षादि० ४.३.१६२
प्लुतप्रगृ० ६.१.१२१
प्लुतावैच० ८.२.१०६
प्वादीनां० ७.३.८०
फक्फिञो० ४.१.९१
फणां च० ६.४.१२५
फलेग्रहि० ३.२.२६
फले लुक् ४.३.१६१
फल्गुनी० १.२.६०
फाण्टाहृति० ४.१.१५०
फेनादिल० ५.२.९९
फेश्छ च ४.१.१४९
बन्धने चर्षौ ४.४.९६
बन्धुनि० ६.१.१४
बन्धे चविभा० ६.३.१२
बभूथातत० ७.२.६४
बर्हिषि० ४.४.११९
बलादिभ्यो० ५.२.१३६
बहुगणवतु० १.१.२२
बहुपूगगण० ५.२.५२
बहुप्रजाश्० ५.४.१२३
बहुलंछन्दसि २.४.३९
ब०छन्दसि २.४.७३
ब०छन्दसि २.४.७६
ब०छन्दसि ३.२.८८
ब०छन्दसि ५.२.१२२
ब०छन्दसि ६.१.३३
ब०छन्दसि ७.१.८
ब०छन्दसि ७.१.१०
ब०छन्दसि ७.१.१०३
ब०छन्दसि ७.३.९७
ब०छन्दसि ७.४.७८
बहुलंछन्दस्य०६.४.७५
बहुलमाभी० ३.२.८१
बहुवचन० ८.१.२१
बहुवचने० ७.३.१०३
बहुव्रीहा० ६.२.१६१
बहुव्रीहेरू० ४.१.२५
बहुव्रीहेश्चा० ४.१.५२
बहुव्रीहौप्र० ६.२.१
बहुव्रीहौवि० ६.२.१०६
बहुव्रीहौस० ५.४.११३
बहुव्रीहौसं० ५.४.७३
बहुषुबहु० १.४.२१
बहोर्नञ्व० ६.२.१७४
बहोर्लोपो० ६.४.१५८
बह्वचइञः० २.४.६६
बह्वचः कूपेषु ४.२.७२
बह्वचोऽन्तो० ४.३.६७
बह्वचो मनु० ५.३.७८
बह्वच्पूर्व० ४.४.६४
बह्वन्यतर० ६.२.३०
बह्वल्पार्था० ५.४.४२
बह्वादिभ्यश्च ४.१.४५
बाष्पोष्मभ्या० ३.१.१६
बाह्वन्तात्० ४.१.६७
बाह्वादिभ्यश्च ४.१.९६
बिभेते० ६.१.५५
बिल्वका० ६.४.१५३
बिल्वादि० ४.३.१३४
बिस्ताच्च ५.१.३१
बुधयुध० १.३.८६
बृहत्याआ० ५.४.६
ब्रह्मणस्त्वः ५.१.१३५
ब्रह्मणो जा० ५.४.१०४
ब्रह्मभ्रूण० ३.२.८७
ब्रह्महस्ति० ५.४.७८
ब्राह्मणको० ५.२.७१
ब्राह्मणमाण० ४.२.४१
ब्राह्मो० ६.४.१७१
ब्रुवईट् ७.३.९३
ब्रुवःपञ्चा० ३.४.८४
ब्रुवो वचिः २.४.५३
ब्रूहिप्रेष्य० ८.२.९१
भक्ताख्या० ६.२.७१
भक्ताण्णः ४.४.१००
भक्तादणन्य० ४.४.६८
भक्तिः ४.३.९५
भक्ष्येण मि० २.१.३४
भजो ण्विः ३.२.६२
भञ्जभास० ३.२.१६१
भञ्जेश्च० ६.४.३३
भय्यप्रव० ६.१.८०
भर्गात्० ४.१.१११
भवतष्ठक् ४.२.११४
भवतेरः ७.४.७३
भविष्यतिग० ३.३.३
भविष्यति म० ३.३.१३६
भवे छन्दसि ४.४.११०

भव्यगेय० ३.४.६८
भस्त्रादिभ्यः० ४.४.१६
भस्त्रैषाजा० ७.३.४७
भस्य ६.४.१२९
भस्य टेर्लोपः ७.१.८८
भागाद् यच्च ५.१.४८
भावकर्मणोः १.३.१३
भावलक्षणे० ३.४.१६
भाववचना० ३.३.११
भावे ३.३.१८
भावे च ४.४.१४४
भावेऽनुप० ३.३.७५
भाषायां स० ३.२.१०८
भासनोप० १.३.४७
भिक्षादिभ्यो० ४.२.३७
भिक्षासेना० ३.२.१७
भित्तं शक० ८.२.५९
भिद्योद्ध्यौ० ३.१.११५
भियःक्रु० ३.२.१७४
भियोऽन्य० ६.४.११५
भियो हेतु० ७.३.४०
भीत्रार्थानां १.४.२५
भीमादयो० ३.४.७४
भीरोः स्थानम् ८.३.८१
भीस्म्योर्हे० १.३.६८
भीह्रीभृ० ६.१.१८६
भीह्रीभृहु० ३.१.३९
भुजन्यु० ७.३.६१
भुजोऽनवने १.३.६६
भुवः प्रभवः १.४.३१
भुवःसंज्ञा० ३.२.१७९
भुवश्च ३.२.१३८
भुवश्च ४.१.४७
भुवश्चमहा० ८.२.७१
भुवो भावे ३.१.१०७
भुवो वुग्० ६.४.८८
भूतपूर्वे० ५.३.५३
भूते ३.२.८४
भूते च ३.३.१४०
भूतेऽपि दृश्यन्ते ३.३.२
भूवादयो धा० १.३.१
भूषणेऽलम् १.४.६३
भूसुवोः० ७.३.८८
भृञामित् ७.४.७६
भृञोऽसं० ३.१.११२
भृशादि० ३.१.१२
भोज्यं भ० ७.३.६९
भोभगो० ८.३.१७
भौरिक्या० ४.२.५३
भ्यसोऽभ्यम् ७.१.३०
भ्रस्जोरोप० ६.४.४७
भ्राजभास० ३.२.१७७
भ्राजभास० ७.४.३
भ्रातरि च० ४.१.१६४
भ्रातुर्व्यच्च ४.१.१४४
भ्रातृपुत्रौ० १.२.६८
भ्रुवोर्वुक्च ४.१.१२५
मघवा० ६.४.१२८
मघवा० ६.४.१२८
मयट् च ४.३.८२
मयड्वैः० ४.३.१४१
मयतेरिः० ६.४.७०
मयूरव्यं० २.१.७१
मये च ४.४.१३८
मस्करः० ६.१.१४९
मस्जिनशोः० ७.१.६०
महाकुलाः० ४.१.१४१
महान्व्रीः० ६.२.३८
महाराजः० ४.२.३४
महाराजाः० ४.३.९७
महेन्द्राद्० ४.२.२८
माङि लुङ् ३.३.१७५
माणवः० ५.१.११
मातरपितः० ६.३.३१
मातुःपितुः० ८.३.८५
मातुरुत्० ४.१.११५
मातृपितृः० ८.३.८४
मातृष्वसुः० ४.१.१३४
मात्रोपज्ञोपः० ६.२.१४
माथोत्तरः० ४.४.३७
मादुपधाः० ८.२.९
मानपश्वः० ५.३.५१
माने वयः ४.३.१६०
मान्बधः० ३.१.६
मायायाः० ४.४.१२४
मालादीनां० ६.२.८८
मासाद् वयः० ५.१.८०
मितनखे च ३.२.३४
मितां ह्रस्वः ६.४.९२
मित्रे चर्षौ ६.३.१२९
मिथ्योपः० १.३.७१
मिदचोऽ १.१.४६
मिदेर्गुणः ७.३.८२
मिश्रं चानुः० ६.२.१५३
मीनातिः० ६.१.४९
मीनातेः० ७.३.८१
मुखं स्वाः० ६.२.१६६
मुखनासिकाः० १.१.८
मुचोऽकः० ७.४.५७
मुण्डमिश्रः० ३.१.२१
मुद्गादण् ४.४.२५
मूर्तौ घनः ३.३.७७
मूलमस्याः० ४.४.८८
मृजेर्विभाः० ३.१.११३
मृजेर्वृद्धिः ७.२.११४
मृडमृदः० १.२.७
मृदस्तिकन् ५.४.३९
मृषस्तितिः० १.२.२०
मेघर्तिभये० ३.२.४३
मेर्निः ३.४.८९
मोऽनुस्वारः ८.३.२३
मो नो धातोः ८.२.६४
मो राजि० ८.३.२५
म्रियतेर्लुङ्० १.३.६१
म्वोश्च ८.२.६५
यः सौ ७.२.११०

यङश्चाप् ४.१.७४
यङि च ७.४.३०
यङोऽचि च २.४.७४
यङो वा ७.३.९४
यचि भम् १.४.१८
यच्चयत्र० ३.३.१४८
यजजप० ३.२.१६६
यजध्वैन० ७.१.४३
यजयाच० ३.३.९०
यजयाच० ७.३.६६
यजुष्युरः ६.१.११३
यजुष्ये० ८.३.१०४
यजेश्च० २.३.६३
यज्ञकर्म० १.२.३४
यज्ञर्त्विग्भ्यां ५.१.७०
यज्ञे समि० ३.३.३१
यत्रयोश्च २.४.६४
यत्रश्च ४.१.१६
यत्रिन्नो० ४.१.१०१
यतश्च नि० २.३.४१
यतोऽनावः ६.१.२०७
यत्तदेते० ५.२.३९
यथातथय० ७.३.३१
यथातथयो० ३.४.२८
यथामुखस० ५.२.६
यथाविध्य० ३.४.४
यथासंख्यम० १.३.१०
यथाऽसादृश्ये २.१.७
यथास्वे य० ८.१.१४
यद्धितुपरं० ८.१.५६
यद्वृत्तान्नि० ८.१.६६
यमःसमु० ३.३.६३
यमरमन० ७.२.७३
यमो गन्धने १.२.१५
ययतोश्चा० ६.२.१५५
यरोऽनु० ८.४.४४
यवयवक० ५.२.३
यश्च यङः ३.२.१७६
यसोऽनुप० ३.१.७१
यस्कादिभ्यो० २.४.६३
यस्मात्प्र० १.४.१३
यस्मादधिकं० २.३.९
यस्य च भावे० २.३.३७
यस्यचायामः २.१.१५
यस्य विभाषा ७.२.१५
यस्य हलः ६.४.४९
यस्येति च ६.४.१४८
याजकादिभि० २.२.९
याज्यान्तः ८.२.९०
याडापः ७.३.११३
याप्ये पाशप् ५.३.४७
यावतिविन्द० ३.४.३०
यावत्पुरा० ३.३.४
यावदव० २.१.८
यावद्यथा० ८.१.३६
यावादिभ्यः० ५.४.२९
यासुट् परः ३.४.१०३
यीवर्णयो० ७.४.५३
युक्तारोह्या० ६.२.८१
युक्ते च ६.२.६६
युग्यं च० ३.१.१२१
युजेरस० ७.१.७१
युप्लुवोर्दी० ६.४.५८
युवा खलति० २.१.६६
युवाल्पयोः ५.३.६४
युवावौ द्वि० ७.२.९२
युवोरनाकौ ७.१.१
युष्मत्तत० ८.३.१०३
युष्मदस्मदोः० ८.१.२०
युष्मदस्मदो० ७.२.८६
युष्मदस्मदो० ४.३.१
युष्मदस्मदो० ६.१.२०५
युष्मदस्मद्० ७.१.२७
युष्मद्युपप० १.४.१०४
यूनस्तिः ४.१.७७
यूनि लुक् ४.१.९०
यूयवयौ० ७.२.९३
यूस्त्र्याख्यौ० १.४.३
ये च ६.४.१०९
ये च तद्धिते ६.१.६०
ये चाभाव० ६.४.१६८
येन विधि० १.१.७१
येनाङ्गविकारः २.३.२०
ये यज्ञकर्म० ८.२.८८
ये विभाषा ६.४.४३
येषां च वि० २.४.९
योगप्रमाणे० १.२.५५
योगाद्यच्च ५.१.१०१
योऽचि ७.२.८९
योजनं० ५.१.७३
योपधाद्० ५.१.१३१
र ऋतो० ६.४.१६१
रक्ते ५.४.३२
रक्षति ४.४.३३
रक्षोयातू० ४.४.१२१
रङ्कोर० ४.२.९९
रजःकृ० ५.२.११२
रज्जेश्च ६.४.२६
रथवद० ६.३.१०१
रथाद्यत् ४.३.१२१
रदाभ्यां नि० ८.२.४२
रधादिभ्यश्च ७.२.४५
रधिजभो० ७.१.६१
रभेरश० ७.१.६३
रलो व्युप० १.२.२६
रश्मौ च० ३.३.५३
रषाभ्यां नो० ८.४.१
रसादिभ्यश्च ५.२.९५
राजदन्तादि० २.२.३१
राजनि युधि० ३.२.९५
राजन्यब० ६.२.३४
राजन्यादि० ४.२.५२
राजन्वान्० ८.२.१४
राजश्वशु० ४.१.१३७
राजसूय० ३.१.११४
राजा च ६.२.५९
राजा च प्र० ६.२.६३
राजाहःस० ५.४.९१
राज्ञःक च ४.२.१३९
रात्राह्नाहाः० २.४.२९
रात्रेःकृति० ६.३.७१
रात्रेश्चाजसौ ४.१.३१
रात्र्यहःसं० ५.१.८६
रात्सस्य ८.२.२४
राधीक्ष्यो० १.४.३९
राधो हिंसा० ६.४.१२३
रायो हलि ७.२.८५
राल्लोपः ६.४.२१
राष्ट्रावार० ४.२.९२
रिक्ते विभा० ६.१.२०२
रिङ् शयक्० ७.४.२८
रि च ७.४.५१
रीगृदुपध० ७.४.९०
रीङ् ऋतः ७.४.२७
रुग्रिकौ० ७.४.९१
रुच्यर्थानां० १.४.३३
रुजार्थानां० २.३.५४
रुदविद० १.२.८
रुदश्च पः ७.३.९८
रुदादिभ्यः० ७.२.७६
रुधादिभ्यः० ३.१.७८
रुष्यमत्वर० ७.२.२८
रुहःपोन्य० ७.३.४३
रूपादाह० ५.२.१२०
रेवतीजग० ४.४.१२२
रेवत्यादि० ४.१.१४६
रैवतिका० ४.३.१३१
रोः सुपि ८.३.१६
रोगाख्य० ३.३.१०८
रोगाच्चा० ५.४.४९
रोणी ४.२.७७
रोपधेतोः० ४.२.१२२

रो रि ८.३.१४
रोऽसुपि ८.२.६९
र्वोरुपधा० ८.२.७६
लःकर्मणि० ३.४.६९
लःपरस्मै० १.४.९८
लक्षणहे० ३.२.१२६
लक्षणे जा० ३.२.५२
लक्षणेत्थं० १.४.८९
लक्षणेना० २.१.१३
लङःशाक० ३.४.१११
लटःशतृ० ३.२.१२४
लट् स्मे ३.२.११८
लभेश्च ७.१.६४
लवणाट्ठञ् ४.४.५२
लवणाल्लुक् ४.४.२४
लशक्वत० १.३.८
लषपत० ३.२.१५४
लस्य ३.४.७७
लाक्षारोचना० ४.२.२
लिङःस० ७.२.७९
लिङःसीयु० ३.४.१०२
लिङर्थेलेट् ३.४.७
लिङाशिषि ३.४.११६
लिङ् च ३.३.१५९
लिङ्चोर्ध्व० ३.३.१६४
लिङ्निमि० ३.३.१३९
लिङ् यदि ३.३.१६८
लिङ्याशि० ३.१.८६
लिङ्सिचा० १.२.११
लिङ्सिचो० ७.२.४२
लिटः कान० ३.२.१०६
लिटस्तझ० ३.४.८१
लिटि धातो० ६.१.८
लिटि वयो यः ६.१.३७
लिट् च ३.४.११५
लित्यन्य० २.४.४०
लित्स्वर० ६.१.१७
लिड्यङोश्च ६.१.२९
लिङ् चोर्ध्व ३.३.९
लिति ६.१.१८७
लिपिसिचि० ३.१.५३
लिप्स्यमान० ३.३.७
लियः संभा० १.३.७०
लीलोर्नुग्० ७.३.३९
लुक्तद्धित० १.२.४९
लुक्स्त्रियाम् ४.१.१०९
लुग्वा दुह० ७.३.७३
लुङ् ३.२.११०
लुङि च २.४.४३
लुङ्लङ्० ६.४.७१
लुङ्सनो० २.४.३७
लुटः प्रथम० २.४.८५
लुटि च क्लृपः १.३.९३
लुपसद० ३.१.२४
लुपियुक्त० १.२.५१
लुप् च ४.३.१६४
लुबविशेषे ४.२.४
लुब्योगाप्र० १.२.५४
लुभो विमो० ७.२.५४
लुम्मनुष्ये ५.३.९८
लृटःसद् वा ३.३.१४
लृट् शेषे च ३.३.१३
लेटोऽडाटौ ३.४.९४
लोकसर्व० ५.१.४३
लोटोलङ्वत् ३.४.८५
लोट् च ३.३.१६२
लोट् च ८.१.५२
लोडर्थलक्ष० ३.३.८
लोपःपिब० ७.४.४
लोपःशाक० ८.३.१९
लोपश्चा० ६.४.१०७
लोपस्तआ० ७.१.४१
लोपे विभाषा ८.१.४५
लोपो यि ६.४.११८
लोपो व्यो० ६.१.६४
लोमादि० ५.२.१००
लोहितादि० ३.१.१३
लोहितान्० ५.४.३०
ल्यपि च ६.१.४०
ल्यपि लघु० ६.४.५६
ल्युट् च ३.३.११५
ल्वादिभ्यः ८.२.४४
वच उम ७.४.२०
वचिस्वपि० ६.१.१५
वचोऽशब्द० ७.३.६७
वञ्चिलु० १.२.२४
वञ्चेर्गतौ ७.३.६३
वतण्डाच्च ४.१.१०८
वतोरिड् वा ५.१.२३
वतोरिथुक् ५.२.५३
वत्सरान्ता० ५.१.९०
वत्सशाला० ४.३.३६
वत्सांसाभ्यां० ५.२.९८
वत्सोक्षा० ५.३.९१
वदः सुपि० ३.१.१०६
वदव्रजहल० ७.२.३
वनं समासे ६.२.१७७
वनगिर्योः० ६.३.११६
वनं पुरगा० ८.४.४
वनो र च ४.१.७
वन्दिते० ५.४.१५७
वमोर्वा ८.४.२२
वयसि च ३.२.१०
वयसि दन्त० ५.४.१४१
वयसि पूर० ५.२.१३०
वयसि प्रथमे ४.१.२०
वयस्यासु० ४.४.१२७
वरणादिभ्य० ४.२.८१
वर्गान्ताच्च ४.३.६३
वर्ग्यादयश्च ६.२.१३०
वर्चस्केऽव० ६.१.१४३
वर्णदृढा० ५.१.१२२
वर्णादनुदा० ४.१.३९
वर्णाद्ब्रह्म० ५.२.१३४
वर्णे चा नित्ये ५.४.३१
वर्णो वर्णेन २.१.६८
वर्णोवर्णेष्व० ६.२.३
वर्णौ वुक्० ४.२.१०२
वर्त्तमानसा० ३.३.१३१
वर्त्तमाने लट् ३.२.१२३
वर्षप्रमाण० ३.४.३२
वर्षस्याभ० ७.३.१६
वर्षाभ्यष्ठक् ४.३.१८
वर्षाल्लुक्च ५.१.८७
वर्षाभ्वश्च ६.४.८४
वले ६.३.११७
वशं गतः ४.४.८६
वश्चास्या० ६.१.३८
वसतिक्षुधो० ७.२.५२
वसन्ताच्च ४.३.२०
वसन्तादिभ्य० ४.२.६२
वसुस्रंसु० ८.२.७२
वसोःसमू० ४.४.१४०
वसोःसम्प्र० ६.४.१३१
वस्तेर्ढञ् ५.३.१०१
वस्नक्रय० ४.४.१३
वस्नद्रव्या० ५.१.५०
वस्वेकाजा० ७.२.६७
वहश्च ३.२.६४
वहाभ्रे० ३.२.३२
वह्यं करणम् ३.१.१०२
वाकिना० ४.१.१५८
वा क्यषः १.३.९०
वाक्यस्यटेः० ८.२.८२
वाक्यादेराम० ८.१.८
वाक्रोश० ६.४.६१
वा गमः १.२.१३
वा घोषमिश्र० ६.३.५५
वाचंयम० ६.३.६८
वा चित्तविरागे ६.४.९१
वाचि यमो० ३.२.४०
वाचो ग्मिनिः ५.२.१२४
वाचो व्या० ५.४.३५

वा छन्दसि ३.४.८८
वा छन्दसि ६.१.१०२
वा जाते ६.२.१७०
वा जृभ्रमु० ६.४.१२४
वातातीसा० ५.२.१२९
वादान्तशान्त० ७.२.२७
वा दुहमुह० ८.२.३३
वानपुंसकस्य ७.१.७९
वा निंसनिक्ष० ८.४.३२
वान्तो यि० ६.१.७६
वान्यस्मिन्० ४.१.१६५
वान्यस्य० ६.४.६८
वा पदान्तस्य ८.४.५८
वा बहूनां० ५.३.९३
वा भावकर० ८.४.१०
वा भुवनम् ६.२.२०
वा भ्राशम्ला० ३.१.७०
वामदेवाड्ड० ४.२.८
वाऽऽमि १.४.५
वाऽम्शसोः ६.४.८०
वा यौ २.४.५७
वाय्वृतु० ४.२.३०
वारणार्था० १.४.२७
वा लिटि २.४.५५
वा ल्यपि ६.४.३८
वाऽवसाने ८.४.५५
वा शरि ८.३.३६
वाशोकष्यञ्० ६.३.५०
वा षपूर्वस्य० ६.४.९
वा संज्ञायाम् ५.४.१३३
वाऽसरूपो० ३.१.९४
वासुदेवा० ४.३.९८
वा सुप्यापि० ६.१.८९
वाह ऊठ् ६.४.१३२
वाहः ४.१.६१
वा ह चच्छ० ५.३.१३
वाहनमा० ८.४.८
वाहिताग्न्या० २.२.३७
वाहीक० ४.२.११६
विंशतिकात्० ५.१.३२
विंशतित्रिंश० ५.१.२४
विंशत्यादि० ५.२.५६
विकर्णकुषी० ४.१.१२४
विकर्णशुङ्क० ४.१.११७
विकुशमि० ८.३.९६
विचार्यमाणा० ८.२.९७
विज इट् १.२.२
विजुपे छन्द० ३.२.७३
विड्वनोर० ६.४.४१
वित्तो भोग० ८.२.५८
विदांकुर्व० ३.१.४१
विदिभिदि० ३.२.१६२
विदूराञ्ज्यः ४.३.८४
विदेःशतु० ७.१.३६
विदो लटो० ३.४.८३
विद्यायोनि० ४.३.७७
विधिनिम० ३.३.१६१
विध्वत्य० ४.४.८३
विध्वरुषो० ३.२.३५
विनञ्भ्यां ५.२.२७
विनयादि० ५.४.३४
विन्दुरिच्छुः ३.२.१६९
विन्मतोर्लुक् ५.३.६५
विपराभ्यांजेः १.३.१९
विपूय० ३.१.११७
विप्रतिषिद्धं० २.४.१३
विप्रतिषेधे० १.४.२
विप्रसंभ्यो० ३.२.१८०
विभक्तिश्च १.४.१०३
विभाषर्जो० ६.४.१६२
विभाषा० २.१.११
वि०कथ० ३.३.१४३
वि०कदा० ३.३.५
वि०कर्मकात् १.३.८५
वि०कार्षा० ५.१.२९
वि०कुरु० ४.२.१२९
वि०कृञि १.४.७१
वि०कृञि १.४.९७
वि०कृवृषोः ३.१.१२०
वि०ऽऽख्यान ३.३.११०
वि०गमहन० ७.२.६८
वि०गुणे० २.३.२५
वि०ग्रहः ३.१.१४३
वि०ऽग्रेप्रथ० ३.४.२४
वि०घ्राधेट् २.४.७८
वि०रुप्लुवोः ३.३.५०
वि०डिश्योः ६.४.१३६
वि०चत्वरि० ६.३.४८
वि०चिण्० ७.१.६९
वि०चेः ७.३.५८
वि०छन्दसि १.२.३६
वि०छन्दसि ६.२.१६३
वि०छन्दसि ७.४.४४
वि०जसि १.१.३१
वि०ञ्चेरदिक्० ५.४.८
वि०तिलमा० ५.२.४
वि०तृतीया० ७.१.९७
वि०तृन्नञ० ६.२.१६०
वि०दिक्स० १.१.२७
वि०द्वितीया० ७.३.११५
वि०धातौ० ३.३.१५५
वि०धेट्श्व्योः ३.१.४९
वि०ध्यक्षे ६.२.६७
विभाषाप: ६.४.५७
वि०परावरा० ५.३.२९
वि०परेः ६.१.४३
वि०पुरुषे ६.३.१०५
वि०पूर्वाह्णा० ४.३.२४
वि०पृष्ट० ८.२.९३
वि०फाल्गु० ४.२.२२
वि०बहोर्धा० ५.४.२०
वि०भावादि० ७.२.१७
वि०भाषायाम् ६.१.१७५
वि०भ्यवपूर्व० ६.१.२६
वि०ऽमनुष्ये ४.२.१४३
वि०रोगात० ४.३.१३
वि०लीयतेः ६.१.५०
वि०लुङ्लृङोः २.४.५०
वि०ऽवरस्य ५.३.४१
वि०वर्षक्षर० ६.३.१५
वि०विप्रलापे १.३.५०
वि०विवध० ४.४.१७
वि०वृक्षमृग० २.४.१२
वि०वेण्वि० ६.१.२०९
वि०वेष्टि० ७.४.९६
वि०श्यावा० ५.४.१४४
विभाषा श्वेः ६.१.३०
वि०सपूर्वस्य ४.१.३४
वि०समीपे २.४.१६
वि०साका० ३.२.११४
वि०साति० ५.४.५२
वि०सुपो० ५.३.६८
वि०सृजि० ७.२.६५
वि०सेनासु० २.४.२५
वि०स्वसृ० ६.३.२३
वि०हविरपू० ५.१.४
विभाषितं० ८.१.५३
विभाषेटः ८.३.७९
विभाषोत्पु० ६.२.१९५
विभाषोदरे ६.३.८७
विभाषोपपदे० १.३.७७
विभाषोपयमने १.२.१६
विभाषोपसर्गे २.३.५९
विभाषोर्णोः १.२.३
विभाषोशी० ४.२.११७
विभाषौषधि० ८.४.६
विमुक्तादि० ५.२.६१
विरामोऽव० १.४.१०९
विशाखयोश्च १.२.६२
विशाखाषा० ५.१.१०९
विशिपति० ३.४.५६
विशिष्टलिङ्गो० २.४.७

विशेषणं० २.१.५६
विशेषणानां० १.२.५२
विश्वस्य० ६.३.१२७
विषयो देशे ४.२.५१
विष्किरः० ६.१.१४५
विष्वग्देव० ६.३.९१
विसर्जनीय० ८.३.३४
विसारिणो० ५.४.१६
विस्पष्टादी० ६.२.२४
वीरवीर्यौ च ६.२.११९
वुञ्छण्क० ४.२.७९
वृकज्ये० ५.४.४१
वृकाट्० ५.३.११५
वृक्षासन० ८.३.९३
वृणोतेरा० ३.३.५४
वृत्तिसर्ग० १.३.३८
वृद्धस्य च ५.३.६२
वृद्धाच्छः ४.२.११३
वृद्धाट्ठक्० ४.१.१४८
वृद्धात्प्रा० ४.२.११९
वृद्धादकेका० ४.२.१४०
वृद्धिनिमि० ६.३.३८
वृद्धिरादैच् १.१.१
वृद्धिरेचि ६.१.८५
वृद्धिर्यस्या० १.१.७२
वृद्धेत्कोः० ४.१.१६९
वृद्धो यूना० १.२.६५
वृद्भ्यःस्य० १.३.९२
वृन्दारक० २.१.६१
वृषाकप्यग्नि० ४.१.३७
वृषादीनां च ६.१.१९७
वृतो वा ७.२.३८
वेः पादविह० १.३.४१
वेः शब्दकर्मणः १.३.३४
वेः शालच्छ० ५.२.२८
वेः स्कन्देः ८.३.७३
वेः स्कभ्ना० ८.३.७७
वेजः ६.१.३९
वेजो वयिः २.४.४१
वेतनादि० ४.४.१२
वेत्तेर्विभाषा ७.१.७
वेरपृक्तस्य ६.१.६५
वेशन्तहिम० ४.४.११२
वेशोयश० ४.४.१३१
वेश्च स्वनो० ८.३.६९
वैतोऽन्यत्र ३.४.९६
वैयाकरणा० ६.३.७
वैवावेति० ८.१.६४
वोताप्योः ३.३.१४१
वोतो गुण० ४.१.४४
वोपसर्जन० ६.३.८१
वो विधूनने० ७.३.३८
वौ कषलस० ३.२.१४३
वौक्षुश्रुवः ३.३.२५
व्यक्तवाचां० १.३.४८
व्यञ्जनै० ४.४.२६
व्यत्ययो० ३.१.८५
व्यथो लिटि ७.४.६८
व्यधजपो० ३.३.६१
व्यन् सप० ४.१.१४५
व्यवहिताश्च १.४.८१
व्यवहृपणोः० २.३.५७
व्यवायिनो० ६.२.१६५
व्यश्च ६.१.४२
व्याङ्परि० १.३.८३
व्याहरति० ४.३.५१
व्युपयोः० ३.३.३९
व्युष्टादि० ५.१.९६
व्योर्लघुप्र० ८.३.१८
व्रजयजो० ३.३.९८
व्रते ३.२.८०
व्रश्चभ्रस्ज० ८.२.३६
व्रातच्फ० ५.३.११३
व्रातेन जी० ५.२.२१
व्रीहिशा० ५.२.२
व्रीहेः पुरो० ४.३.१४६
व्रीह्यादि० ५.२.११६
शकटादण् ४.४.८०
शकधृष० ३.४.६५
शकि णमुल् ३.४.१२
शकि लिङ् ३.३.१७२
शकिसहोश्च ३.१.९९
शक्तियष्टयो० ४.४.५९
शक्तौ हस्ति० ३.२.५४
शण्डिकादि० ४.३.९२
शतमान० ५.१.२७
शतसहस्रा० ५.२.११९
शताच्० ५.१.२१
शतुरनुमो० ६.१.१६७
शदन्तविं० ५.२.४६
शदेः शितः १.३.६०
शदेरगतौ तः ७.३.४२
शप्श्यनो० ७.१.८१
शब्ददर्दुरं० ४.४.३४
शब्दवैर० ३.१.१७
शमामष्टा० ७.३.७४
शमिता यज्ञे ६.४.५४
शमित्यष्टा० ३.२.१४१
शमि धातोः० ३.२.१४
शम्याष्टलञ् ४.३.१४०
शयवास० ६.३.१७
शरद्वच्छु० ४.१.१०२
शरादीनां च ६.३.११९
शरीरावय० ४.३.५५
शरीरावय० ५.१.६
शरोऽचि ८.४.४८
शर्करादिभ्यो० ५.३.१०७
शर्करावा वा ४.२.८२
शर्परिविस० ८.३.३५
शर्पूर्वाःखयः ७.४.६१
शल इगुप० ३.१.४५
शलालुनो० ४.४.५४
शश्छोऽटि ८.४.६२
शसो न ७.१.२९
शाकलाद्वा ४.३.१२८
शाखादिभ्यो० ५.३.१०३
शाच्छासा० ७.३.३७
शाच्छोरन्य० ७.४.४१
शाणाद्वा ५.१.३५
शात् ८.४.४३
शारदेऽना० ६.२.९
शार्ङ्गरवाद्य० ४.१.७३
शालीनकौ० ५.२.२०
शास इदङ् ६.४.३४
शासिवसि० ८.३.६०
शा हौ ६.४.३५
शिखाया० ४.२.८८
शि तुक् ८.३.३१
शितेर्नि० ६.२.१३७
शिलाया ढः ५.३.१०२
शिल्पम् ४.४.५५
शिल्पिनि० ६.२.७६
शिल्पिनि० ३.१.१४५
शिवशम० ४.४.१४३
शिवादिभ्यो० ४.१.११२
शिशुक्रन्द० ४.३.८८
शि सर्वनाम० १.१.४१
शीङः सार्व० ७.४.२१
शीङो रुट् ७.१.६
शीतोष्णा० ५.२.७२
शीर्षश्छ० ६.१.५९
शीर्षच्छेदा० ५.१.६४
शीलम् ४.४.६१
शुक्राद् घन् ४.२.२५
शुण्डिका० ४.३.७६
शुभ्रादिभ्यश्च ४.१.१२३
शुषः कः ८.२.५१
शुष्कचूर्ण० ३.४.३५
शुष्कधृष्टौ ६.१.२००
शूद्राणाम० २.४.१०
शूर्पादञ० ५.१.२६
शूलात् पाके ५.४.६५

शूलोखाद्यत् ४.२.१६
शृङ्खलम० ५.२.७९
शृङ्गमव० ६.२.११४
शृतं पाके ६.१.२७
शृदृप्रां० ७.४.१२
शृवन्द्योरारुः ३.२.१७३
शे १.१.१३
शे मुचादीनाम् ७.१.५९
शेवलसु० ५.३.८४
शेश्छन्दसि० ६.१.६८
शेषात् कर्त्त० १.३.७८
शेषाद्विभा० ५.४.१५४
शेषे ४.२.९१
शेषे प्रथमः १.४.१०७
शेषे लृडय० ३.३.१५१
शेषे लोपः ७.२.९०
शेषे विभाषा ८.१.४१
शेषे विभाषा ८.१.५०
शेषे विभा० ८.४.१८
शेषो घ्यसखि १.४.७
शेषो बहु० २.२.२३
शोणात् प्रा० ४.१.४३
शौनकादि० ४.३.१०६
श्नसोरसो० ६.४.१११
श्नान्नलोपः ६.४.२३
श्नाभ्यस्त० ६.४.११२
श्याद् व्य० ३.१.१४१
श्येनतिल० ६.३.७०
श्योऽस्पर्शे ८.२.४७
श्रज्यावम० ६.२.२५
श्रविष्ठा० ४.३.३४
श्राणामांसौ० ४.४.६७
श्राद्धमनेन० ५.२.८५
श्राद्धे शरदः ४.३.१२
श्रिणीभुवो० ३.३.२४
श्रीग्रामण्यो० ७.१.५६
श्रुवःशृ च ३.१.७४
श्रुशृणुपृकृवृ० ६.४.१०२
श्रेण्यादयः० २.१.५८
श्रोत्रियं० ५.२.८४
श्र्युकःकिति ७.२.११
श्लाघह्नुङ्० १.४.३४
श्लिषआलि० ३.१.४६
श्लौ ६.१.१०
श्वगणाट्० ४.४.११
श्वयतेरः ७.४.१८
श्वयुवम० ६.४.१३३
श्वशुरःश्वश्रूा १.२.७१
श्वसस्तुट्च ४.३.१५
श्वसो वसी० ५.४.८०
श्वादेरिञि ७.३.८
श्वीदितोनि० ७.२.१४
षः प्रत्ययस्य १.३.६
षट्कति० ५.२.५१
षट्च काण्डा० ६.२.१३४
षट्चतुर्भ्यं० ७.१.५५
षट्त्रिचतु० ६.१.१७३
षड्भ्यो लुक् ७.१.२२
षढोःकःसि ८.२.४१
षण्मासाण्० ५.१.८२
षत्वतुको० ६.१.८३
षपूर्वहन्० ६.४.१३५
षष्टिकाः० ५.१.८९
षष्ट्यादेश्चा० ५.२.५८
षष्ठाष्टमा० ५.३.५०
षष्ठी २.२.८
षष्ठी चाना० २.३.३८
षष्ठी प्रत्येन० ६.२.६०
षष्ठीयुक्तश्छ० १.४.९
षष्ठी शेषे २.३.५०
षष्ठी स्थाने० १.१.४८
षष्ठी हेतु प्र० २.३.२६
षष्ठ्यतसर्थ० २.३.३०
षष्ठ्याआ० ६.३.२०
षष्ठ्याःपति० ८.३.५३
षष्ठ्यारूप्य० ५.३.५४
षष्ठ्याव्याश्र० ५.४.४८
षात्पदान्तात् ८.४.३४
षिद्गौरादि० ४.१.४१
षिद्भिदा० ३.३.१०४
ष्टुना ष्टुः ८.४.४०
ष्ठिवुक्लं० ७.३.७५
ष्णान्ता षट् १.१.२३
ष्यङःसम्प्र० ६.१.१३
स उत्तमस्य ३.४.९८
स एषांग्रा० ५.२.७८
सः स्यार्ध० ७.४.४९
सः स्विदि० ८.३.६२
संयसश्च ३.१.७२
संयोगादि० ६.४.१६६
संयोगादेरा० ८.२.४३
संयोगान्तस्य० ८.२.२३
संयोगेगुरु १.४.११
संवत्सरा० ४.३.५०
संशयमाप० ५.१.७२
संसृष्टे ४.४.२२
संस्कृतम् ४.४.३
संस्कृतं भक्षाः ४.२.१५
संहितशफ० ४.१.७०
संहितायाम् ६.१.७०
संहितायाम् ६.३.११३
सक्थं चा० ६.२.१९७
सख्यशि० ४.१.६२
सख्युरस० ७.१.९२
सख्युर्यः ५.१.१२५
सगतिरपि० ८.१.६८
सगर्भ० ४.४.११४
सङ्कलादि० ४.२.७४
सङ्ख्यया० २.२.२५
सङ्ख्या ६.२.३५
सं०द्विगुः २.१.५१
सं०अतिश० ५.१.२२
सं०अवयवे० ५.२.४२
सं०क्रिया० ५.४.१७
सं०सञ्ज्ञा ५.१.५७
सं०संवत्स० ७.३.१५
सं०स्तनः ६.२.१६२
सं०गुणस्य० ५.२.४७
सं०विधार्येधा ५.३.४२
सङ्ख्यायाश्च० ५.४.५९
संख्या वंश्येन २.१.१८
सं०विसाय० ६.३.१०९
सं०ङीप् ४.१.२६
सं०सुपूर्व० ५.४.१४०
सङ्ख्यैक० ५.४.४३
सङ्ग्रामे प्र० ४.२.५५
सङ्घाङ्क० ४.३.१२७
सङ्घे चानौ० ३.३.४२
सङ्घोदघौ गण० ३.३.८६
सञ्ज्ञा पूर० ६.३.३७
सं०ललाट० ४.४.४६
सं०शरदो० ४.३.२७
सं०श्रवणा० ४.२.५
सं०समजनि० ३.३.९९
सज्ञायां कन् ४.३.१४५
सज्ञायां कन् ५.३.७५
सज्ञायां कन् ५.३.८७
सं०कन्थो० २.४.२०
सं०गिरिनि० ६.२.९४
संज्ञायां च ५.३.९७
संज्ञायां च ६.२.७७
सं०जन्याः ४.४.८२
सं०धेनुष्याः ४.४.८९
सञ्ज्ञायाम् २.१.४३
सञ्ज्ञायाम् ३.३.१०९
सञ्ज्ञायाम् ३.४.४२
सञ्ज्ञायाम् ४.१.७२
सञ्ज्ञायाम् ४.३.११७
सञ्ज्ञायाम् ६.२.१५८
सञ्ज्ञायाम् ८.२.११
सं०मना० ६.२.१४५
सं०मुप० ६.१.१९८

सं०भृतृ० ३.२.४६
सं०मन्मा० ५.२.१३७
सं०मित्रा० ६.२.१६४
सञ्ज्ञोऽन्य० २.३.२२
सञ्ज्ञौपम्य० ६.२.११२
सत्यं प्रश्ने ८.१.३२
सत्यादशपथे० ५.४.६६
सत्यापपाश० ३.१.२५
सत्सूद्विष० ३.२.६१
सदिरप्र० ८.३.६६
सदृशप्रति० ६.२.११
सदेः परस्य० ८.३.११८
सद्यःपरुत्० ५.३.२२
सधमाद० ६.३.९५
सनःक्तिचि० ६.४.४५
स नपुंसकम् २.४.१७
सनाद्यन्ता० ३.१.३२
सनाशंस० ३.२.१६८
सनिंससनि० ७.२.६९
सनिग्रहगु० ७.२.१२
सनि च २.४.४७
सनिमीमाघु० ७.४.५४
सनीवन्त० ७.२.४९
सनोतेरनः ८.३.१०८
सन्धिवेला० ४.३.१६
सन्महत्० २.१.६०
सन्यङोः ६.१.९
सन्यतः ७.४.७९
सन्लिटोर्जेः ७.३.५७
सन्वल्लघु० ७.४.९३
सपत्रनि० ५.४.६१
सपूर्वाच्च ५.२.८७
सपूर्वायाः ८.१.२६
सप्तनोऽञ्० ५.१.६०
सप्तमीपञ्च० २.३.७
सं०विशेषणे० २.२.३५
सं०शोण्डैः २.१.३९
सं०सिद्धशु० ६.२.३२
सं०हारिणौ ६.२.६५
सप्तम्यधिक० २.३.३६
सप्तम्याः० ६.२.१५१
सं०चोपपीड० ३.४.४९
सं०जनेर्डः ३.२.९७
सं०त्रल् ५.३.१०
सभायां नपुं० ६.२.९८
सभाया यः ४.४.१०५
सभाराजा० २.४.२३
समःक्ष्णुवः १.३.६५
समःप्रति० १.३.५२
समः समि ६.३.९२
समः सुटि ८.३.५
समयस्त० ५.१.१०३
समयाच्च० ५.४.६०
समर्थःपदविधिः २.१.१
समर्थानां ४.१.८२
समवप्रवि० १.३.२२
समवायान्० ४.४.४३
समवाये च ६.१.१३३
समस्तृती० १.३.५४
समांसमां० ५.२.१२
समानकर्तृ० ३.४.२१
समानकर्तृ० ३.३.१५८
समानतीर्थे० ४.४.१०७
समानस्य० ६.३.८३
समानोदरे० ४.४.१०८
समापनात्० ५.१.१११
समायाःखः ५.१.८४
समासत्तौ ३.४.५०
समासस्य ६.१.२१७
समासाच्च० ५.३.१०६
समासान्ताः ५.४.६८
समासेऽङ्कु० ८.३.८०
समासेऽनञ्० ७.१.३७
समाहारःस्व० १.२.३१
समि ख्यः ३.२.७
समि मुष्टौ ३.३.३६
समि युद्रुदुवः ३.३.२३
समुच्चये० ३.४.३
समुच्चये सा० ३.४.५
समुदाङ्भ्यो १.३.७५
समुदोरजः ३.३.६९
समुद्राभ्राद्० ४.४.११८
समूलाकृत० ३.४.३६
समूहवच्च० ५.४.२२
समो गम्यृ० १.३.२९
सम्परिपूर्वा० ५.१.९१
सम्परिभ्यां ६.१.१३२
सम्पादिनि ५.१.९८
सम्पृचानु० ३.२.१४२
सम्प्रतिभ्या० १.३.४६
सम्प्रसारण० ६.३.१३८
सम्प्रसारणा० ६.१.१०४
सम्प्रोदश्च० ५.२.२९
सम्बुद्धौ च ७.३.१०६
सम्बुद्धौशाक० १.१.१६
सम्बोधने च २.३.४७
सम्बोधने च ३.२.१२५
सम्भवत्यव० ५.१.५१
सम्भावने० ३.३.१५४
सम्भूते ४.३.४१
सम्माननो० १.३.३६
सरूपाणा० १.२.६४
सर्त्तिशास्त्य० ३.१.५६
सर्वकूलाभ्र० ३.२.४२
सर्वं गुणका० ६.२.९३
सर्वचर्मणः ५.२.५
सर्वत्र लोहि० ४.१.१८
सर्वत्रविभा० ६.१.११८
स०शाक० ८.४.५०
सर्वत्राण् च० ४.३.२२
सर्वदेवात्० ४.४.१४२
सर्वनामस्थाने० ६.४.८
सर्वनाम्नः० ७.१.१४
सर्वनाम्नः० ७.३.११४
सर्वनाम्नस्तृ० २.३.२७
सर्वपुरुषा० ५.१.१०
सर्वभूमि० ५.१.४०
सर्वस्य द्वे ८.१.१
सर्वस्यसुपि ६.१.१८५
सर्वस्य सोऽ० ५.३.६
सर्वादीनि स० १.१.२६
सर्वैकान्य० ५.३.१५
सवाभ्यां वा० ३.४.९१
सविधसनी० ६.२.२३
ससजुषोरुः ८.२.६६
ससूवेति० ७.४.७४
सस्नौ प्रशं० ५.४.४०
सस्येन परि० ५.२.६८
सहनञ्विद्य० ४.१.५७
सहयुक्ते० २.३.१९
सह सुपा २.१.४
सहस्य सः० ६.३.७७
सहस्य सधिः ६.३.९४
सहस्रेण० ४.४.१३५
सहिवहो० ६.३.१११
सहेःपृत० ८.३.१०९
सहेःसाडः० ८.३.५६
सहे च ३.२.९६
साक्षात्प्र० १.४.७३
साक्षाद्द्र० ५.२.९१
साढ्यैसा० ६.३.११२
सात्पदा० ८.३.१११
साधकतमं० १.४.४२
साधुनिपु० २.३.४३
सान्तमहतः ६.४.१०
सापपदीनं० ५.२.२२
सामआकम् ७.१.३३
सामन्त्रितम् २.३.४८
सामान्यवच० ८.१.७४
सामि २.१.२६
सायंचिरं० ४.३.२३
सार्वधातुकम० १.२.४

सार्वधातुका० ७.३.८४
सार्वधातुके० ३.१.६७
साल्वावय० ४.१.१७१
साल्वेय० ४.१.१६७
सावनडुहः ७.१.८२
सावेकाच० ६.१.१६२
सास्मिन्पौ० ४.२.२०
सास्य देवता ४.२.२३
सिकताश० ५.२.१०४
सिचि च पर० ७.२.४०
सिचि वृद्धिः० ७.२.१
सिचो यङि ८.३.११२
सिजभ्य० ३.४.१०९
सिति च १.४.१६
सिद्धशुष्क० २.१.४०
सिध्मादिभ्यश्च ५.२.९७
सिध्यतेरपा० ६.१.४८
सिन्धुतक्ष० ४.३.९३
सिन्ध्वप० ४.३.३२
सिपि धातो० ८.२.७४
सिब्बहुलं० ३.१.३४
सिवादीनां० ८.३.७१
सुः पूजायाम् १.४.९३
सुकर्मपाप० ३.२.८९
सुखप्रिययो० ६.२.१५
सुखप्रियादा० ५.४.६३
सुखादिभ्यः० ३.१.१८
सुखादिभ्यश्च ५.२.१३१
सुञः ८.३.१०७
सुञो यज्ञ० ३.२.१३२
सुट्कात्० ६.१.१३१
सुट्तिथोः ३.४.१०७
सुडनपुंस० १.१.४२
सुधातुरक० ४.१.९७
सुधित० ७.४.४५
सुनोतेःस्य० ८.३.११७
सुप आत्मनः० ३.१.८
सुपः १.४.१०२
सुपांसुलुक्० ७.१.३९
सुपि च ७.३.१०२
सुपि स्थः ३.२.४
सुपो धातु० २.४.७१
सुसिङन्तं० १.४.१४
सुप्रातिना० २.१.९
सुप्यजातौ० ३.२.७८
सुप्रातसुश्व० ५.४.१२०
सुबामन्त्रिते० २.१.२
सुयजो० ३.२.१०३
सुवास्त्वा० ४.२.७६
सुविनिर्दु० ८.३.८८
सुषामादिषु० ८.३.९८
सुसर्वार्धा० ७.३.१२
सुहृद्दुर्हृ० ५.४.१५०
सूत्रं प्रति० ८.३.९०
सूत्राच्च० ४.२.६४
सूददीप० ३.२.१५३
सूपमाना० ६.२.१४४
सूर्यतिष्या० ६.४.१४९
सृघस्यदः० ३.२.१६०
सृजिदृशो० ६.१.५७
सृपितृदोः ३.४.१७
सृ स्थिरे ३.३.१७
सेधतेर्गतौ ८.३.११३
सेनान्त० ४.१.१५२
सेनाया वा ४.४.४५
सेर्ह्यपिच्च ३.४.८७
सेऽसिचि० ७.२.५७
सोऽचिलो० ६.१.१३०
सोढः ८.३.११५
सोदराद् यः ४.४.१०९
सोऽपदादौ ८.३.३८
सोममर्हति० ४.४.१३७
सोमाट्ट्यण् ४.२.२९
सोमे सुञः ३.२.९०
सोमे ह्वरितः ७.२.३३
सोरवक्षे० ६.२.१९४
सोर्मनसी० ६.२.११६
सोऽस्य० ४.३.८९
सोऽस्यांश० ५.१.५५
सोऽस्यादि० ४.२.५४
सौ च ६.४.१३
स्कोःसंयो० ८.२.२९
स्तन्भेः ८.३.६७
स्तम्बकर्ण० ३.२.१३
स्तम्बशकृ० ३.२.२४
स्तम्बे क च ३.३.८३
स्तम्भुसिवु० ८.३.११६
स्तम्भुस्तुम्भु० ३.१.८२
स्तुतस्तोम० ८.३.१०५
स्तुसुधूञ्० ७.२.७२
स्तेनाद्य० ५.१.१२४
स्तोःश्चुनाश्चु ८.४.३९
स्तोकान्तिक० २.१.३८
स्तौतिण्योरे० ८.३.६१
स्त्यःप्रपूर्व० ६.१.२३
स्त्रियाः ६.४.७९
स्त्रियाःपुंव० ६.३.३३
स्त्रियांक्तिन् ३.३.९४
स्त्रियां च ७.१.९६
स्त्रियांसंज्ञा० ५.४.१४३
स्त्रियाम् ४.१.३
स्त्रियामव० ४.१.१७४
स्त्रीपुंवच्च १.२.६६
स्त्रीपुंसाभ्यां ४.१.८७
स्त्रीभ्यो ढक् ४.१.१२०
स्त्रीषु सौवीर० ४.२.७५
स्थःक च ३.२.७७
स्थण्डिला० ४.२.१४
स्थागापा० ३.३.९५
स्थाघ्वोरिच्च १.२.१७
स्थादिष्व० ८.३.६४
स्थानान्त० ४.३.३५
स्थानान्ताद्० ५.४.१०
स्थानिवदा० १.१.५५
स्थानेऽन्तर० १.१.४९
स्थालीबिला० ५.१.६९
स्थूलदूर० ६.४.१५६
स्थूलादिभ्यः० ५.४.३
स्थे च भाषा० ६.३.१९
स्थेशभास० ३.२.१७५
स्नात्व्यादय० ७.१.४९
स्नुक्रमोर० ७.२.३६
स्नेहने पिषः ३.४.३८
स्पर्धायामाङः १.३.३१
स्पृशोऽनुद० ३.२.५८
स्पृहिगृहि० ३.२.१५८
स्पृहेरीप्सितः १.४.३६
स्फायःस्फी० ६.१.२२
स्फायो वः ७.३.४१
स्फिगपूत० ६.२.१८६
स्फुरति० ६.१.४६
स्फुरति० ८.३.७६
स्मिपूङ्० ७.२.७४
स्मे लोट् ३.३.१६५
स्मोत्तरे० ३.३.१७६
स्यतासी० ३.१.३३
स्यदो जवे ६.४.२८
स्यश्छन्द० ६.१.१२९
स्यसिच्सी० ६.४.६२
स्रवति० ७.४.८१
स्रोतसो० ४.४.११३
स्वं रूपं० १.१.६७
स्वं स्वामिनि ६.२.१७
स्वतन्त्रःकर्त्ता १.४.५४
स्वतवान्० ८.३.११
स्वनहसोर्वा ३.३.६२
स्वपादि० ६.१.१८२
स्वपितृषो० ३.२.१७२
स्वपिस्यमि० ६.१.१९
स्वपो नन् ३.३.९१
स्वमज्ञाति० १.१.३४
स्वमोर्नपुंस० ७.१.२३

स्वयं क्तेन २.१.२४
स्वरतिसूति० ७.२.४४
स्वरादिनिपा० १.१.३६
स्वरितञितः० १.३.७२
स्वरितमा० ८.२.१०३
स्वरितात्सं० १.२.३९
स्वरितेनाधि० १.३.११
स्वरितो वानु० ८.२.६
स्वसुश्छः ४.१.१४३
स्वागतादी० ७.३.७
स्वाङ्गाच्चेतः० ६.३.३९
स्वाङ्गाच्चोप० ४.१.५४
स्वाङ्गे तस्प्र० ३.४.६१
स्वाङ्गेऽध्रुवे ३.४.५४
स्वाङ्गेभ्यःप्र० ५.२.६६
स्वादिभ्यःश्नुः ३.१.७३
स्वादिष्वसर्व० १.४.१७
स्वादुमिणमुल् ३.४.२६
स्वापेश्चङि ६.१.१८
स्वामिन्नैश्वर्ये ५.२.१२६
स्वामीश्वरा० २.३.३९
स्वे पुषः ३.४.४०
स्वौजसमौट्० ४.१.२
ह एति ७.४.५२
हनः सिच् १.२.१४
हनश्च वधः ३.३.७६
हनस्त च ३.१.१०८
हनस्तोऽचि० ७.३.३२
हनो वध० २.४.४२
हन्त च ८.१.५४
हन्तेरत्पूर्व० ८.४.२१
हन्तेर्जः ६.४.३६
हरतेरनु० ३.२.९
हरतेर्दृति० ३.२.२५
हरत्युत्स० ४.४.१५
हरितादि० ४.१.१००
हरीतक्या० ४.३.१६५
हलः ६.४.२
हलःश्नः० ३.१.८३
हलदन्तात् ६.३.८
हलन्ताच्च १.२.१०
हलन्त्यम् १.३.३
हलश्च ३.३.१२१
हलश्चेजु० ८.४.३०
हलसीराट्० ४.३.१२४
हलसीराट्० ४.४.८१
हलसूकर० ३.२.१८३
हलस्तद्धि० ६.४.१५०
हलादिःशेषः ७.४.६०
हलि च ८.२.७७
हलि लोपः ७.२.११३
हलि सर्वेषाम् ८.३.२२
हलोऽनन्तराः० १.१.७
हलो यमां० ८.४.६३
हल्ङ्याब्० ६.१.६६
हव्येऽनन्तः० ३.२.६६
हशश्वतो० ३.२.११६
हशि च ६.१.११०
हश्च व्रीहि० ३.१.१४८
हस्ताज्० ५.२.१३३
हस्तादाने० ३.३.४०
हस्ते वर्ति० ३.४.३९
हायनान्त० ५.१.१२९
हिंसायांप्रते० ६.१.१३६
हिंसार्थानां० ३.४.४८
हि च ८.१.३४
हितंभक्षाः ४.४.६५
हिनुमीना ८.४.१५
हिमकाषि० ६.३.५३
हिरण्यपरि० ६.२.५५
हीने १.४.८५
हीयमान० ५.४.४७
हुझल्भ्यो० ६.४.१०१
हुश्नुवोः० ६.४.८७
हृक्रोरन्यत० १.४.५३
हृदयस्य प्रि० ४.४.९५
हृदयस्य हृ० ६.३.४९
हृद्भगसि० ७.३.१९
हृषेर्लो० ७.२.२९
हेतिक्षिया० ८.१.६०
हेतुमति च ३.१.२६
हेतुमनुष्ये० ४.३.८१
हेतुहेतुमतो० ३.३.१५६
हेतौ २.३.२३
हेमन्त० २.४.२८
हेमन्ताच्च ४.३.२१
हे मपरेवा ८.३.२६
हेरचडि ७.३.५६
हैयङ्गवीनं० ५.२.२३
हैहेप्रयोगे० ८.२.८५
हो ढः ८.२.३१
होत्राभ्यश्छः ५.१.१३४
होहन्तेर्ञ्णि० ७.३.५४
ह्म्यन्तक्षण० ७.२.५
ह्रस्वं लघु १.४.१०
ह्रस्वः ७.४.५९
ह्रस्वनद्या० ७.१.५४
ह्रस्वनुड्० ६.१.१७०
ह्रस्वस्यगुणः ७.३.१०८
ह्रस्वस्यपिति० ६.१.६९
ह्रस्वाच्चः ६.१.१४६
ह्रस्वात्तादौ० ८.३.१०१
ह्रस्वादङ्गात् ८.२.२७
ह्रस्वान्ते० ६.२.१७३
ह्रस्वे ५.३.८६
ह्रस्वो नपुं० १.२.४७
ह्रुह्वरेश्छन्द० ७.२.३१
ह्लादो निष्ठा० ६.४.९५
ह्वः सम्प्रसा० ३.३.७२
ह्वः सम्प्रसा० ६.१.३२
ह्वावामश्च ३.२.२

—o—